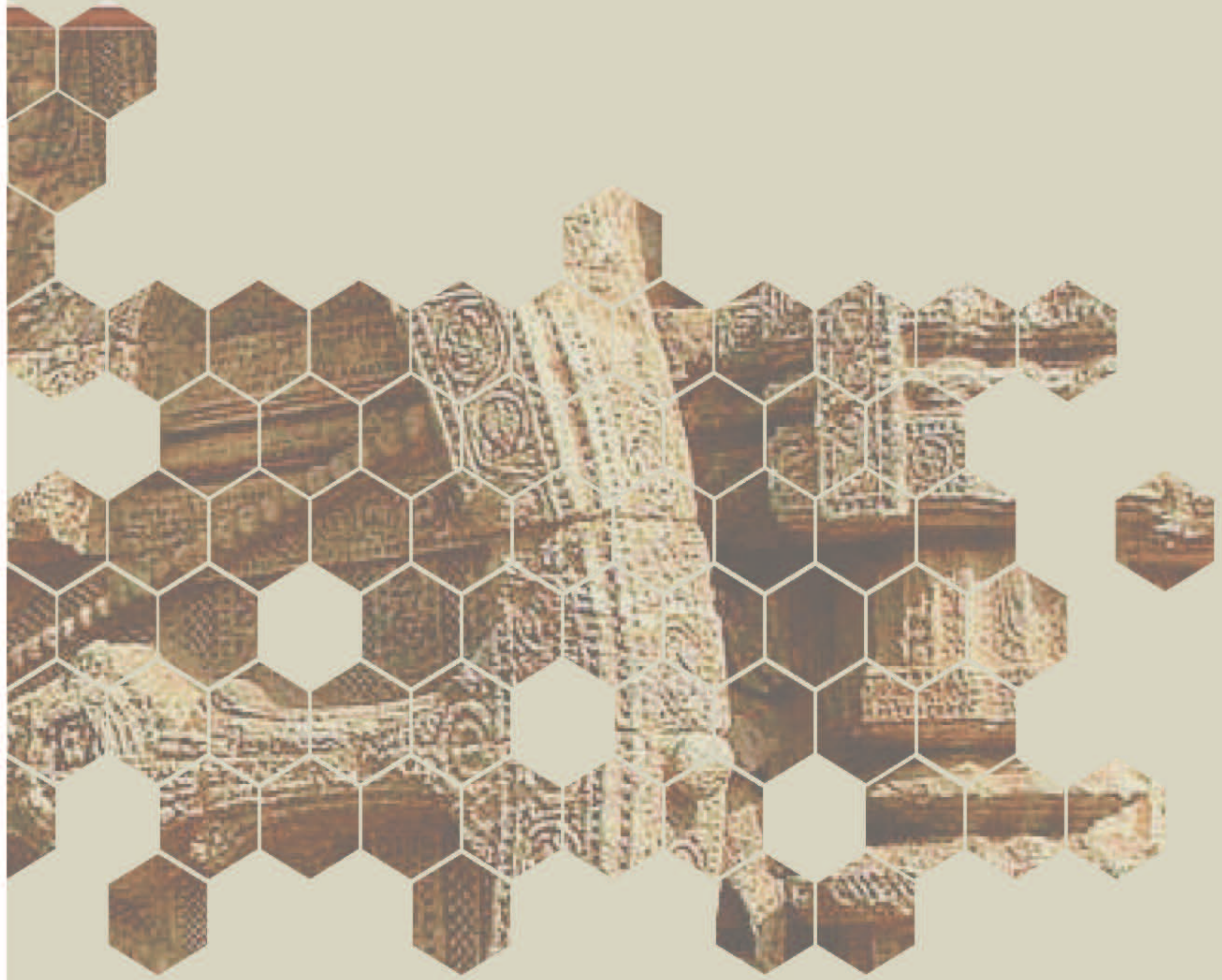

Dr. C.V. Raman University
Kargi Road, Kota, BILASPUR, (C. G.),
Ph. : +07753-253801, +07753-253872
E-mail : info@cvru.ac.in | Website : www.cvru.ac.in

Hindi Bhasha Sanrachna-1

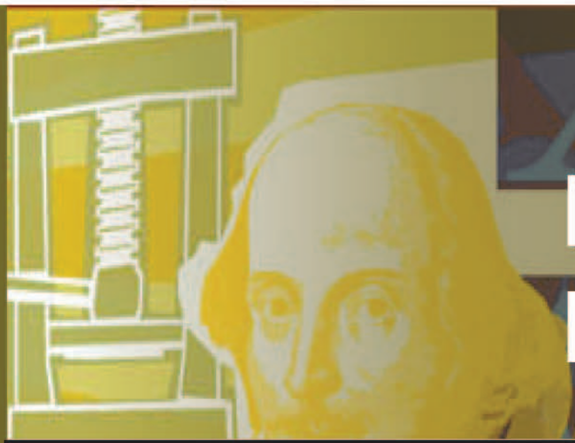

Institute of Open and Distance Education

Faculty of Arts

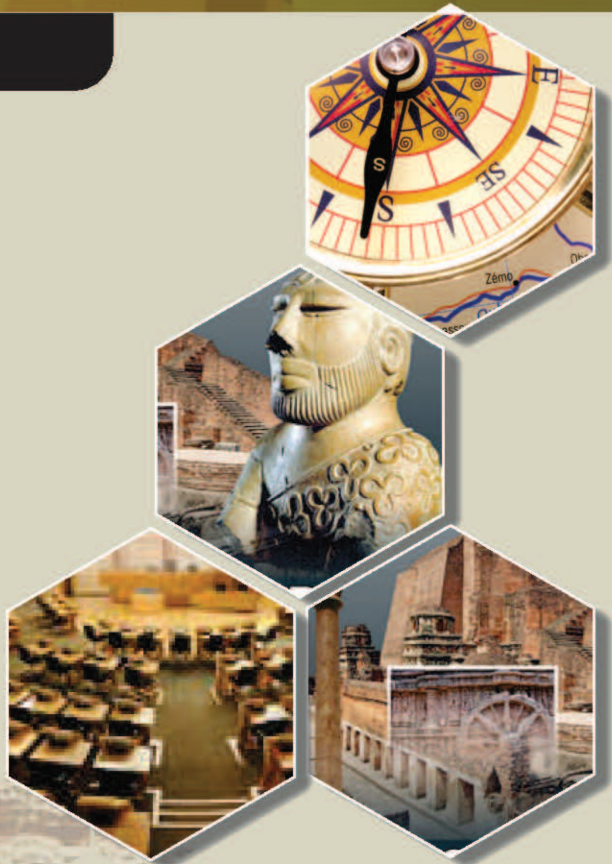

Hindi Bhasha Sanrachna-1

1BA1

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY
Chhattisgarh, Bilaspur
A STATUTORY UNIVERSITY UNDER SECTION 2(F) OF THE UGC ACT

1BA1

Hindi Bhasha Sanrachna-1

1BA1
Hindi Bhasha Sanrachna-1

Credit- 4

Subject Expert Team

Dr Kajal Moitra, Dr. C.V. Raman University, Kota, Bilaspur, Chhattisgarh
Dr Mahesh Shukla, Dr. C.V. Raman University, Kota, Bilaspur, Chhattisgarh
Dr Reena Tiwari, Dr. C.V. Raman University, Kota, Bilaspur, Chhattisgarh
Dr Ram Ratan sahu, Dr. C.V. Raman University, Kota, Bilaspur, Chhattisgarh
Dr Anju Tiwari, Dr. C.V. Raman University, Kota, Bilaspur, Chhattisgarh
Dr. Sandhya Jaiswal , Dr. C. V. Raman University, Kota, Bilaspur, Chhattisgarh

---

Course Editor:

Dr Ramsiya Charmkar, Assistant Professor Department of Political Science Humanities and liberal arts, Rabindranath Tagore University, Bhopal, M.P.

Unit Written By:

---

1. Dr. Radha Sharma

(Assistant Professor, Dr. C. V. Raman University)

2. Dr. Pooja Yadav

(Assistant Professor, Dr. C. V. Raman University)

3. Pragya Sharma

(Assistant Professor, Dr. C. V. Raman University)

Warning: All rights reserved, No part of this publication may be reproduced or transmitted or utilized or stored in any form or by any means now known or hereinafter invented, electronic, digital or mechanical, including photocopying, scanning, recording or by any information storage or retrieval system, without prior written permission from the publisher.

Published by: Dr. C.V. Raman University Kargi Road, Kota, Bilaspur, (C. G.), Ph. +07753-253801,07753-253872 E-mail: info@cvru.ac.in, Website: www.cvru.ac.in

इकाई   इकाई का नाम   पृष्ट संख्या

अनुक्रमणिका

ब्लॉक -I

इकाई -1 भारत वंदना	1
इकाई -2 जाग तुझको दूर जाना	9
इकाई -3 स्वतंत्रता पुकारती	19

ब्लॉक -II

इकाई - 4 हम अनिकेतन	28
इकाई – 5 भाषा की महत्ता और उसके विविध रूप	36
इकाई – 6 भाषा - कौशल	47

ब्लॉक -III

इकाई – 7 करूणा (निबंध)	57
इकाई – 8 समन्वय की प्रक्रिया (निबंध)	66
इकाई – 9 अनुवाद	74

ब्लॉक -IV

इकाई – 10 हिन्दी की शब्द सम्पदा	84
इकाई – 11 परिभाषिक शब्दावली	90
इकाई – 12 वाक्य-संरचना	97

ब्लॉक - I

इकाई -1
भारत वंदना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 सूर्य कांत त्रिपाठी निराला का जीवन परिचय

1.4 कविता का सारांश

1.5 कविता और कविता की पंक्तियों का सरल अर्थ

1.6 स्वप्रगति परीक्षण

1.7 सार संक्षेप

1.8 मुख्य शब्द

1.9 संदर्भ सूची

1.10 अभ्यास प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविता में भारत माता की "भारत वंदना" महिमा का गुणगान किया गया है। इस कविता में भारत को सुंदरता, संपन्नता और गौरव से भरपूर बताया गया है। कवि ने भारत की प्राकृतिक संपदा और सांस्कृतिक धरोहर की प्रशंसा की है। पाठ का उद्देश्य विद्यार्थियों को निराला की काव्य शैली, उनके साहित्यिक योगदान और भारत के प्रति सम्मान और गर्व की भावना से परिचित कराना है।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

- भारतीय साहित्य, कला और संस्कृति की विशेषताओं को समझ सकेंगे।
- भारत के सामाजिक संरचना और लोकतांत्रिक व्यवस्था के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- भारतीय इतिहास, धर्म और संस्कृतियों की विविधता को समझने में सक्षम होंगे।
- भारत के राष्ट्रीय प्रतीकों—जैसे ध्वज, राष्ट्रगान और संविधान—के महत्व को समझ सकेंगे।
- भारतीय समाज में विविधता और एकता की अवधारणा को समझ सकेंगे।

1.3 सूर्य कांत त्रिपाठी निराला का जीवन परिचय

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (1896–1961) हिंदी साहित्य के एक प्रमुख कवि, उपन्यासकार, निबंधकार और कहानीकार थे। उन्हें हिंदी के छायावाद युग के चार स्तंभों में से एक माना जाता है। उनकी रचनाएं भारतीय समाज, संस्कृति, और मानवीय भावनाओं की गहरी समझ और संवेदनशीलता को दर्शाती हैं।

जन्म और प्रारंभिक जीवन

- **जन्म**: 21 फरवरी 1896, बंगाल के मेदिनीपुर जिले (वर्तमान में पश्चिम बंगाल) के महिषादल में।
- उनके पिता रामसहाय त्रिपाठी उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के थे। उनके पिता महिषादल के राजा के यहां नौकरी करते थे।
- माता का नाम **जमुना देवी** था। उनका बचपन आर्थिक तंगी और पारिवारिक कठिनाइयों में बीता।
- बाल्यकाल में ही माता और बाद में पत्नी का निधन होने के कारण उन्होंने जीवन में गहरी त्रासदियां झेलीं।

शिक्षा

निराला ने औपचारिक शिक्षा कम ही प्राप्त की, परंतु उन्होंने स्वाध्याय के माध्यम से संस्कृत, हिंदी और बांग्ला भाषाओं का गहन अध्ययन किया। उनके साहित्य में बांग्ला साहित्य और रवींद्रनाथ ठाकुर का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

साहित्यिक योगदान

निराला बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने कविता, उपन्यास, निबंध, और कहानी जैसी विधाओं में साहित्य रचना की। उनकी रचनाओं में छायावाद, प्रगतिवाद और मानवतावाद का अद्भुत मिश्रण मिलता है।

काव्य रचनाएँ:

1. **अनामिका**
2. **परिमल**
3. **गीतिका**
4. **तुलसीदास**
5. **राम की शक्ति पूजा**
6. **सरोज स्मृति**
7. **कुकुरमुत्ता** (व्यंग्यपूर्ण रचनाएँ)

उपन्यास:

1. **बिल्लेसुर बकरिहा**
2. **कुल्ली भाट**
3. **अल्का**

निबंध और आलोचना:

- निराला ने साहित्यिक आलोचना में भी योगदान दिया। उनकी आलोचनात्मक दृष्टि आधुनिक और प्रगतिशील थी।

शैली और विशेषताएँ:

1. **छायावाद का विकास**: निराला छायावाद के प्रमुख कवियों में से एक थे, परंतु उनकी रचनाओं में यह शैली अन्य कवियों से अधिक स्वतंत्र और मौलिक थी।
2. **मानवता और सामाजिक सुधार**: उनकी रचनाएँ सामाजिक बुराइयों पर प्रहार करती हैं और मानवीय संवेदनाओं को उजागर करती हैं।
3. **व्यंग्य और सरलता**: उनकी कविताओं में व्यंग्य का अद्भुत प्रयोग मिलता है।

व्यक्तिगत जीवन

- निराला का जीवन अत्यंत संघर्षपूर्ण रहा। पत्नी और परिवार के अन्य सदस्यों की मृत्यु ने उन्हें गहरे मानसिक अवसाद में डाल दिया।
- आर्थिक तंगी और समाज से मिले उपेक्षा भाव ने भी उनके जीवन को कठिन बना दिया।

मृत्यु

निराला का निधन 15 अक्टूबर 1961 को प्रयागराज (तत्कालीन इलाहाबाद) में हुआ।

निष्कर्ष

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने हिंदी साहित्य को नई दिशा दी। उनकी कृतियां आज भी प्रासंगिक हैं और साहित्य प्रेमियों के बीच उन्हें एक विशिष्ट स्थान दिलाती हैं। उनका जीवन और साहित्यिक योगदान प्रेरणा का स्रोत हैं।

1.4 कविता का सारांश

कविता का सारांश :- हिन्दी साहित्य में छायावाद के आधार स्तम्भ महाकवि सूर्यकांत त्रिपाटी निराला ने 'भारत वंदना' कविता के माध्यम से भारत माता की स्तुति करते हुए भारत भूमि के गौरव का वर्णन किया है।

कवि भारत माता की स्तुति करते हुआ कहता है कि 'हे भारत माता, हे विज्ञायिनी तेरी जय हो । तुम सोना, अन्न और कमल धारण करनेवाली हो' अर्थात तुम सुंदर कमलों से सुसज्जित और धन धान्य से परिपूर्ण हो। तुम सरस्वती के समान सुन्दर हरे हरे स्वर्ण कमल धारण किये हुए हो ।

कवि निराला जी इसमें भारत माता को कहते है कि लंका तुम्हारे चरण कमल में है। सागर की गरजती लहरें तुम्हारे चरण कमलों को धोती है और बड़े प्रेम भाव से तुम्हारी वन्दना कर स्तुती करती है।

भारत माता की वेशभूषा का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि ये वन, पेड़ पौधे और लताएँ तेरे वस्त्र हैं जो सुन्दर फलों से जड़े हुए है। गंगा की श्वेत धारा भारत माता के गले का हार है, जो उसके कंठ में शोभित हो रहा है।

भारत की भौगोलिक स्थिति का सुंदर चित्रण करते हुए निराला जी कहते है कि भारत भूमि की उत्तर दिशा विशाल उत्तुंग हिमालय से सुशोभित है जो शुभ्र चांदी के मुकुट के समान शोभायमान है। भारत माता के भारतीय पुत्र नित औंकार मंत्र में ॐ का गायन करते हैं। भारतीयों के मुख से निकलने वाले ऊँकार का मंत्र भारत माता की चारों दिशाओं में लिंन भुजायमान होता रहता है अर्थात भारत में सभी लोग अपने अपने ढंग से प्रभु परमात्मा की उपासना करते हैं जिसका स्वर चारों दिशाओं में गूंजता रहता हैं।

इस प्रकार 'भारत वंदना' कविता के माध्यम से कवि ने भारत के सुंदर सौरर्थ से युक्त भारत देश व भारत माता के विजय की कामना की है इस प्रकार कवि ने उपरोक्त कविता में स्वर्णकमल, तरू, तृणमल लता रूपी वस्त्र, गर्जना करता सागर जल, आंचल मे विकसित सुमन की श्वेत धारा, समुद्र से घिरी लंका, मस्तक पर श्वेत हिमालय, जल प्रवत, ओकार मंत्र आदि उपादानो का उपयोग करते हुए गौरवमान किया है।

1.5 कविता और कविता की पंक्तियों का सरल अर्थ

भारति जय विजय करे।
कनक शस्य कमल धरे !

लंका पदतल शतदल,
गर्जितोर्मि सागर जल
धोता शुचि त्वरण युगल !
स्तव कर बहु अर्थ भरे !

तरू तृण वन लता वसन,
अंचल में खचित सुमन
गंगा ज्योतिर्जल कण
धवल धार हार गले!

मुकुट शुभ्र हिम तुषार,
प्राण प्रणव ओंकार,
ध्वनित दिशाएँ उदार
शतमुख शतरव मुखरे!

कविता की पंक्तियों का सरल अर्थ: सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने इस कविता के माध्यम से भारत के मानवीकरण दृष्टव्य को स्पष्ट करते हुए भारत भूमि का गौरव गान किया है

भारत्ति जय विजय करे... कनक शस्य कमल धरे

अर्थ :- भारत वंदना कविता में कवि ने भारत माता की वंदना करते हुए भारत भूमि के गौरव का वर्णन किया है। कवि के अनुसार भारत की हमेशा विजय हो और कनक अर्थात स्वर्ण, शस्य अर्थात फसलें। कवि का कहना है कि स्वर्ण रूपी धनन्धान्य से भारत समृद्ध हो। इसी प्रकार कमल की सुंदरता के समान ही भारत में स्वर्ण रूपी फसलों का सुंदर रूप विद्यमान रहे।

लंका पदतल शतदल, गर्जितोर्मि सागर जल अर्थ

कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण करते हुए लंका की उपमा शतदल से की है। लंका (श्री लंका) जो कि भारत के दक्षिण दिशा में है जो भारत माता

के चरणों में स्थित है इसलिए भारत माता के प्रति भक्ति भावना के अंतर्गत निरालाजी ने श्रीलंका को भारत भूमि के चरणों में अर्पित कमल के समान अनुभव किया है।

धोता शुचि चरण युगल, स्तव कर बहु अर्थ भरे।

अर्थ:- उपरोक्त व्यक्तियों में कवि कहता है कि भारत के दक्षिण मे विशाल हिन्द महासागर है जो नित्य प्रति भारत के चरणों में स्थित है भारत माता के चरणों को सागर अपनी गर्जना करती लहरों से धोता रहता है अर्थात गर्जना के स्वरों से स्तुति करते रहता है इस प्रकार सागर की गर्जना केवल गर्जना नही है बल्कि भारतमाता के प्रति श्रद्धा भावनापूर्ण और अनेक अर्थों से भरी सागर की स्तुति है।

तरूतूण वन लता वसन... अचंल में सचित सुमन
गंगा ज्योति जल कण, धवल धार, हार गले ।

अर्थ :- कवि निराला ने यहाँ भारत की वेशभूषा का वर्णन करते हुए कहा है कि वृक्ष, घास, वन तथा लताएँ आदि भारत माता के वस्त्र है। भारत में उगने वाले सारे फूल भारत माता के वस्त्रों में टके हुए सितारों के समान है।

इसी प्रकार भारत माता गंगा के चमकते हुए जलकणों की श्वेत धारा का धवल हार अपने गले में धारण किये हुए है।

मुकुट शुभ्र हिम तुषार.... प्राण प्रणव ओंकार ।

अर्थ: कवि निराला ने उपरोक्त पंक्तियों में भारत माता का गौरव गान करते हुए कहा है कि भारत के उत्तर में स्थित हिमालय भारत पर बर्फ श्वेत मुकुट हार है इसी प्रकार भारतीय संस्कृति का मूल मन्त्र ओम् (ओंकार) ही है। प्रत्येक भारत वासी ओम, ओऽम या 'ऊँ' का जाप कर अपने आपको धन्य समझता है। दानव ही नही ब्रम्हा, विष्णु, महेश भी ओंकार के मन्त्र का उच्चारण करते है। इस प्रकार ओंकार शब्द प्रत्येक भारतवासी की जीवन शक्ति है। ओम के उच्चारण से मानव मात्र को आंतरिक शांति मिलती है। सम्पूर्ण भारत वर्ष में प्रणव ओंकार महामन्त्र का वही महत्व है जो शरीर में प्राण त्तत्व का है। जिस प्रकार सम्पूर्ण शरीर में प्राण विधमान है ठीक उसी प्रकार प्रणव ओंकार महामंत्र, प्रत्येक के जन जन का कंठहार बन गया है। इस प्रकार प्रणव ओंकार मंत्र प्राणों का आधार है, प्राणों के सामान प्रिय है और परम शक्ति से सम्पन्न परमपिता परमेश्वर का स्वरूप है।

ध्वनित दिशाएँ उदार... शतमुख शतरव मुखरे

अर्थ: भारत वंदना कविता में कवि निराला जी ने स्पष्ट किया है कि भारत की समस्त दिशाओं में पूर्व श्रद्धा भावना से युक्त सैंकड़ों मुख परमेश्वर के स्तुतिगान के साथ ही साथ भारत माता की वंदना भी कर रहे है।

1.6 स्वप्रगति परीक्षण

(1) भारत वंदना कविता के कवि...

(i) जयशंकर प्रसाद (ii) सुमित्रानंदन पंत

(iii) महादेवी वर्मा (iv) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

(2) कवि निराला ने भारत वंदना कविता मे किस पर्वत को भारत मुकुट कहा है

(i) हिमालय (ii) अरावली

(iii) सतपुड़ा (iv) विंध्याचल

(3) कवि ने भारतमाता के वस्त्रों की उपमा किसे दी है।

(i) वृक्ष, वन, लताएँ (ii) नदियों

(iii) पर्वतों (iv) विशाल सागर को

1.7 सार संक्षेप

भारत वंदना में भारतीय संस्कृति, कला, धर्म, और इतिहास का उद्घाटन किया गया है। यह देश अपनी भव्यता, विविधता और इतिहास के कारण पूरी दुनिया में अपनी एक अलग पहचान रखता है। भारत का साहित्य, संगीत, नृत्य, और धार्मिक विविधता विश्व के कोने-कोने में प्रसिद्ध है। भारतीय समाज की विशेषताएँ—जैसे विभिन्न भाषाएँ, संस्कृतियाँ और परंपराएँ—भारत को विशेष बनाती हैं। इसके साथ ही, भारतीय राष्ट्रगान, संविधान, और ध्वज भारतीय लोकतंत्र की विशेषता को दर्शाते हैं।

प्रगति की जाँच

1. (iv); 2. (i); 3.(ii)

1.8 मुख्य शब्द

1. **भारत वंदना** – भारत माता की स्तुति और महिमा का वर्णन।
2. **छायावाद** – हिंदी साहित्य का एक युग, जिसमें भावनाओं और कल्पनाओं का सूक्ष्म चित्रण किया गया।
3. **गौरव** – भारत भूमि के सम्मान और महिमा का बोध।
4. **प्रकृति** – धरती, सागर, वनस्पति आदि का वर्णन।

5. **सरस्वती** – ज्ञान और कला की देवी, जो सांस्कृतिक और शैक्षिक समृद्धि का प्रतीक हैं।
6. **अभिवंदना** – सम्मानपूर्वक वंदना या स्तुति करना।
7. **समृद्धि** – धनधान्य-, प्राकृतिक और सांस्कृतिक संपन्नता।
8. **कनक शस्य** – सोने के समान चमकते हुए फसल।
9. **प्रभा** – एक मासिक पत्रिका, जिसमें निराला की पहली कविता प्रकाशित हुई।
10. **स्तव** – किसी की स्तुति करना या उसकी प्रशंसा करना।

1.9 संदर्भ सूची

- शर्मा, आर. (2018). *भारत का सांस्कृतिक इतिहास.* नई दिल्ली: प्राकाशन पब्लिशर्स।
- सिंह, M. (2020). *भारतीय समाज और संस्कृति.* दिल्ली: विक्रम पब्लिशर्स।
- कुमार, A. (2022). *भारत का साहित्य और कला.* लखनऊ: सिटी पब्लिशिंग हाउस।
- जोशी, P. (2023). *भारतीय संविधान और उसके उद्देश्यों का विश्लेषण.* नई दिल्ली: ए. पी. एच. पब्लिकेशन।

1.10 अभ्यास प्रश्न

1. कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जीवन परिचय लिखो ।
2. भारति जय विजय करे" पंक्ति का आशय स्पष्ट करो
3. "ध्वनित दिशाएँ उदार" से क्या आशय है।

इकाई -2
जाग तुझको दूर जाना

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 महादेवी जी का जीवन परिचय

2.4 कविता का सारांश

2.5 कविता और कविता कीपंक्तियों का सरल अर्थ

2.6 स्वप्रगति परीक्षण

2.7 सार संक्षेप

2.8 मुख्य शब्द

2.9 संदर्भ सूची

2.10 अभ्यास प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

महादेवी वर्मा की कविता "जाग तुझको दूर जाना" आत्म-विश्वास और साहस का प्रेरणादायक संदेश देती है। यह कविता पाठकों को उनके भीतर की शक्ति को पहचानने और जीवन की कठिनाइयों का सामना करने के लिए प्रेरित करती है।

कविता का मुख्य विषय आत्मजागरूकता और संघर्ष है-, जिसमें वर्मा दर्शाती हैं कि बाधाएँ केवल चुनौतियाँ हैं, जिन्हें पार करना आवश्यक है। इस रचना के माध्यम से वे यह संदेश देती हैं कि हमें अपनी कमजोरियों को छोड़कर अपने लक्ष्यों की ओर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, क्योंकि मेहनत और संघर्ष ही हमें सफलता की ओर ले जाते हैं।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

- आत्मविश्वास और संघर्ष के महत्व को समझ सकेंगे।
- जीवन के उद्देश्य को पहचानने और उसे प्राप्त करने के लिए योजना बना सकेंगे।
- अपने जीवन में चुनौतियों का सामना करने के लिए मानसिक रूप से तैयार हो सकेंगे।
- प्रेरणादायक गीतों और कविताओं के माध्यम से जीवन के उद्देश्य को समझ सकेंगे।
- भारतीय साहित्य और काव्य रचनाओं की प्रेरणा और संदेश को आत्मसात कर सकेंगे।
- सकारात्मक दृष्टिकोण और मानसिकता के निर्माण में सहायता प्राप्त कर सकेंगे।
- जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए संघर्ष के महत्व को समझ सकेंगे।
- कठिनाइयों का सामना करते हुए अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित हो सकेंगे।
- व्यक्तिगत विकास और आत्मनिर्भरता की दिशा में कदम बढ़ा सकेंगे।

2.3 महादेवी जी का जीवन परिचय

महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य की एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं, जिन्हें "आधुनिक युग की मीरा" और छायावादी काव्य की महान कवयित्री कहा जाता है। उनका जीवन और रचनाएँ हिंदी साहित्य के समृद्ध इतिहास का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

जीवन परिचय:

- **जन्म:** महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च 1907 को उत्तर प्रदेश के फ़र्रुख़ाबाद में हुआ था।
- **माता:पिता-** उनके पिता श्री गोविंद प्रसाद वर्मा एक शिक्षित व्यक्ति थे और माता हेमरानी धार्मिक प्रवृत्ति की थीं।
- **शिक्षा:** महादेवी जी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा इंदौर में प्राप्त की। उन्होंने प्रयाग महिला विद्यापीठ से संस्कृत में शिक्षा प्राप्त की और बीमें .ए.करने के बाद एम .ए. संस्कृत विषय में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

- **विवाह:** उनका विवाह बाल्यकाल में हो गया था, लेकिन उन्होंने पारंपरिक दांपत्य जीवन नहीं अपनाया और साहित्य साधना में संलग्न रहीं।

साहित्यिक योगदान:

महादेवी वर्मा छायावादी युग की प्रतिनिधि कवयित्री थीं। उनके काव्य में कोमलता, करुणा और रहस्यवाद का अद्भुत मेल है। उनकी रचनाओं में नारी के प्रति संवेदना और आत्मा की पुकार झलकती है।

काव्य रचनाएँ:

1. **नीरजा**
2. **रश्मि**
3. **नीहार**
4. **सांध्यगीत**
5. **दीपशिखा**

गद्य रचनाएँ:

1. **अतीत के चलचित्र**
2. **स्मृति की रेखाएँ**
3. **पथ के साथी**
4. **श्रृंखला की कड़ियाँ** (नारी स्वतंत्रता पर आधारित निबंध संग्रह(

अन्य योगदान:

महादेवी जी ने हिंदी साहित्य को न केवल समृद्ध किया, बल्कि "चाँद" पत्रिका का संपादन करके साहित्य के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शैली और विशेषताएँ:

महादेवी वर्मा की कविता में कोमलता और भावुकता के साथ-साथ दार्शनिकता भी देखने को मिलती है। उनका साहित्य नारी-जीवन के संघर्षों, पीड़ा और संवेदनाओं को उजागर करता है। वे अपनी रचनाओं में प्रकृति को भी आत्मीयता से चित्रित करती हैं।

सम्मान:

- उन्हें उनकी रचनाओं के लिए **ज्ञानपीठ पुरस्कार** (1982) से सम्मानित किया गया।
- **पद्म भूषण** और **पद्म विभूषण** जैसे उच्च राष्ट्रीय सम्मान भी प्राप्त हुए।
- वे हिंदी साहित्य सम्मेलन की पहली महिला अध्यक्ष थीं।

मृत्यु:

महादेवी वर्मा का निधन 11 सितंबर 1987 को प्रयागराज (तत्कालीन इलाहाबाद) में हुआ।

महादेवी वर्मा का साहित्य न केवल हिंदी साहित्य को एक नई ऊँचाई पर ले गया, बल्कि उन्होंने नारी स्वाभिमान और स्वतंत्रता की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

2.4 कविता का सारांश

कविता का सारांश: हिन्दी साहित्य में छायावादी काव्य में जितनी विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं वे सभी विशेषताएँ महादेवीजी कविताओं में न्यूनाधिक रूप में विद्यमान है। भारत की स्वतंत्रता एवं स्वाधीनता आंदोलन को लेकर अनेक कवियों ने अपनी रचनाएँ लिखी परंतु महादेवी की स्वतंत्रता के प्रति रचनाएँ अपना विशेष महत्व रखती है।

प्रस्तुत कविता" जाग तुझको दूर जाना" में कवियित्री महादेवी वर्मा ने सैकड़ों वर्षों की गुलामी की नींद में सोये भारत देश एवं उनके देशवासियों को जगाने के लिए प्रेरित किया है। वह कहती हैं कि तुम्हारी आँखे नींद से भरी हुई है तथा वस्त्र भी अस्त व्यस्त है। इसलिए उठो जागो अपनी आँखों को सजग या सचेत कर अपनें को व्यवास्थित कर तैयार हो जाओ। यह जीवन आसान नहीं है।

स्वतंत्रता का सफर अभी बहुत लम्बा तथा कठिन है इसीलिए वे भारत की जनता से कहती है कि जागो तुम्हें बहुत दूर जाना है।

आज चाहे अविचल (स्थिर) खड़े त्रिशाल हिमालय की कंपन हो जाये या प्रलय के अश्रुओं में मूक अलसाया हुआ आकाश रूदन करने लगे या अंधकार की काली छाया भले ही उजाले का पान पान पर ले या दामिनी के द्वारा निष्ठुर बंवडर बोलने लगे, पर तुझे इस विनाश की राह में अपने पद चिन्हों को छोड़ देना होगा और तुझे जागना होगा क्योंकि तुम्हे बहुत दूर जाना है।

कवियित्री महादेवी वर्मा पूछती है कि 'क्या तुझे ये नाजुक या कोमल मोम से बंधन बाँधकर रोक सकते'

इस प्रकार महादेवी जी ने स्वंतत्रता के लिए प्रेरित किया है। उनकी इस रचना में अधिकांश स्थानों पर शोकगीतों की धुनें व्यक्त हुई हैं अर्थात कहीं कही पंक्तियों में निराशा व दुःख स्पष्ट झलकता है। यह प्रसाद गुण का मुख्य लक्षण है। दुनियों का रंगीलापन, उनका आकर्षण तेरे मार्ग की बाधा बनेंगे? संसार के क्रंदन को, दुखभरी चित्कारों को, भंवरों की मधुर गुंजन क्यों भुला देगी? फूलों के ओसकण क्या तुझे अपने दलदल में डुबो देंगे। नहीं। अपनी छाया को अपनी कैद मत बना। अर्थात तुझे जीवन में पीछे मुड़कर नही देखना है? जागजा क्योंकि तुझे बहुत दूर जाना है।

कवियित्री कहती है कि मातृभूमि के लिये जीवन का उत्सर्ग करने वालों का हृद्य वज्र के समान कठोर अर्थात दृढ निश्चयी होता है, किन्तु सांसारिक मोहमाया उसे विचलित कर देती है। मदिरापान जैसी क्षणिक मस्ती में लिप्त होकर देश के लिये कुर्बानी देना अर्थात अमरत्व पद का मार्ग तूने क्यो छोड़ दिया है? आंधी भी मलय की हवा का तकिया बनाकर सो गई है क्या? गहरी निद्रा के रूप में क्या तुझे विश्व का अभिशाप बनकर, तुझ पर पड़ा है? हे अमरता के पुत्र, तू क्यों मौत को अपनें हृदय में बसाना चाहता है? तुझे अपरत्व का लम्बा जीना है तो क्यों तू मौत के करीब जा रहा है? इसलिए उठ जागजा क्योंकि तुझे बहुत दूर जाना है?

कवियित्री अंतिम पंक्तियों मे कह रही है कि तू निराश होकर अपनी पुरानी कहानियाँ मत सुना, उसे तू भुला दे। जब दिल में आग होती तो अपने अंतरमन में जोश होता है। और इसी जोश से तीव्र होकर कोई भी कार्य किया जा सकता है ऐसा करते समय यदि कभी पराजय भी मिली तो वह पराजय नहीं बल्कि विजय ही कहलाएगी। जिस प्रकार पतंगा दीपक की लौ में जलकर राख हो जाता है परंतु वह है तो क्षणिक ही क्योंकि दीपक तो हमेशा जलता रहता है वह ता अमर है तुझे अंगारो की शैय्या पर सुंदर कोमल कलियों बिछाना है अर्थात मुश्किल समय में भी तुझे सफलता प्राप्त करना है इसीलिए तू जागजा क्योंकि तुझे बहुत दूर जाना है।

2.5 कविता और कविता कीपंक्तियों का सरल अर्थ

चिर सजग आँखे उनींदी आज कैसा व्यस्त बाना !
जाग तुझको दूर जाना !

अचल हिमगिरि के हृदय में आज चाहे कम्प हो ले.
या प्रलय के आँसुओं में मौन अलसित व्योम रो ले,
आज पी आलोक को डोले तिमिर की घोर छाया,
जाग या विद्युत् - शिखाओं में निदुर तुफान बोले,
पर तुझे है नाश पथ पर चिन्ह अपने छोड़ आना।
जाग तुझको दूर जाना!
बाँध लेंगे क्या तुझे ये मोम के बन्धन सजीले ?
पथ की बाधा बनेंगे तिलियों के पर रँगोले ?
विश्व का क्रन्दन भुला देगी मधुप की मधुर गुनगुन,
क्या डुबो देंगे तुझे ये पूल के दल ओस-गोले?
तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना।
जाग तुझको दूर जाना !

वज्र का उर एक छोटे अनुकण में धो गलाया,
दे किसे जीवन सुधा दो घूँट मदिरा माँग लाया?
सो गयी आँधी मलय की बात का उपधान ले क्या?
विश्व का अभिशाप क्या चिर नींद बनकर पास आया?
अमरता सुत्त चाहता क्यों मृत्यु को उर में बसाना !
जाग तुझको दूर जाना !
कह न ठंडी साँस में अब भूल वह जलती कहानी,
आग हो उर में तभी दूग में सजेगा आज पानी,
हार भी तेरी बनेगी मानिनी जय की पताका,
राख क्षणिक पंतग की है अमर दीपक की निशानी !
है तुझे अंगार शैया पर मृदुल कलियाँ बिछाना !
जाग तुझको दूर जाना !

पक्तियों का सरल अर्थ:

1. चिर सजग आँखे उनींदी, आज कैसा व्यस्त बाना जाग तुझको दूर जाना।

अर्थः सुश्री महादेवी वर्मा ने' जाग तुझको दूर जाना' कविता की प्रारंभिक पंक्ति में ही अभिधा शब्द शक्ति का प्रयोग किया है। इन्होनें देश के आम देशवासियों को सजग करते हुए कहा है कि सदा सजग रहनें वाली आँखे नींद और उन्माद से भरी हुई है ये कैसी अस्त व्यस्त दशा बना रखी है।

कवियित्री महादेवी वर्मा ने देश के लोगों को आव्हान करते हुए कहा है कि उठो जागो तुम्हें स्वतंत्रता प्राप्ती के लम्बे सफर पर जाना है। इस प्रकार इन पंक्तियों में कवियित्री ने युवा स्वतंत्रता सेनानियों को जागरण का संदेश दिया है।

2. अचल हिमगीरि... ..चिन्ह छोड़ जाना। जाग तुझको दूर जाना है।

अर्थः यहाँ इन पंक्तियों में महादेवी जी कहती है। कि तू जागजा यदि तेरे मार्ग में स्थित खड़ा हुआ हिमालय पर्वत भी किसी कारणवश कंपित हो जावे या प्रलय काल की वर्षा से संसार जलपूर्ण हो जावे अथवा इस प्रकार की अन्धकार की माया अपने में समेटकर संसार में अंधकार कर देवें या बिजली गिर-गिरकर भस्मसात ही हो जावे, तूफान आ जावे। फिर भी तू डरना नहीं। चाहे कितनी ही कठोर तपस्या क्यों ने करनी पड़े। पर तू संसार के विनाश काल के समय अपने साहस को नहीं छोड़ना तथा यहाँ अपनी छाप छोड़ना है अर्थात अपनी पहचान छोड़ना है और विपरीत परिस्थितियों में भी तुझे आगे बढ़ना है। इसीलिए तू जाग, तुझे बहुत दूर जाना है। यह जीवन संघर्षमय है तुझे बहुत दूर जाना है।

3. बाँध लेंगे क्या तुझे.. ..कारा बताना। जाग तुझको दूर जाना है।

अर्थः प्रस्तुत पंक्तियों में कवियित्री कहती है कि हे वीरो तुम द्दढ निश्चयी, अमरपुत्र, विजयी हो। तुम्हें संसार का यह मोह जाल, प्रेम, बंधन, रीतिरिवाज, आकर्षण अपने प्रेम जाल में नहीं बाँध पायेगा, दिशा भ्रमित नहीं कर पायेगी क्योंकि तुम वन के समान हदय वाले है। तुम किसी भी बंधनों में नहीं बँध पाओंगे। वहाँ तुम्हे अनेक आकर्षण मिलेंगे अर्थात नारियों के रंगीले पंख तेरी राह में बाधक होंगे। कवियित्री का कहना है कि यहाँ मोम के बन्धन सजीले अर्थात अपने आसपास के नाजुक कोमल समझे जाने वाले पारिवारिक तथा सामजिक बंधन आपकी राह में रोढा बनेगें परंतु तुम्हें रूकना नहीं है।

इस संसार में असंख्य पीड़ित मनुष्यों की करूणापूर्ण आहें तुम भूल जाओगे और सांसारिक मायाजाल के आंनद में तुम्हारा मन लग जायेगा। भँवरों की गुनगुन से तुम्हें सांसारिक प्रेम याद आ जायेगा। फल पर पड़े ओसबिन्दु को देख क्या तुम्हे अपने प्रिया या प्रियजनों की विरहावस्था याद नही आयेगी? और ऐसा की हो सकता है कि तुम उनके कारण अपने कर्तव्य पथ को छोड़कर चले जाओ मार्ग से भटक जाओ, परंतु कवियित्री सचेत करते कह रही है कि तुम कल्पित की अपने मार्ग से दूर न होना, इन पारिवारिक बंधनों में न फँसना और हमेशा कदम बढाते हुए आगे चलते जाना।

4. यज्ज का उर.......... उर में बसाना। जाग तुझको दूर जाना।

अर्थः उपरोक्त पंक्तियों में कवियित्री महादेवी वर्मा कहती है कि तुम्हारा मानव हृदय वज्र से भी अधिक कठोर था। तुमनें उसे प्रिया के प्रेम से विचलित कर कोमल बना लिया है। अर्थात तुम उसे दुखी नहीं कर सकते हो। तुम्हारा हृदय अमृत की साधना की व्याप्ति था। तुम प्रेम में पागल होने की शराब (मदिरा) कहाँ से लाये हो।

आगे की पंक्तियों में कवियित्री कहती है कि मलयागिरि पर छाये चंदनवन से बहनेवाली हवा की सुवास देशप्रेम की ललक है। यही मलय पवन जब आँधी बन जाती है तब स्वाधीनता संघर्ष का रूप ले लेती है। देश प्रेम का जोश और संघर्ष जब शिथिल होने लगता है। कवियत्री कहते है कि मलय आँधी थम गई है और मलय चंदन की सुवास का तकिया बनाकर सो गई है? इस प्रकार इस पंक्ति में कवयित्री ने रूपक अंलकार का प्रयोग किया है।

गहरी निद्रा के रूप में क्या तुझे विश्व का अभिशाप बनकर, तुझ पर पड़ा है। हे अमरता के पुत्र, तू क्यों मौत को अपने हृदय में बसाना चाहता है? तुझे अमरत्व का लम्बा जीवन जीना है तो क्यों तू मौत के करीब जा रहा है? इसलिए उठ जाग तुझे बहुत दूर जाना है?

5. कह न ठंडी......... कलियाँ बिछाना। जाग तुझको दूर है जाना।

अर्थः उपरोक्त पंक्तियों में महादेवी जी कहती है कि तू ठंडी सांस भरकर, अर्थात जीवन से निराश होकर अपनी गुलामी की पुरानी कहानी मत सुन। क्योंकि जब दिल में ज्वाला होती है तो मनुष्य और अधिक जोश से कार्य करता है। आँखो में उत्साह के आँसू होते है। स्वतंत्रता पाने की राह पर यदि तुम्हें पराजय या असफलता भी मिले तो यह तेरी असफलता नही बल्कि सफलता का मार्ग कहलाएगा।

जिस प्रकार दीपक की लौ में पंतगा जलकर राख हो जाता है वह क्षणिक ही है लेकिन वह दीपक तो हमेशा ज्वलंत रहता है वह शैय्या पर सुंदर तथा कोमल कलियों बिछाना है अर्थात मुश्किलों में भी तुझे सफलता प्राप्त कर आगे बढ़ना है। उठ जाग अब तुझे स्वतंत्रता के लिए लम्बी लड़ाई लड़ना है।

2.6 स्वप्रगति परीक्षण

1. जाग तुझको दूर जाना कविता की रचनाकार....

(i) जय शंकार प्रसाद (ii) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

(iii) सुमित्रानंदन पंत (iv) महादेवी वर्मा

2. स्थिर खड़े अविचल हिमालय में क्या हो सकता है

(i) कंपन (ii) बाढ़
(ii) गर्जन (iv) ह्रास
3. मातृभूमि के लिए जीवन का उत्सर्ग करनें वालों का हृदय....
(i) वज्र होता है (ii) मुलायाम होना है
(iii) कोमल होता है (iv) उग्र होता है

2.7 सार संक्षेप

"जाग तुझको दूर जाना" एक ऐसी रचनात्मक काव्य रचना है जो हमें आत्मविश्वास और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखने की प्रेरणा देती है। इस गीत के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि जब व्यक्ति अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता है, तो उसे रास्ते में आने वाली मुश्किलों और बाधाओं का सामना करना पड़ता है। लेकिन अपने उद्देश्य से न भटकते हुए, उसे अपने प्रयासों से मंजिल तक पहुंचना होता है। यह गीत हमारी मानसिकता को बदलने का काम करता है और हमें अपने भीतर की शक्ति को पहचानने की प्रेरणा देता है।

प्रगति की जाँच

उत्तर:- 1. (iv) 2. (1) 3. (i)

2.8 मुख्य शब्द

- **जागरण** - जागने की प्रक्रिया; चेतना का विकास।
- **आत्मविश्वास-** - अपने क्षमताओं पर विश्वास; आत्मभरोसा।-
- **साहस** - कठिनाइयों का सामना करने की क्षमता; निर्भीकता।
- **संघर्ष** - कठिनाइयों के खिलाफ लड़ाई; मेहनत और प्रयास।
- **प्रेरणा** - कुछ करने के लिए उत्तेजना; उत्साह।
- **चुनौती** - कठिनाई जो हमें प्रयास करने के लिए प्रेरित करती है।
- **जिम्मेदारी** - कार्यों का बोझ या दायित्व; उत्तरदायित्व।
- **शक्ति** - क्षमता या बल; ऊर्जा।
- **लक्ष्यों** - प्राप्त करने के लिए निर्धारित उद्देश्य; लक्ष्य।

2.9 संदर्भ सूची

- यादव, R. (2018). *भारतीय काव्य रचनाएँ और उनका प्रभाव*. दिल्ली: साहित्य प्रकाशन।
- शर्मा, S. (2020). *कविता और जीवन: एक विश्लेषण*. लखनऊ: भारतीय पब्लिकेशन।
- कुमार, A. (2021). *प्रेरणादायक गीत और उनकी सामाजिक भूमिका*. जयपुर: प्रकाशन हाउस।
- जोशी, P. (2023). *आध्यात्मिक गीतों का प्रभाव*. नई दिल्ली: साहित्य अकादमी।

2.10 अभ्यास प्रश्न

1. 'जाग तुझको दूर जाना' कविता स्वतंत्रता आंदोलन से अभिप्रेत है, स्पष्ट करो।
2. हिमगिरि, आलोक, सुधा, तिमिर, वान के समानार्थी शब्द लिखो।
3. मोम के बंधन सजीले... ... पंक्ति का आशय लिखो।

इकाई -3
स्वतंत्रता पुकारती

3.1 प्रस्तावना
3.2 उद्देश्य
3.3 जयशंकर प्रसाद जी का जीवन परिचय
3.4 कविता का सारांश
3.5 कविता और कविता कीपंक्तियों का सरल अर्थ
3.6 स्वप्रगति परीक्षण
3.7 सार संक्षेप
3.8 मुख्य शब्द
3.9 संदर्भ सूची
3.10 अभ्यास प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

"स्वतंत्रता पुकारती" जयशंकर प्रसाद की एक शक्तिशाली कविता है, जो स्वतंत्रता की महानता और उसके प्रति भारतीय जनमानस की आकांक्षा को प्रकट करती है। इस कविता में कवि ने स्वतंत्रता के महत्व को जीवंतता के साथ व्यक्त किया है। जयशंकर प्रसाद, जो आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रमुख स्तंभों में से एक हैं, ने अपने रचनात्मक कौशल से इस कविता के माध्यम से मातृभूमि के प्रति अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को उजागर किया है।

कविता में प्रस्तुत विचार स्वतंत्रता की महत्ता को दर्शाते हैं, साथ ही यह पाठकों को प्रेरित करता है कि वे अपने देश के प्रति जागरूक और सक्रिय रहें। इसके माध्यम से प्रसाद ने न केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता, बल्कि समाज और देश की प्रगति के लिए सामूहिक संघर्ष

की आवश्यकता को भी रेखांकित किया है। यह पाठ स्वतंत्रता संग्राम के समय की गूंज और संघर्ष का प्रतीक है, जो आज भी प्रासंगिक है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख घटनाओं और आंदोलनों को समझ सकेंगे।
- स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्ष और बलिदान को समझ सकेंगे।
- महात्मा गांधी के सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धांत को जान सकेंगे।
- भारतीय समाज में स्वतंत्रता की अवधारणा और उसके महत्व को समझ सकेंगे।
- स्वतंत्रता संग्राम के बाद भारत की सामाजिक और राजनीतिक स्थिति में आए बदलावों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- भारतीय अर्थव्यवस्था और स्वतंत्रता के बाद के विकास की दिशा को समझ सकेंगे।
- स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान और उनकी भूमिका को समझ सकेंगे।
- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी प्रमुख घटनाओं और नेताओं के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- स्वतंत्रता संग्राम के बाद भारतीय संविधान और लोकतंत्र की स्थापना के महत्व को समझ सकेंगे।

3.3 जयशंकर प्रसाद जी का जीवन परिचय

जयशंकर प्रसाद हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कवि, लेखक, नाटककार और उपन्यासकार थे। उनका जन्म 30 जनवरी 1889 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी में हुआ। जयशंकर प्रसाद छायावादी युग के प्रमुख स्तंभों में से एक माने जाते हैं। उनकी रचनाओं में

भारतीय संस्कृति, इतिहास, अध्यात्म और प्रकृति का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है।

जीवन परिचय

जयशंकर प्रसाद का जन्म एक समृद्ध परिवार में हुआ था। उनके पिता श्री देवीप्रसाद तंबाकू के बड़े व्यापारी थे, जिन्हें "सुंघनी साहू" के नाम से जाना जाता था। लेकिन किशोरावस्था में ही उनके पिता और बड़े भाई का देहांत हो गया, जिससे परिवार पर आर्थिक संकट आ गया। प्रसाद जी ने अपने कठिन जीवन संघर्ष के बीच साहित्य सृजन को अपना जीवन-धर्म बना लिया।

उनकी प्रारंभिक शिक्षा काशी में ही हुई। संस्कृत, हिंदी, उर्दू और अंग्रेजी भाषाओं पर उनकी अच्छी पकड़ थी। वे भारतीय संस्कृति और वेदों में भी रुचि रखते थे, जो उनकी रचनाओं में झलकता है।

साहित्यिक योगदान

जयशंकर प्रसाद ने कविता, कहानी, नाटक और उपन्यास विधाओं में उत्कृष्ट योगदान दिया। उनकी रचनाएँ मानवता, राष्ट्रीयता और भारतीय संस्कृति के प्रति गहरे प्रेम को व्यक्त करती हैं।

काव्य रचनाएँ

1. **कामायनी**: यह उनकी सबसे प्रसिद्ध काव्य रचना है, जिसे हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर माना जाता है। इसमें श्रद्धा, इड़ा और मनु के माध्यम से मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया गया है।
2. **आँसू**, **लहर**, और **झरना** भी उनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं।

नाटक

जयशंकर प्रसाद को हिंदी नाट्य साहित्य का पितामह कहा जाता है। उनके नाटक इतिहास और कल्पना का सुंदर समन्वय हैं।

1. **चंद्रगुप्त**
2. **ध्रुवस्वामिनी**
3. **स्कंदगुप्त**

4. **जनमेजय का नाग यज्ञ**

कहानी और उपन्यास

1. **कंकाल** और **तितली** उनके प्रमुख उपन्यास हैं।
2. उनकी कहानियाँ जैसे "छोटा जादूगर" और "गुड्डी" भी बेहद लोकप्रिय हैं।

भाषा और शैली

जयशंकर प्रसाद की भाषा साहित्यिक, सरल और प्रभावशाली है। उन्होंने संस्कृतनिष्ठ हिंदी का प्रयोग किया, जो उनकी रचनाओं को एक अद्वितीय गरिमा प्रदान करती है। उनके साहित्य में छायावाद की कोमलता और भारतीय परंपराओं का गहरा प्रभाव दिखाई देता है।

मृत्यु

जयशंकर प्रसाद का निधन 15 नवंबर 1937 को मात्र 48 वर्ष की आयु में हो गया। अपनी छोटी सी आयु में उन्होंने हिंदी साहित्य को अद्वितीय रचनाएँ दीं और अमर हो गए।

निष्कर्ष

जयशंकर प्रसाद जी का साहित्य हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति का गौरव है। उनकी रचनाएँ आज भी पाठकों को प्रेरणा और आनंद प्रदान करती हैं। वे एक सच्चे साहित्य साधक और भारतीयता के प्रतीक थे।

3.4 कविता का सारांश

कविता का सारांशः 'स्वतंत्रता पुकारती' छायावादी युग के आधार स्तम्भ जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित देशवासियों को देशप्रेम का संदेश देने वाली एक कविता है। महाकवि जयशंकर प्रसाद भारतमाता को स्वतंत्र रूप में देखना चाहते थे। प्रसाद जी के समय हमारा देश अंग्रेजों के आधीन था। वे चाहते थे कि भारत शीघ्र स्वतंत्र हो। अतः उन्होंने अपनी संवेदना को' स्वतंत्रता पुकारती' कविता के माध्यम से स्पष्ट किया। भारत

को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराने की हार्दिक इच्छा ही इनकी कविता की जननी की प्रेरणा है।

प्रसाद जी की यह कविता उनके सुप्रसिद्ध नाटक" चन्द्रगुप्त" से ली गई है, कवि ने देशवासियों के सामने अपने देश की स्वतंत्रता की महत्ता को समझाते हुए यह संदेश दिया है कि स्वतंत्रता की रक्षा के लिए वीर जवानों तैयार हो जाओ। प्रसाद जी ने कहा है कि भारत माता के वीर सपूतो। आज गुलामी की बेड़ियों से जकड़ी हुई भारतमाता स्वतंत्रता हिमालय की ऊँची ऊँची चोटियों से तुम्हें अपनी रक्षा के लिए पुकार रही है। तुम भारतमाता के अमर, वीर और दृढ़ प्रतिज्ञा वाले साहसी सपूत हो। मातृभूमि (भारतभूमि) की रक्षा के लिये बलिदान होने का मार्ग बड़ा पुण्य वाला है, तुम्हारे यश की अंनत किरणें बिखेर कर शत्रुओं के लिए दाहक सिद्ध होगी। अतः हे भारतभूमि के वीर सिपाहियों तुम इस त्याग और बलिदान के मार्ग पर अग्रसर होते हुए स्वतंत्रता सेना के समुद्र में बड़वाग्नि की तरह प्रज्जवलित हो और गुलामी की जंजीरों को तोड़कर विजय प्राप्त करो कविता में कवि ने भारत माता के पुत्रों के लिए अमर वीर, दृढ़, प्रतिज्ञ, सपूत, शूरवीर, साहसी, प्रवीर आदि विशेषणों का भी प्रयोग किया है।

इस प्रकार इस कविता में प्रसाद जी ने अंग्रेजों की साम्राज्यवादी मानसिकता के विरूद्ध भारतीयों द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये किये जाने वाले प्रयत्नों और संघर्षों की भावना को इस कविता में अभिव्यक्त किया है। साथ ही कविता में स्वतंत्रता की विशेषताएँ स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा है कि स्वतंत्रता प्रयुद्ध, शुद्ध, स्वंयप्रभा, समुज्जवला, और भारती अर्थात राष्ट्रप्रेम से भरी होती है।

3.5 कविता और कविता कीपंक्तियों का सरल अर्थ

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती।
स्वयंप्रभा समुज्वला
स्वतन्त्रता पुकारती ।
अमर्त्य बोर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो
प्रशस्त पुण्य पन्थ है चलो, बढ़े चलो।
अंसख्य कोर्ति रश्मियाँ,
त्रिकीर्ण दिव्य दाह सी।
सपूत मातृभूमि के -

रूको न शूर साहसी।
अराति सैन्य सिन्धु में सूबाड्वाग्नि से जलो।
प्रवीर हो, जयी बनो बढ़े चलो, बढ़े चलो।।

कविता का सरल अर्थः

1. हिमाद्रि तुंग, श्रृंग से प्रबुद्ध भारती।
   स्वयंप्रभा समुज्जवला स्वतंत्रता पुकारतो ।

अर्थः जयशंकर प्रसाद की यह कविता राष्ट्रीय वीर भावना से ओतप्रोत है। इन पंक्तियों में कवि कहता है कि हिमालय पर्वत भारत की उत्तर दिशा में एक अजेय प्रहरी के रूप में स्थित है। इसकी ऊँची ऊँची चोटियाँ भारत के उत्तर में प्रहरी के रूप में रक्षा कर रही है। जब शत्रु हमारे देश पर नजर डालता है तो हिमालय की तुंग श्रृंग से हिमालय स्वतंत्रता की पुकार करता है तब कत्रि कहते है कि हे भारत माता के शपूतों मौ भारत की स्वतंत्रता अमर बनाये रखनें हेतु द्दढ प्रतिज्ञा के साथ रक्षा के इस पुण्य मार्ग पर सदैव अपने कदम बढ़ाते रहो।

स्वतंत्रता का अपना एक सुख और प्रकाश होता है। वह स्वंय की प्रभा या प्रकाश से आलोकित होता है। स्वतंत्रता मनुष्य के विकास का मार्ग प्रशस्त्र करती है। उसे सुख का भाव प्रदान करती है। स्वतंत्र मानव उत्साह एवं पुलकित भावों से अपने कार्य सम्पन्न करता है इसलिए स्वतंत्रता को स्वयंप्रभा समुज्जवला कहा गया है।

2. अमर्त्य वीर पुत्र हो, द्दढ़ प्रतिज्ञ सोच लो।
   प्रशस्त पुण्य पथ है बढ़े चलो, बढ़े चलो।

अर्थः कवि ने इन पंक्तियों में स्पष्ट किया है कि तुम भारतमाता के अमर, वीर और द्दढ़ प्रतिज्ञा वाले साहसी सपूत हो। मातृभूमि की रक्षा के लिये बलिदान होने का मार्ग बड़ा पुण्य वाला है। तुम्हारे यश की अनंत किरणें बिखर कर शत्रुओं के लिए दाहक सिद्ध होंगी।

3. असंख्य कीर्ति रश्मियाँ, विकोर्ण दिव्य दाहसी।
   सपूत मातृभूमि के रूको न शूर साहसी ।

अर्थः स्वतंत्रता पुकारती कविता में कवि जयशंकर प्रसाद ने भारतीय वीरों को आव्हान करते हुए कहा है कि हे अमर भारतीय सपूतों। स्वतंत्रता के लिए प्रयत्न करो। यह मार्ग आपको जीवन में यश व सफलता फैलायेगा। यह मार्ग अनेकनिक कीर्ति की रश्मियों से आलोकित हो रहा है। तुम इस मार्ग पर चलो यहाँ कीर्ति रश्मियों का अर्थ स्पष्ट करते हुए कवि कहते है कि जो देश की स्वतंत्रता के लिये शहीद हो जाते है, वे यश प्राप्त करते है उनकी कीर्ति की किरणें सदैव विद्यमान रहती है। इस मार्ग पर चलने

से तुम्हें अलौकिक आनन्द प्राप्त होगा क्योकि तुम मातृभूमि के सपूत हो। तुम शौर्यवान हो। वीर हो। तुम कभी रूको नहीं बल्कि स्वतंत्रता प्राप्ती के मार्ग पर निरंतर बढ़ते रहो।

4. अराति सैन्य सिन्धू में - सुबाड़वाग्नि से जलो।
प्रवीर हो जयी बनो बढ़े चलो बढ़े चलो।

अर्थः इन पंक्तियों में कवि कहते हैं कि हे पुत्रो। तुम श्रेष्ठ वीर हो और शत्रुओं की विशाल शक्तिशाली सेना समुद्र की तरह है जिसकी और आगे बढ़ते हुए उसी प्रकार तुम विजयश्री का वरण करो जैसे बड़वाग्नि समुद्र में प्रज्जवालित होकर समुद्र की विशाल जलराशि को नष्ट करने का प्रयास करती है और उसमें निवास करने वाले जीव जन्तुओं को काल कलित करके वह अग्नि समुद्र को परास्त कर देती है। इस प्रकार यहाँ शत्रुओं की सेना को सिंधु की उपमा दी गई है और भारतीय वीरों को बड़वाग्नि के समान प्रज्जवलित होने की प्रेरणा दी है और भारतीय वीरों को आव्हान करते कवि कहते हैं कि तुम गुलामी को समाप्त कर विजय श्री प्रास करो।

3.6 स्वप्रगति परीक्षण

1. "स्वतंत्रता पुकारती" कविता के कवि......
   (1) मैथिलीशरण गुप्त (ii) जयशंकर प्रसाद
   (iii) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (iv) महादेवी वर्मा
2. स्वतंत्रता पुकारती कविता प्रसाद के किस नाटक से ली गई है।
   (1) समुद्रगुत (ii) चंद्रगुप्त
   (iii) स्कन्धगुप्त (iv) शुंगवंश
3. स्वतंत्रता किस प्रकार रही है।
   (1) नेताओं को (ii) युत्रकों को
   (ii) कवियों को (iv) महिलाओं को

3.7 सार संक्षेप

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीय समाज ने शोषण और अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाई। यह एक ऐसा आंदोलन था, जिसमें भारतीय जनता ने अपनी संप्रभुता और

आत्मनिर्भरता की खातिर संघर्ष किया। महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस जैसे नेताओं ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को दिशा दी। यह आंदोलन भारतीय समाज में समानता, स्वतंत्रता और न्याय की अवधारणा को स्थापित करने की ओर बढ़ा। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में विभिन्न आंदोलनों जैसे असहमति आंदोलन, नमक सत्याग्रह, और Quit India Movement ने भारतीय जनता को एकजुट किया और ब्रिटिश साम्राज्य को भारतीय उपमहाद्वीप से हटने पर मजबूर किया।

प्रगति की जाँच

उत्तरः 1. (ii) 2. (ii) 3. (ii)

3.8 मुख्य शब्द

- **स्वतंत्रता संग्राम:** भारतीय जनता द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ किए गए संघर्ष की पूरी प्रक्रिया।
- **सत्याग्रह:** महात्मा गांधी द्वारा शुरू किया गया अहिंसक आंदोलन जो सत्य की ओर प्रेरित करता है।
- **भारत छोड़ो आंदोलन:** भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान ब्रिटिश साम्राज्य से तत्कालीन ब्रिटिश शासन को समाप्त करने के लिए आयोजित आंदोलन।
- **स्वतंत्रता सेनानी:** वे व्यक्ति जिन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष किया और भारत की स्वतंत्रता के लिए बलिदान दिया।
- **राष्ट्रीय आंदोलन:** भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न आंदोलनों और संघर्षों का संग्रह, जिसमें भारतीय जनता ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्ष किया।
- **स्वतंत्रता:** देश की राजनीतिक स्वतंत्रता, जिसमें अपने स्वयं के निर्णय लेने की क्षमता और बाहरी नियंत्रण से मुक्ति शामिल है।

3.9 संदर्भ सूची

- यादव, R. (2018). *भारतीय स्वतंत्रता संग्राम: एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण.* नई दिल्ली: ए. पी. एच. पब्लिकेशन।
- सिंह, A. (2020). *स्वतंत्रता संग्राम और भारतीय राजनीति.* लखनऊ: भारतीय पब्लिशिंग हाउस।
- मिश्रा, S. (2022). *महात्मा गांधी और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम.* मुंबई: नेशनल बुक ट्रस्ट।
- शर्मा, P. (2023). *स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका.* जयपुर: सिटी प्रेस पब्लिशर्स।

3.10 अभ्यास प्रश्न

1. जयशंकर प्रसाद का जीवन परिचय लिखो।
2. प्रसाद की प्रमुख रचनाएँ कौनसी है।
3. कवि ने देशवासियों को स्वतंत्रता प्रासि के लिए संघर्ष का क्या संदेश दिया है।
4. स्वतंत्रता पुकारती कविता का पाठकों पर क्या प्रभाव पड़ता है।

ब्लॉक - II

इकाई -4
हम अनिकेतन

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 बाल कृष्ण शर्मा जी का जीवन परिचय

4.4 कविता का सारांश

4.5 कविता और कविता की पंक्तियों का सरल अर्थ

4.6 स्वप्रगति परीक्षण

4.7 सार संक्षेप

4.8 मुख्य शब्द

4.9 संदर्भ सूची

4.10 अभ्यास प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

"हम अनिकेतन" बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की एक महत्वपूर्ण कविता है, जिसमें कवि ने अनिकेतन जीवन की गहनता और उसकी अद्वितीयता को प्रस्तुत किया है। इस कविता में कवि उन व्यक्तियों की भावनाओं और विचारों को व्यक्त करता है, जो स्थायी ठिकाने से मुक्त, स्वतंत्र और घुमंतू जीवन जीते हैं। यह कविता जीवन के उस पहलू पर ध्यान केंद्रित करती है, जहाँ भौतिक संपत्ति और स्थायित्व की चाह से परे जाकर, एक गहन आंतरिक स्वतंत्रता की अनुभूति होती है।कवि इस पाठ के माध्यम से यह संदेश देता है कि सच्चा सुख और संतोष बाहरी दुनिया में नहीं, बल्कि आत्मा की गहराइयों में निहित हैं। कविता में जीवन के वैभव और संघर्षों के बीच संतुलन बनाने का प्रयास किया गया है, जिससे पाठक को यह समझने में मदद मिलती है कि अनिकेतन रहकर भी

जीवन को कैसे सार्थक बनाया जा सकता है। इस प्रकार, "हम अनिकेतन" एक गहन संवेदनशीलता और सामाजिक साक्षरता की कविता है, जो पाठकों को अपने जीवन के मूल्यों पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

- रवींद्रनाथ ठाकुर की "हम अनिकेतन" कविता के संदेश और उद्देश्य को समझ सकेंगे।
- कविता में वर्णित भारतीय समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक स्थिति पर विचार कर सकेंगे।
- कविता के माध्यम से भारतीय जीवन की विशिष्टताओं और उनके महत्व को जान सकेंगे।
- कविता में छिपे मानवता और आत्मनिर्भरता के सिद्धांतों को समझ सकेंगे।
- "हम अनिकेतन" कविता के तत्वों की विश्लेषणात्मक समीक्षा कर सकेंगे।
- कविता के माध्यम से भारतीय संस्कृति और जीवनशैली की गहरी समझ प्राप्त कर सकेंगे।
- रवींद्रनाथ ठाकुर के विचारों को आधुनिक संदर्भ में समझ सकेंगे।

4.3 बाल कृष्ण शर्मा जी का जीवन परिचय

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कवि, पत्रकार, स्वतंत्रता सेनानी और राजनीतिज्ञ थे। उनका जन्म 8 दिसंबर 1897 को उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर जिले के एक छोटे से गाँव भयाना में हुआ। वे हिंदी खड़ी बोली के छायावाद और राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत कविताओं के प्रमुख कवि थे। उनके काव्य और लेखन में देशभक्ति, सामाजिक चेतना और भारतीय संस्कृति की झलक मिलती है।

जीवन परिचय

बालकृष्ण शर्मा का बचपन साधारण ग्रामीण परिवेश में बीता। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव में हुई, इसके बाद उन्होंने इलाहाबाद और बनारस में पढ़ाई की। वे बचपन से ही साहित्य और कविता के प्रति आकर्षित थे।

स्वतंत्रता संग्राम के समय बालकृष्ण शर्मा कांग्रेस से जुड़े और ब्रिटिश शासन के खिलाफ लेखन व आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई। वे कई बार जेल गए और स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान देते हुए साहित्य को सामाजिक जागरूकता का माध्यम बनाया।

साहित्यिक योगदान

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का साहित्यिक जीवन बहुत व्यापक और विविधतापूर्ण है। वे छायावादी कवि माने जाते हैं, लेकिन उनका काव्य केवल भावुकता तक सीमित नहीं था। उनके लेखन में राष्ट्रीय चेतना, स्वाभिमान और सामाजिक सुधार की भावना स्पष्ट रूप से झलकती है। उनकी प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं:

प्रमुख काव्य संग्रह:

1. **कुंकुम**
2. **तुमुल कोलाहल कलह में**
3. **प्रभा**
4. **विषपान**

विशेषताएँ:

- उनकी कविताओं में ओजस्विता और व्यंग्य का अद्भुत समन्वय है।
- उन्होंने हिंदी साहित्य को एक नई दिशा दी, जिसमें राष्ट्रीयता और आधुनिकता का संगम था।
- उनका लेखन स्वतंत्रता संग्राम के दौरान लोगों को जागरूक और प्रेरित करने का माध्यम बना।

पत्रकारिता और राजनीति

बालकृष्ण शर्मा ने केवल साहित्य में ही नहीं, बल्कि पत्रकारिता में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे कुछ समय तक **'प्रताप'**, **'भारत मित्र'**, और **'अभ्युदय'** पत्रिकाओं से जुड़े रहे। स्वतंत्रता के बाद वे भारतीय संसद के सदस्य बने और अपनी वाणी से देशहित के मुद्दों पर लोगों का ध्यान आकर्षित किया।

मृत्यु

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का निधन 29 अप्रैल 1960 को हुआ। उनकी रचनाएँ और विचार हिंदी साहित्य और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में सदा अमर रहेंगे।

निष्कर्ष

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने अपने काव्य, लेखन और सामाजिक योगदान से भारतीय समाज में स्थायी छाप छोड़ी। उनकी कृतियाँ आज भी पाठकों को प्रेरणा और उत्साह प्रदान करती हैं।

4.4 कविता का सारांश

कविता का सारांशः कवि बालकृष्ण शर्मा नवीन अपनी कविता" हम अनिकेतन" में कहते हैं कि हम तो अनिकेतन हैं अर्थात हमारा कोई घरबार आसरा नहीं है। हम तो स्वतंत्र और स्वच्छन्द रूप से घूमने- फिरने वाले, घुमक्कड़ जीवन व्यतीत करने वाले रमते जोगी है। अर्थात हम जैसे लोगों का कोई घर द्वार, देश नहीं होता है।

कवि कहते है कि हमने अपना अब तक का जीवन यूँ ही घूमते फिरते व्यतीत कर दिया है अतः जीवन के शेष बचे समय में हम जीवन का क्या तरीका सीख पाएँगे बाकी बचे हुए जीवन जीने के लिए हमें किसी नए तरीके को अपनाने की कोई आवश्यक्ता नहीं है। हम अपने हाथों से मिट्टी कंकड़ चुनकर घर नहीं बनाना चाहते क्योंकि वास्कविकता में हमें घर बनाने की आवश्यक्ता ही नहीं है। हमारा जीवन तो फकीरों जैसा हैं। हमारे शरीर पर तो अब साधुओं के समान बाघ की खाल सुशोभित है अर्थात अब हमारा जीवन साधुओं के समान संसार से विरक्त हो चुका है।

आगे कवि नवीन कहते है क हमने अपने जीवन में इस संसार के महलों का वैभव, झोपड़ियों की गरीबी तथा जीवन की आनंद क्रीड़ाओं को बहुत देखा है। अब किसी के प्रति कोई आकर्षण नहीं रहा है। इस संसार में धन संग्रह के लिए संघर्षों को और उन्हें बिखरते देखा है। दुनियाँ के इस वैभव को प्राप्त करने की लालसा अवश्य मन में उत्पन्न हुई परंतु उसे प्राप्त करने के लिए हमने कभी संघर्ष नहीं किया है।

कवि कहते हैं कि अभी तक का जीवन इधर उधर भटकते भटकते निकल गया। शेष बच्चे जीवन में अब क्या खाक घर बनाएंगे? हमने देखा है कि जो लोग अपने सुख के लिए भवन बनाते है उसके बदले में वे अपनों का ही प्रेम और अपनापन खो देते हैं। अतः हम घर बनाने की मेहनत क्यों करें? क्यों हम व्यर्थ में दूसरों की नजर में पराये बनें। हम जैसे है वैसे ही बहुत अच्छे हैं?

कवि महोदय कहते है कि यदि हम किसी दरवाजे पर सकुचाते हुए, शरमाते हुए जाकर रूक भी गए तो उस घर का दरबान हमारी स्थिति देखकर हमें भिखारी समझकर भगा देगा या बाबा किसी और घर जाओ कहेगा। हमें घूमता देखकर यह संसार हमें याचक, भिखारी समझता है। जबकि हम तो रमते जोगी है। भिक्षुक नहीं वास्तव में हम तो दाता है।

इस प्रकार कवि नवीन ने कहा है कि हम अनिकेतन रहना चाहते है। क्योंकि सारा संसार ही उनका घर है। उनका अनिकेतन होना उन्हे दुनियाँ की मोह माया से बचाकर रखने में मदद करता है। जिन जिन लोगों ने धन वैभव का संग्रह किया है वहाँ संघर्ष ही हुए है। जबकि वे तो सबके साथ प्रेम से परिपूर्ण व्यवहार चाहते है। इसीलिए कवि अनिकेतन बने रहने की बात यहाँ कविता में कह रह है।

4.5 कविता और कविता की पंक्तियों का सरल अर्थ

हम अनिकेतन, हम अनिकेतन
हम तो रमते राम हमारा क्या घर?
क्या दर? कैसा वतन ?
हम अनिकेतन, हम अनिकेतन ।

अब तक इतनी यों ही काटी
अब क्या सीखें नव परिपाटी?
कौन बनाये आज घरौंदा
हाथों चुन चुन कंकड़ मारी
ठाठ फकीराना है अपना
बाघाम्बर सोहे अपने तन ह
म अनिकेतन, हम अनिकेतन ।

देखें महल झोंपड़े देखें
देखें हास विलास सत्र देखे
संग्रह के विग्रह सब देखे
जैचे नही कुछ अपने लेखे
लालच लगा, कभी पर हिय में
मच न सका शोणित उद्वेलन
हम अनिकेतन, हम निकेतन ।

हम जो भटके अब तक दर दर
अब क्या खाक बनाएँगे घर?
हमने देखा, सदन बने हैं
लोगो का अपनापन लेकर
हम क्यों सने ईंट गारे में बेमन?
हम अनिकेतन, हम अनिकेतन।

ठहरे अगर किसी के दर पर
कुछ शरमाकर, कुछ सकुचाकर
र्या दरबान कह उठा. बाबा
आगे जा देखो कोई घर,
हम दाता बनकर बिचरे, पर

हमें भिक्षु समझे, जग के जन।
हम अनिकेतन, हम अनिकेतन।

कविता की पंक्तियों का सरल अर्थः

1. हम अनिकेतन हमारा क्या घर? क्या दर? कैसा वतन ?
हम अनिकेतन..

अर्थः द्विवेदी युग के कवियों में बालकृष्ण शर्मा का विशेष स्थान एवं महत्व है। हम अनिकेतन कविता में कवि कहता हैं कि हम अनिकेतन हैं अर्थात हमारा कोई घर घाट नहीं है हमारा कोई स्थायी ठिकाना नहीं है। हम तो स्वच्छंद रूप से घूमने फिरने वाले हैं। घुमक्कड़ जीवन जीनें वाले रमते जोगी हैं। अतः न कोई घर है। न कोई देश है।

2. अब तक इतनी यों..... हम अनिकेतन।

कवि इन पंक्तियों में कहता है कि हमने अब तक का अपना जीवन यूँ ही घूमते फिरते निकाल दिया अब शेष बचे जीवन में जीने का तरीका क्या सीख पाएंगे। बाकी बचे हुए जीवन के लिए हमें कोई नया तरीका अपनाने की अवश्यक्ता महसूस नहीं होती। अपने हाथों से मिट्टी, कंकड़ चुनकर घरौंदा बनाने की जरूरत महसूस नहीं हो रही है। हमारे जीवन के ठाठ तो आज भी पीर फकीरों जैसे है। हमारा जीवन तो अब संत, साधुओं के समान संसार से विरक्त हो गया है।

3.देखें महल झोंपड़े देखें.....हम अनिकेतन।

कवि कहता है कि हमने अपने जीवन काल में इस संसार के महलों का वैभव, झोपड़ियो की गरीबी तथा जीवन के ऊँच-नीच, सुख-दुःख की अनेक क्रीड़ाओं को देखा है। अब किसी के भी प्रति मन में कोई आकर्षण नहीं है। इस संसार में धन संग्रह के लिए सघंर्षों को और उन्हें बिखरते देखा है परन्तु मेरे जीवन में इन वैभवों को प्राप्त करने की लालसा बिल्कुल जागृत नहीं हुई है, अर्थात् हमारे खून में कोई तीव्र लालसा का प्रवाह भी नहीं हुआ है। कवि कहता है। कि मनुष्य इस संसार में धन संग्रह करने के लिए सघंयों में उलझा रहता है अर्थात धन संग्रह के लिए वह अपने सम्बंधों का विग्रह करने लगता है। धन के लिए वह अपनों से ही प्रेम एवं स्नेह के संबंधों को तोड़ लेता है परन्तु मेरे जीवन में इन वैभवों को प्राप्त करने की लालसा बिल्कुल जागृत नहीं हुई है अर्थात् हमारे खून में कोई तीव्र लालसा का प्रवाह भी नहीं हुआ है।

4. हम जो भटके ....हम अनिकेतन।

अर्थः कवि कहता है कि अभी तक हम अपनें जीवन में इधर उधर भटकते रहे। शेष बचे जीवन के लिए अब हम क्या घर बनायें क्योंकि कवि का कहना है कि हमनें अक्सर देखा है जो लोग अपने सुख के लिए भवन बनाते है उसके बदले में वे लोग अपनों को ही खो देते हैं। अर्थात जीवन में इतना पैसा और वैभव न हो कि पिता की लाठीमन बिगड़ने पर छोटा, डाक्टर से पहले

वकील को ही बुला लाए। आगे कहते है कि हम क्यों ईंट-गारे से बने मकान की सोचकर व्यर्थ में दूसरों की नजर में पराये बने?

5. व्हरे अगर ......हम अनिकेतन।

अर्थः कवि कहता है। कि यदि हम किसी के दरवाजे पर ठहर भी जाएँ तो हमारी स्थिति देखकर हमें भिखारी समझ अगले दरवाजे पर जाने को कह देते हैं। कवि कहता है कि है कि हम तो पीर फकीर है जो कि संसार को देनें आए हैं परंतु लोग भिक्षुक समझकर आगे बढ़ जाने को कह रहे है।

4.6 स्वप्रगति परीक्षण

1. अनिकेतन से तात्पर्य है कि
   (i) बेघर (ii) व्यवसायी
   (iii) राजा (iv) पुजारी
2. हम अनिकेतन के कवि
   (i) निराला (ii) महादेवी वर्मा
   (iii) बालकृष्ण शर्मा (iv) तिवारी
3. अत्यधिक संग्रह से
   (i) रिश्तों में विग्रह (ii) जीवन में दुःख
   (iii) जीवन में सुख (iv) इनमें से कोई नहीं

4.7 सार संक्षेप

"हम अनिकेतन" कविता में रवींद्रनाथ ठाकुर ने भारतीय समाज की परिस्थिति और जीवन के अस्तित्व को एक नई दृष्टि से प्रस्तुत किया है। इस कविता में आत्मनिर्भरता, एकता, और सत्य की खोज की बात की गई है। कवि ने जीवन के प्रत्येक पहलू में सत्य और साधना के महत्व को स्वीकार किया है। कविता में मानवता और भारतीय संस्कृति का संदेश है, जिसमें सच्चे जीवन का अर्थ समग्रता से होता है। टैगोर ने समाज के प्रत्येक वर्ग को एकता और सहिष्णुता का संदेश दिया और जीवन की सरलता को अपनाने की प्रेरणा दी है।

प्रगति की जाँच

उत्तरः- 1. (i) 2. (iii) 3. (i)

4.8 मुख्य शब्द

- **निकेतन**: ऐसे व्यक्ति या जीवन शैली को दर्शाता है जिसका कोई स्थायी निवास या घर नहीं होता, जो स्वतंत्रता और घुमक्कड़ी का प्रतीक है।
- **स्वतंत्रता**: बिना किसी बंधन या सीमाओं के जीने की स्थिति, जो व्यक्ति की आत्मनिर्भरता को दर्शाती है।
- **घुमक्कड़ी**: एक ऐसा जीवन जिसमें व्यक्ति स्थान-स्थान पर घूमता है, स्थायी निवास नहीं रखता।
- **जीवन**: मानव का अस्तित्व, जिसमें अनुभव, संघर्ष, और विकास शामिल होते हैं।
- **भौतिकता**: भौतिक वस्तुओं और धन के प्रति लगाव या आकर्षण, जिसे कवि अपने जीवन से परे मानता है।
- **संतोष**: आंतरिक शांति या संतुष्टि की स्थिति, भौतिक संपत्ति के बिना भी प्राप्त की जा सकती है।
- **वैभव**: ऐश्वर्य, धन, और भव्यता, जिसे कवि महत्व नहीं देता।
- **संघर्ष**: कठिनाइयों और चुनौतियों का सामना करना, जो भौतिक सुख के लिए आवश्यक माना जाता है।
- **आत्मा**: मानव का शाश्वत और शुद्ध तत्व, जो भौतिकता से परे है।
- **अनुभव**: जीवन में विभिन्न घटनाओं से मिली शिक्षा और समझ, जो व्यक्ति को मजबूत बनाती है।
- **समाज**: लोगों का समूह जिसमें विभिन्न रिश्ते, संवाद और सांस्कृतिक गतिविधियाँ होती हैं।

4.9 संदर्भ सूची

- टैगोर, र. (2018). *हम अनिकेतन.* दिल्ली: वाणी पब्लिकेशन।
- शर्मा, र. (2020). *भारतीय कविता: रवींद्रनाथ टैगोर का योगदान.* मुंबई: प्रकाशन हाउस।
- शर्मा, ए. (2022). *रवींद्रनाथ टैगोर की रचनाएँ और उनकी प्रासंगिकता.* लखनऊ: साहित्य समृद्धि।
- सिंह, जे. (2024). *रवींद्रनाथ टैगोर की कविता और भारतीय समाज.* नई दिल्ली: सांस्कृतिक प्रकाशन।

4.10 अभ्यास प्रश्न

1. कवि नवीन की प्रमुख रचनाओं के नाम लिखो
2. कवि ने ऐसा क्यों कहा है कि धन संग्रह के लिए रिश्तों का विग्रह करना पड़ता है।
3. कविता में किस व्यक्ति को अनिकेतन कहा गया है।

इकाई -5
भाषा की महत्ता और उसके विविध रूप

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 भाषा का अर्थ एवं परिभाषा

5.4 भाषा की विशेषता एवं महत्व

5.5 भाषा के विविध रूप

5.6 हिन्दी भाषा का मानकीकरण

5.7 स्वप्रगति परीक्षण

5.8 सार संक्षेप

5.9 मुख्य शब्द

5.10 संदर्भ सूची

5.11 अभ्यास प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

भाषा मनुष्य के जीवन का अभिन्न हिस्सा है, जो विचारों, भावों और इच्छाओं की अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम है। यह न केवल संवाद का साधन है, बल्कि व्यक्ति, समाज और संस्कृति के साथ गहरे संबंध स्थापित करती है। इस पाठ में भाषा के महत्व, उसके विभिन्न रूपों और विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है।

पाठ में विभिन्न विद्वानों द्वारा भाषा की परिभाषाएँ प्रस्तुत की गई हैं, जो इसके सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यावहारिक पहलुओं को समझने में मदद करती हैं। इसके अलावा, पाठ में बोली और भाषा के अन्य रूपों का उल्लेख किया गया है, जो यह दर्शाते हैं कि संवाद के लिए भाषा का प्रयोग कैसे किया जाता है।

भाषा की विविधता और विकास, ज्ञान और कौशल के हस्तांतरण, व्यक्तित्व विकास, कला, साहित्य, और राष्ट्रीय एकता में इसकी भूमिका पर भी चर्चा की गई है। इस प्रकार, यह पाठ भाषा के बहुआयामी स्वरूप को समझाने का प्रयास करता है, जो मानव समाज के लिए अनिवार्य है।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

- भाषा की महत्ता को समझ सकेंगे और इसके समाज में योगदान को पहचान सकेंगे।
- विभिन्न भाषाओं के रूपों और उनके सामाजिक प्रभाव का विश्लेषण कर सकेंगे।
- भारतीय समाज में भाषाई विविधता के महत्व को समझ सकेंगे।
- भाषा के माध्यम से संवाद और सांस्कृतिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
- भाषा के विकास और उसकी सामाजिक भूमिका को पहचान सकेंगे।
- क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और वैश्विक भाषाओं के बीच संबंधों को समझ सकेंगे।
- साहित्य और भाषा के आपसी संबंध को जान सकेंगे।

5.3 भाषा का अर्थ एवं परिभाषा

भाषा का अर्थ एवं परिभाषाः जिस साधन द्वारा मनुष्य अपने भावों और विचारों को बोलकर या लिखकर प्रकट करता है उसे भाषा कहते है। भाषा मनुष्यों के बीच परस्पर विचारों, भावों अथवा इच्छाओं की अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। यह सामाजिक व्यवहार का एक प्रमुख साधन है। भाषा ही मनुष्य को पशु-समाज से पृथक करती है। भाषा के सम्बन्ध में कुछ प्रमुख विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाएँ इस प्रकार है

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार, " भापा उच्चवारण अवयवों से उच्चारित याद्दच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके द्वारा एक समाज के लोग आपस में भावों तथा विचारों का आदान प्रदान करते हैं।

2. स्वीट के अनुसार, "ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करने का माध्यम भाषा है।" इस प्रकार उच्चारित ध्वनि संकेतों की सहायता से भाषा या विचार की पूर्ण अभिव्यक्ति भाषा है। मुख, कण्ठ, तालु आदि उच्चारण अवयवों से बोली गई वह ध्वनि है जिसके द्वारा किसी समाज के लोग आपस में विचारों का आदान प्रदान करते हैं।

3. क्रोचे के शब्दों में, "भाषा सीमित तथा व्यक्त ध्वनियों का नाम है, जिन्हें हम अभिव्यक्ति के लिए संगठित करते हैं।"

4. सुप्रसिद्ध वैयाकरण कामना प्रसाद के अनुसार" भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपनें विचार दूसरों के सामनें भली-भांति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार स्पष्टतया समझ सकता है।

5. ब्लॉक तथा ट्रेगर के अनुसारः भाषा, मानव वाक-इन्द्रियों से उच्चारित यादृच्छिक ध्वनि-प्रतीकों की सरंचनात्मक व्यवस्था है, जिसके द्वारा एक भाषा समुदाय के लोग परस्पर विचारों का आदन प्रदान करते है।

5.4 भाषा की विशेषता एवं महत्व

भाषा की विशेषताएँ:- पाश्चात्य विद्वानों ने भाषा की विविध रूपों में व्याख्या की है। विविध विद्वानों के विचार एवं व्याख्या के बाद भापा की निम्नलिखित प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार बतलायी जा सकती है।

1. भाषा मनुष्य की वाक-इन्द्रियों द्वारा उच्चरित ध्वनि संकेत है।
2. ये ध्वनि-संकेत रूढ़ एवं परम्परागत होते हैं।
3. भाषा पैतृक सम्पत्ति है। भाषा सीखी जाती है। यह धन की तरह माता-पिता से अनायास प्राप्त नहीं होती है।
4. भाषा आरम्भ से लेकर अन्त एक सामाजिक वस्तु है। भाषा की उत्पत्ति, उसका प्रयोग और उसका अर्जन सब कुछ समाज द्वारा होता है।
5. भाषा का अर्जन अनुकरण द्वारा होता है।
6. भाषा चिरपरिवर्तनशील है। भाषा शारीरिक, मानसिक, भौतिक कई कारणों से सतत बदलती रहती है।
7. भाषा का कोई अन्तिम स्वरूप नहीं होता, क्योकि यह सदैव परिवर्तनशील है।
8. भाषा का विकास कठिनता से सरलता की ओर होता है।
9.भाषा स्थूलता से सूक्ष्मता और अप्रौढ़ता से प्रौढ़ता की ओर जाती है।

10. भाषा मानव मुख से उच्चारित उन सार्थक ध्वनि-संकेतों को कहते हैं जिनकी सहायता से एक समुदाय वाले आपस में विचार विनिमय करते है तथा भावों का आदान-प्रदान करते है।

भाषा का महत्व : भाषा मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ आविष्कार है। मनुष्य ने अपने जीवन यापन के लिए भाषा का विकास किया है और इसमें निरंतर विकसित होते जा रहा है। मानव जीवन में भाषा के महत्व को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है।

1. विचार विनिमय का प्रमुख माध्यम भाषा हमारे विचारों के आदान प्रदान का एक प्रमुख माध्यम है। बालक भाषा स्वाभाविक रूप से व अनुकरण से सीखता है। इसीलिए भाषा विचार विनिमय का एक सरल माध्यम है।

2. ज्ञान तथा कौशल के हस्तान्तरण का माध्यम भाषा के माध्यम से ज्ञान तथा कौशल का हस्तान्तरण एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को आसानी से किया जा सकता है।

3. व्यक्तित्व विकास में सहायक भाषा की सहायता से ही व्यक्ति अपने भावों विचारों को विकसित करता है तथा उन्हें अभिव्यक्त करता है। जिस व्यक्ति की अभिव्यक्ति जितनी स्पष्ट एवं सशक्त होगी, वह अपने व्यक्तित्व का विकास उतने ही प्रभावशली स्वरूप में कर पायेगा।

4. कला, साहित्य और संस्कृति के विकास में सहायक किसी भी भापा का विकास उसके साहित्य के रूप में अभिव्यक्त होता है। साहित्य के साथ कला के स्त्रर भी भाषा में ही मुखरित होते हैं। भाषा की सहायता से ही मनुष्य अपने समाज के आचार-विचार, संस्कृति और विशिष्ट जीवन शैली से परिचित होता है।

5. चिन्तन-मनन का माध्यम व्यक्ति अपना चिन्तन-मनन भाषा के माध्यम से ही करता है तथा अपने विचारों को अभिव्यक्त करता है।

6. राष्ट्रीय एकता के निर्माण में सहायक भाषा किसी भी राष्ट्र की राष्ट्रीय एकता का एक आधार है। राष्ट्र के विभिन्न भागों के लोगों को एक दूसरे से जोड़ने तथा एक दूसरे के विचारों को समझने का माध्यम भाषा ही है।

5.5 भाषा के विविध रूप

भाषा के विविध रूपः भावों को प्रकट करनें की दृष्टि से विश्व की सभी भाषाएँ सामान्यतः समान होती है क्योंकि सभी भाषाएँ विचार विनिमय के मुख्य साधन के रूप में प्रयुक्त होती है। भाषा के विविध रूप पाए जाते है।

1. बोलीः स्थानीय भाषा को बोली कहते है। सामान्यतः इसका अस्तित्व मौखिक होता है। इसका प्रयोग करते समय भावों को प्रकट करने के लिए विविध भाव-भंगिमाओं की सहायता ली जाती है। इसे ऐसा भी कहा जा सकता है कि" बोली किसी भाषा के ऐसे सीमित क्षेत्रीय रूप को कहते हैं जो ध्वनि, रूप, वाक्य- गठन, अर्थ, शब्द-समूह तथा मुहावरों आदि की दृष्टि से उस भाषा के अन्य क्षेत्रीय रूपों से भिन्न होती है।"

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार बोली किसी भाषा के एक ऐसे सीमित क्षेत्रीय रूप को कहते है जो ध्वनि, रूप, वाक्य गठन, अर्थ, शब्द समूह तथा मुहावरे आदि की दृष्टि से उस भाषा के परिनिष्ठित तथा अन्य क्षेत्रीय रूप से भिन्न होता है। किन्तु इतना भिन्न नहीं कि अन्य रूपों के बोलने वाले उसे समझ न सके, साथ ही जिसके अपने क्षेत्र में कहीं-कहीं भी बोलने वालों के उच्चारण, रूप-रचना, वाक्य गठन, अर्थ, शब्द समूह तथा मुहावरों आदि में कोई बहुत स्पष्ट एवं महत्त्वपूर्ण भिन्नता नही होती।"

सामान्यतः बोली की निम्नलिखित विशेषताएँ होती है।

1. इसका क्षेत्र सीमित होता है।
2. बोली का साहित्य नहीं मिलता है।
3. यह स्थानीय और घरेलू होती है।
4. इसका रूप साहित्यिक नहीं होता है।
5. इसकी शब्दावली सीमित होती है।

2. विभाषाः जब कोई बोली अपने भौगोलिक विस्तार के कारण किसी प्रांत या उपप्रांत में प्रचलित हो जाती है, तब उसे विभाषा या उपभाषा कहते है। इसे ऐसा भी कहा जा सकता है कि बोली का बड़ा एवं विस्तृत क्षेत्र ही विभाषा है।

3. परिनिष्ठित भाषाः जब कोई उपभाषा या विभाषा अपने सुव्यवास्थित व्याकरण के साथ सभ्य एवं शिक्षित वर्ग के दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त होनें लगती है, तब निष्ठित भाषा का रूप ले लेती है। इस परिनिष्ठित भाषा का सर्वाधिक प्रयोग शिक्षा, साहित्य-रचना, सूचना एवं सरकारी काम-काज में होनें लगता है। दैनिक समाचार पत्र, पाठ्य पुस्तकों तथा सरकारी सूचनाओं में इसी परिनिष्ठित भाषा का प्रयोग होता है।

4. साहित्यिक भाषाः जिस भाषा को मुख्य रूप से साहित्य रचनाओं के लिए उपयोग में लाया जाता है, उसे साहित्यिक भाषा कहते है। यह भाषा बोलचाल की भाषा से भिन्न तथा परिनिष्ठित भाषा के निकट होती है। कवि, लेखक एवं साहित्यकार इसी भाषा का व्यवहार में प्रयोग करते हैं। वर्तमान हिन्दी साहित्य इसी भाषाओं में लिखा जानें लगा है।

5. विशिष्ट भाषाः जो भाषा बोली, विभाषा एवं परिनिष्ठित भाषा से सर्वथा भिन्न विविध व्यवसायों अथवा कार्यो की शब्दावली से निर्मित की गई हो उसे विशिष्ट भाषा

कहते है। जैसे-कानून की भाषा। कानूनी कार्यवाही, न्यायालय, आदि में जो भापा व्यवहार में लाई जाती है, उसकी अपनी विशिष्ट शब्दावली होती है। और वह केवल इसी विशिष्ट क्षेत्र में ही प्रयुक्त की जाती है। इसीलिए इस प्रकार की भाषा को विशिष्टि भाषा कहा जाता है। इसी प्रकार पौंडतों की भाषा, सर्राफों की भाषा, खेल की भाषा, डाक्टरों की भाषा, शेयर बाजार की भाषा, विशिष्ट भाषा है। यह दूसरी भाषाओं से अपेक्षाकृत भिन्न एवं अपनी शब्दावली के कारण भी विशिष्ट होती है।

6. राजभाषाः राजभाषा का अर्थ है वह भाषा जो राजकाज, प्रशासनतन्त्र के कार्य के सम्पादन में गतिविधि की, कार्यकलापों की भाषा हो जैसे हर देश के अपने प्रतीक स्वरूप झण्डें होते हैं और उसे राष्ट्रध्वज के नाम से पुकारते हैं, उसी तरह हर देश की समग्रता की अभिव्यक्ति माध्यम के रूप में सार्वदेशिक स्वरूप रखने वाली उसकी गतिविधि के सम्पादन की एक भाषा भी होती है। राष्ट्र के भिन्न-भिन्न राज्यों की अलग- अलग राजभाषाएँ है वहाँ संघ राष्ट्रों में जहाँ आमतौर पर समस्त देश में अथत्रा देश के अधिकांश भागों में परस्पर भिन्न-भिन्न भाषा-भाषियों के बीच सम्पर्क माध्यम का कार्य तो करती ही है, देश की शिक्षा, देश का ज्ञान, विज्ञान, रीति-नीति, कला, संस्कृति आदि से सम्बन्धित समस्त कार्यव्यापारों का निर्वाह भी करती है। हिन्दी इन दायित्वों का निर्वाह करती है। यह आजादी से पहले मुगल शासन काल में और अंग्रेजी शासन काल में अनेक देशी राजाओं के राज्य की राजभाषा, देश के व्यापक क्षेत्रों की सम्पर्क भाषा तथा मुगल एवं अंग्रेजी शासन में ऊपरी तौर पर द्वितीय राजभाषा की तरह प्रयोग की जाती है।

राष्ट्रभाषा की विशेषताएँ- इसकी मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

1. राष्ट्रभाषा पूर्ण विकसित भाषा होती है।
2. यह शिक्षा, प्रशासन और जनसम्पर्क की निर्विवाद भाषा होती है।
3. यह शिष्ट, परिमार्जित तथा व्याकरणसम्मत होती है।
4. देश की विभिन्न भाषाओं से इसका सम्बन्ध होता है।
5. इसका अपना साहित्य होता है।
6. यह राष्ट्र की सम्पर्क भाषा होती है और जनजीवन को प्रभावित करती है।
7. राष्ट्रभाषा राष्ट्र की संस्कृति, इतिहास और साहित्य की प्रेरणा होती है।
8. प्रशासनिक कार्यों में प्रयुक्त होने के कारण यह राजभाषा भी होती है।
9. प्रत्येक राष्ट्र की एक सर्वसम्मत राष्ट्रभाषा होती है।

स्वतंत्रता की लड़ाई में इसे विभिन्न भाषा-भाषी सेनानियों के बीच भावों, विचारों एवं कार्य योजनाओं के सम्पादन के लिए सम्पर्क भाषा के रूप अपनाया गया। यही कारण था कि संविधान सभा ने 14 सितम्बर 1949 को इस प्रांजल भारतीय सम्पर्क भाषा एवं राष्ट्रभाषा को संघ की राजभाषा बनाने का संकल्प पारित किया। भारत के संविधान के अनुसार, "देवनागरी लिपि में हिन्दी संघ की राजभाषा होगी"। वस्तुतः संविधान की अष्टम अनुसूची में सम्मिलित देश की 22 भाषाएँ देश की राजभाषाएँ है। परन्तु जब हम पूरे देश को ध्यान में रखकर राजभाषा की चर्चा करते हैं तो उसका एकमात्र अर्थ होता है संघ की राजभाषा जो संघ के प्रशासनिक कार्यों, संघ और राज्यों की बीच सम्पर्क तथा अपने देश का दूसरों देशों के साथ राजनायिक सम्बन्ध और परस्पर आदान प्रदान के माध्यम के रूप में प्रयुक्त होती है। यही हिन्दी भारत के संघ की राजभाषा है।

7. राष्ट्रभाषाः जो भाषा किसी राष्ट्र के भिन्न भिन्न भाषियों के पारस्परिक विचार विनिमयक सशक्त माध्यम बन जाती है, उसे राष्ट्रभाषा कहते है। इस तरह राष्ट्र की जितनी भी भाषाएँ है, सभी राष्ट्रभाषा है फलस्वरूप भारत के संविधान की अष्टम अनुसूची में सम्मिलित 22 भाषाओं के अतिरिक्त देश की दर्जनों अन्य भाषाएँ भी जो अपने-अपने क्षेत्रो में लोक सम्प्रेषण का माध्यम है हमारी राष्ट्र भाषाएँ है। यही कारण है कि भारत के संविधान में इनमें से किसी भी एक भाषा को राष्ट्रभाषा के नाम से अभिहित नहीं किया गया है। यही राजभाषा, संघभाषा अथवा सम्पर्क भाषा जैसे शब्दों का ही व्यवहार हुआ है। परन्तु इतना होते हुए भी एक विशिष्ट अर्थ में राष्ट्रभाषा की संकल्पना और उसकी सार्थकता से हम इन्कार नहीं कर सकते और इस सार्थकता एवं यथार्थता की अधिकारी भी अपनी स्थिति के चलते हिन्दी ही है।

राजभाषा अथवा सम्पर्क भाषा अपनी एक सीमा में (परिधि में बंधी है, परन्तु उस सीमा के आर- पार विस्तृत (व्यापक) आयामों में परिव्यास, राष्ट्र के प्रशासन, समस्त कार्य, व्यापार, व्यवसाय, रीति नीति, तकनीक तथा संस्कृति और परम्परा को अभिव्यक्ति देने वाली तथा विश्व के विभिन्न देशों तक इन्हें पहुँचाने में समर्थ राष्ट्र की एक सुगम, सुबोध एवं सशक्त भाषा राष्ट्र भाषा होती है। भारत में इस रूप में राष्ट्रभाषा के स्वरूप मे भी हिन्दी स्वभावतः प्रतिष्ठित है। वस्तुतः राष्ट्रभाषा राष्ट्र की वह भाषा होती है जो अपने व्यापक परिवेश और विकासोन्मुख प्रवर्धमान शक्तियों के चलते अपनी क्षेत्रीयता की सीमा से ऊपर उठते हुए देश के विभिन्न क्षेत्रों के संवेदन-स्पंदन को अपनी आत्मा में समेट कर उसे प्रकाश, अभिव्यक्ति देती है और जो विभिन्न क्षेत्रों और विभिन्न भाषा-भाषियों के बीच भावनात्मक एकता स्थापित करने में सेतु का काम करती है। हिन्दी इन दोनों ही दायित्वों का सार्थक निर्वाह कर रही है और इसलिए इसको राष्ट्रभाषा

के रूप में प्रतिष्ठा मिलना किसी कृत्रिम प्रयास का नही, स्वाभाविक गति का परिणाम है।

8. अन्तर्राष्ट्रीय भाषाः जो भाषा विभिन्न राष्ट्रों के बीच विचार विनिमय तथा पत्र व्यवहार आदि के लिए व्यवहार में लाई जाती है, उसे अन्तर्राष्ट्रीय भाषा कहते है। जैसे अंग्रेजी भाषा अनेक राष्ट्रों में रहने वाले लोगो में व्यापक रूप से बोली और समझी जाती है। सयुंक्त राष्ट्रसंघ में भी इसे व्यापक रूप से बोली जानें वाली भाषा का गौरव प्राप्त है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इसी भाषा का व्यवहार उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। संख्या की दृष्टि से पूरे विश्व में बोली जाने वाली भाषाओं में चीनी, स्पैनिश और हिन्दी की स्थान सबसे ऊपर है, लेकिन आपसी विचार विनिमय के लिए अंग्रेजी का वर्चस्व सर्वमान्य है। इसीलिए अंग्रेजी को ही अन्तर्राष्ट्रीय भाषा कहा जाता है।

9. मातृ भाषा : मातृभाषा वह भाषा है जिसे व्यक्ति अपनी माता की गोद से सीखता है अर्थात उसे माँ-बाप, अड़ोस-पड़ोस, उसके अपने संस्कार की भाषा मातृभाषा होती है। मातृभाषा की पहचान के सम्बन्ध में गुलाब राय ने अपने लेख "मातृभाषा की महत्ता" में लिखा है कि यदि किसी की मातृभाषा का पता करना हो और, यह किसी भी प्रकार से पता नहीं चल पाएं तो अचानक पीछे से उसकी पीठ पर मुक्का मारो। ऐसी स्थिति में जिस भाषा में वह अपनी आह व्यक्त करे वहीं उसकी मातृभाषा होगी। कारण, कोई कितना भी विदेशी भाषा का ज्ञान रखने वाला हो, अतिशय सुख अथवा अतिशय दुख की अवस्था में वह अपनी मातृभाषा में ही अपने हृदय के भाव व्यक्त करेगा। आरम्भ में हिन्दी मातृभाषा के रूप में मात्र दिल्ली और उससे लगे मेरठ जिले एवं उसके आस-पास के एक छोटे से भू-भाग में प्रयोग में रही, किन्तु आज मातृभाषा के रूप में लगभग सारे भारत के विस्तार में प्राजल सम्पर्क का एक मात्र साधन बन चुकी है।

10. कार्यालयीन भाषाः कार्यालयीन भाषा से आशय है सरकारी कामकाज में प्रयुक्त होने वाली भाषा। 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतन्त्र हुआ और हिन्दी को 14 सितम्बर, 1949 के दिन राजभाषा का गरिमामय पद दिया गया। भारत के संविधान के अनुसार राजभाषा एक पारिभाषिक शब्द है जिसका अर्थ है सरकारी कामकाज में प्रयुक्त भाषा। राजभाषा के लिये अंग्रेजी शब्द पर्याय के रूप में प्रयुक्त होता है। कार्यालयीन हिन्दी को अनुकूलन दिशा और गति प्रदान करने में कार्यालयों में प्रयुक्त प्रारूपण, टिप्पण, सार लेखन, रिपोर्ट आदि का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

5.6 हिन्दी भाषा का मानकीकरण

'मानकीकरण' भाषा की एक सहज सामाजिक प्रक्रिया है। मानक भाषा अर्थात ऐसी भाषा जो एक निश्चित पैमाने के अनुसार लिखी या बोली जाती है। मानक भाषा को नागर भाषा, परिनिष्ठित भाषा, आदर्श भाषा, साधु भाषा और टकसाली भाषा भी कहते हैं। इसको अंग्रेजी में 'स्टेण्डर्ड लेंग्वेज' कहते हैं। मानक का अर्थ स्थिर, शुद्ध तथा स्तरीय भाषा होती है। भाषा के अनेक रूप होते हैं। मानक भाषा का रूप संसार में एक समान होता है। उसका प्रयोग पठन पाठन, ज्ञान विज्ञान, साहित्य संस्कृति में भी एक समान होता है। और साहित्य, विज्ञान, वाणिज्य में मानक भाषा का ही प्रयोग किया जाता है। मानक भाषा एक क्षेत्र विशेष की विशिष्ट भाषा होती है। उसका अपना निश्चित व्याकरण होता है। मानक भाषा का एक पूर्ण शब्दकोश होता है तथा सभी से उसे मान्यता प्राप्त होती है। आज जो हिन्दी प्रयोग में आ रही है, वह मानक हिन्दी है। मानक हिन्दी भाषा उसे कहते है, जो व्याकरणयुक्त सर्वमान्य राजभाषा हो, जिसमें एकरूपता, स्थिरता, स्वायत्तता और कार्य-व्यापार में प्रयोग की अधिकता हो, जिसे सामाजिक जीवन में बोलचाल एवं लेखन में प्रयुक्त किया जाता हो। वह अपने आदर्श रूप में साहित्य रचना योग्य हो। जिसमें, विश्वविद्यालयीन अध्ययन अध्यापन एवं शोधकार्य किया जा सकता हो तथा जिसमें दूरदर्शन एवं आकाशवाणी से समाचार प्रसारित होते हों।

मानक भाषा सामाजिक जीवन की आदर्श भाषा होती है। वह परिष्कृत रूप में सामाजिक, साहित्यिक, व्यावसायिक, वैज्ञानिक एवं प्रशासनिक कार्यों में प्रयोग की जाती है। इस दृष्टि से हिन्दी एक पूर्ण वैज्ञानिक मानक भाषा है। भाषा-विज्ञान की दृष्टि से हिन्दी मानक भाषा है। उसमें लिपि और व्याकरण की दृष्टि से जितनी परिपूर्णता है, उतनी विश्व की किसी अन्य भाषा में नहीं है। हिन्दी जब राजभाषा के पद पर आसीन हुई तो उसके लिये भाषा के मानक रूप की जरूरत पड़ी जिसमें स्पष्टता, एकरूपता, सुनिश्चितता तथा औचित्य का समावेश होना आवश्यक समझा गया। अतः आजादी के बाद से आज तक हिन्दी को अधिक प्रयोजनीय, तर्कसंगत, वैज्ञानिक तथा सार्थक बनाने की दिशा में प्रयत्न कर इस क्षेत्र में उसका मानक रूप तैयार किया जा रहा है।

5.7 स्वप्रगति परीक्षण

1. सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा
   (i). राष्ट्रभाषा (ii). राजभाषा
   (iii). बोली (iv). राज्यभाषा
2. विचारों के आदान-प्रदान को क्या कहते है
   (i). बोली (ii). भाषा

(iii). राष्ट्रभाषा (iv). अन्तरर्राष्ट्रीय भाषा

3. संवैधानिक रूप से सरकारी कामकाज के लिए स्वीकृत भाषा

(i). बोली (ii). राजभाषा

(iii). विभाषा (iv). राष्ट्रभाषा

5.8 सार संक्षेप

भाषा मानव सभ्यता का एक महत्वपूर्ण माध्यम है, जो विचारों, भावों और इच्छाओं की अभिव्यक्ति में सहायक होती है। यह व्यक्ति, समाज और संस्कृति के बीच संवाद का प्रमुख साधन है। पाठ में भाषा के महत्व को स्पष्ट करते हुए बताया गया है कि यह विचारों के आदान-प्रदान, ज्ञान के हस्तांतरण, व्यक्तित्व विकास, और राष्ट्रीय एकता के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

भाषा की परिभाषाएँ विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रस्तुत की गई हैं, जो इसे एक सामाजिक और सांस्कृतिक उपकरण के रूप में परिभाषित करती हैं। पाठ में बोली और अन्य भाषाई रूपों का भी उल्लेख किया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि संवाद के लिए भाषा का प्रयोग किस प्रकार किया जाता है। कुल मिलाकर, यह पाठ भाषा की बहुआयामीता और उसकी आवश्यकता को समझाता है, जो मानव जीवन को संपूर्ण और समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण है।

प्रगति की जाँच

उत्तरः 1. (iii) 2. (ii) 3. (ii)

5.9 मुख्य शब्द

- **भाषा**: वह माध्यम जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों और भावनाओं को प्रकट करता है।
- **अभिव्यक्ति**: विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने की क्रिया।
- **विचार**: मन में उत्पन्न होने वाले विचार, संकल्प या चिंतन।
- **भाव**: किसी भावना या मानसिक स्थिति का संकेत या प्रकटिकरण।
- **संवाद**: दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच बातचीत या बातचीत का कार्य।
- **समाज**: लोग एकत्रित होकर एक-दूसरे के साथ रहने वाला समूह।
- **संस्कृति**: समाज के विचारों, आदतों, और परंपराओं का समूह।
- **ज्ञान**: सूचना, समझ या किसी विषय पर अनुभव।
- **व्यक्तित्व**: किसी व्यक्ति की पहचान, गुण और विशेषताएँ।

- **राष्ट्रीय एकता**: एक राष्ट्र के विभिन्न भागों के लोगों के बीच एकजुटता और सहयोग।
- **बोली**: किसी विशेष क्षेत्र की स्थानीय भाषा या उसका रूप।
- **ध्वनि संकेत**: आवाज या ध्वनि जो विचारों या भावनाओं को व्यक्त करती है।

5.10 संदर्भ सूची

- तिवारी, भोलानाथ. "भाषा और भाषा विज्ञान." प्रगति प्रकाशन, 2010.
- स्वीट, हेन्री. "भाषा की मूल बातें." प्रगति प्रकाशन, 2005.
- क्रोचे, बेंजामिन. "भाषा का स्वरूप." शिल्पा प्रकाशन, 2012.
- कामना प्रसाद. "भाषा की सिद्धांत." ज्ञानदत्त पुस्तकालय, 2018.
- ब्लॉक, जोसेफ एवं ट्रेगर, कैथरीन. "भाषा का विकास और उपयोग." भारतीय भाषा परिषद, 2021.
- शर्मा, बालकृष्ण. "भाषा की महत्ता." साहित्य निकेतन, 2015.
- चतुर्वेदी, रामप्रसाद. "भारतीय भाषाएँ और संस्कृति." हिंदी जगत, 2019.
- पाठक, विमल. "भाषा: एक सामाजिक संदर्भ." ज्ञानवर्धन, 2020.

5.11 अभ्यास प्रश्न

1. बोली का अर्थ स्पष्ट करो।
2. परिनिष्ठित भाषा से तुम क्या समझते हो ।
3. साहित्यिक भाषा किसे कहते हैं।

इकाई -6
भाषा – कौशल

6.1 प्रस्तावना

6.2 उद्देश्य

6.3 भाषा - कौशल का अर्थ

6.4 विकारी शब्द

6.5 अविकारी शब्द

6.6 स्वप्रगति परीक्षण

6.7 सार संक्षेप

6.8 मुख्य शब्द

6.9 संदर्भ सूची

6.10 अभ्यास प्रश्न

6.1 प्रस्तावना

भाषा कौशल मानव की अभिव्यक्ति का प्राथमिक माध्यम है, जिसके बिना विचारों का आदानप्रदान असंभव है। यह केवल शब्दों का समूह नहीं-, बल्कि विचारों, भावनाओं और संवेदनाओं का एक सशक्त माध्यम है। भाषा का विकास समाज के साथसाथ होता है-, जिससे यह गतिशील और परिवर्तनीय बनी रहती है। पाठ में विकारी और अविकारी शब्दों के बीच अंतर, संज्ञा, सर्वनाम और क्रिया के विभिन्न प्रकारों की चर्चा की गई है। यह अध्ययन न केवल भाषा की संरचना को समझने में मदद करता है, बल्कि संवाद और संचार की क्षमता को भी विकसित करता है। भाषा कौशल का उद्देश्य छात्रों को इन सभी तत्वों के

बारे में गहरी समझ प्रदान करना है, ताकि वे अपनी अभिव्यक्ति में अधिक कुशल और प्रभावी हो सकें।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

- भाषा कौशल के विभिन्न पहलुओं को समझ सकेंगे और उनका सही उपयोग कर सकेंगे।
- वाचन, लेखन, और संवाद कौशल में सुधार कर सकेंगे।
- हिंदी भाषा के व्याकरण की सही समझ और प्रयोग कर सकेंगे।
- भाषा कौशल के माध्यम से अपनी सोच और विचारों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त कर सकेंगे।
- संवाद और लेखन में शैली और प्रभाव को बेहतर बना सकेंगे।
- भाषा के सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक महत्व को समझ सकेंगे।
- अपने आसपास के समाज में भाषा के महत्व और प्रभाव को पहचान सकेंगे।
- विभिन्न प्रकार की साहित्यिक रचनाओं में भाषा का सही उपयोग कर सकेंगे।

6.3 भाषा - कौशल का अर्थ

मानव की अभिव्यक्ति का सर्वप्रथम माध्यम भाषा ही होती है। भाषा के अभाव में मनुष्य अपने विचारों का आदान-प्रदान नहीं कर पाता। भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य अपने भावों और विचारो को अभिव्यक्त करता है और उन विचारो को फिर समाज, समूहों तथा व्यक्ति तक पहुँचाता है।

प्राचीन काल से मनुष्य अपनें समाज और परिवेश से भाषा का अर्जन करते आया है परंतु भाषा भी समाज के विकास के साथ विकसित और परिवर्तित होती रही है। भाषा की गतिशीलता का सम्बंध हमारे सामाजिक व्यवहार से जुड़ा हुआ है। इसीलिए एक ओर भाषा का एक रूप यदि स्थिर रहता है तो दूसरा रूप परिवर्तित होता रहता है। भाषा का जो रूप परिवर्तित नहीं होता उसके शब्दो को व्याकरण की भाषा में अविकारी शब्द कहा जाता है। और लिंग, वचन, कारक आदि के फलस्वरूप जिन शब्दो में परिवर्तन होता है, उसे विकारी शब्द कहा जाता है। जैसे

विकारी - संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और विशेषण

अविकारी - क्रिया विशेषण, सम्बंधबोधक, समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक आदि।

6.4 विकारी शब्द

(1). संज्ञा : 'संज्ञा' उस विकारी शब्द को कहते है, जिससे किसी विशेष वस्तु अथवा व्यक्ति के नाम का बोध हो। यहाँ' वस्तु' शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में हुआ है, जो केवल प्राणी और पदार्थ का वाचक नहीं, वरन् उनके धर्मो का भी सूचक है। साधारण अर्थ में' वस्तु' का प्रयोग इस अर्थ में नहीं होता। अतः वस्तु के अन्तर्गत प्राणी, पदार्थ और धर्म आते है। इन्हीं के आधार पर संज्ञा के भेद किए गए है।

हिन्दी-व्याकरण में संज्ञा के मुख्यतः पाँच भेद है 1. व्यक्तिवाचक, 2. जातिवाचक, 3. भाववाचक, 4. समूहवाचक, और 5. द्रव्यवाचक। प.गुरू के अनुसार, "समूहवाचक का समावेश व्यक्तिवाचक तथा जातिवाचक में और द्रव्यवाचक का समावेश जातिवाचक में हो जाता है।"

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा : जिस शब्द से किसी एक वस्तु या व्यक्ति का बोध हो, उसे 'व्यक्तिवाचक संज्ञा' कहते है। जैसे राम, गाँधीजी, गंगा, काशी इत्यादि। 'राम', 'गाँधीजी' कहने से एक एक व्यक्ति का 'गंगा' कहने से एक नदी का और काशी' कहने से एक नगर का बोध होता है। व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ जातिवाचक संज्ञाओं की तुलना में कम है।

2. जातिवाचक संज्ञा : जिन संज्ञाओं से एक ही प्रकार की वस्तुओं अथवा व्यक्तियों का बोध हो, उन्हें' जातिवाचक संज्ञा' कहते है। जैसे मनुष्य, घर, पहाड़, नदी इत्यादि। मनुष्य' कहने से संसार की मनुष्य जाति का, 'घर' कहने से सभी तरह के घरों का, 'पहाड़' कहने से संसार के सभी पहाड़ों का और 'नदी' कहने से सभी प्रकार की नदियों का जातिगत बोध होता है।

3. भाववाचक संज्ञा : जिस संज्ञा शब्द से व्यक्ति या वस्तु के गुण या धर्म, दशा अथवा व्यापार का बोध होता है, उसे' भाववाचक संज्ञा कहते है। जैसे लम्बाई, बुढ़ापा, नम्रता, मिठास, समझ, चाल इत्यादि । व्यक्तिवाचक संज्ञा की तरह भाववाचक संज्ञा से भी किसी एक ही भाव का बोध होता है।' धर्म, गुण, अर्थ' और 'भाव' प्रायः पर्यायवाची शब्द है।

4. समूहवाचक संज्ञा : जिस संज्ञा से वस्तु अथवा व्यक्ति के समूह का बोध हो, उसे ' समूहवाचक संज्ञा' कहते है। जैसे व्यक्तियों का समूह सभा, दल, गिरोह, वस्तुओं का समूह गुच्छा, कुंज, मण्डल, आदि।

5. द्रव्यवाचक संज्ञा : जिस संज्ञा से नाप-तौल वाली वस्तु का बोध हो, उसे 'द्रव्यवाचक संज्ञा' कहते है। इस संज्ञा का सामान्यतः बहुवचन नहीं होता। जैसे-लोहा, सोना, चाँदी, दूध, पानी, तेल, तेजाब इत्यादि ।

(II). सर्वनाम : 'सर्वनाम' उस विकारी शब्द को कहते है, जो पूर्वापरसम्बन्ध से किसी भी संज्ञा के बदले आता है जैसे मैं, तुम, वह, यह इत्यादि। सर्व (सब) नामों (संज्ञाओं) के बदले जो शब्द आते हैं, उन्हें' सर्वनाम' कहते हैं। संज्ञा की अपेक्षा सर्वनाम की विलक्षणता यह है कि संज्ञा से जहाँ उसी वस्तु का बोध होता है, जिसका वह संज्ञा है,

हिन्दी में कुल ग्यारह सर्वनाम हैं-मैं, तू, आप, यह, वह, जो, सो, कोई, कुछ, कौन, क्या। प्रयोग के अनुसार सर्वनाम के छः भेद है, जो इस प्रकार हैं

1. पुरूषवाचक सर्वनाम 'पुरुषवाचक सर्वनाम' पुरूषों (स्त्री या पुरूप) के नाम के बदले आते है। उत्तमपुरूष में लेखक या वक्ता आता है, मध्यमपुरूष में पाठक या श्रोता और अन्यपुरूष में लेखक और श्रोता को छोड़ अन्य लोग आते हैं।

2. निजवाचक सर्वनाम 'निजवाचक सर्वनाम' का रूप 'आप' है। लेकिन, पुरुषवाचक के अन्यपुरूप वाले 'आप' से इसका प्रयोग सर्वधा अलग है। यह कर्ता का बोधक है, पर स्वयं कर्ता का काम नहीं करता। पुरुषवाचक 'आप' बहुवचन में आदर के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे आप मेरे सिर आँखो पर है, आप क्या राय देते हैं? किन्तु निजवाचक' आप' एक ही तरह दोनों वचनों में आता है और तीनों पुरूषों में इसका प्रयोग किया जा सकता है।

3. निश्चयवाचक सर्वनाम जिस सर्वनाम से वक्ता के पास या दूर की किसी वस्तु के निश्चय का बोध होता है, उसे 'निश्चयवाचक सर्वनाम' कहते हैं। जैसे यह, वह। उदाहरणार्थ पास की वस्तु के लिए यह कोई नया काम नहीं है, दूर की वस्तु के लिए रोटी मत खाओ, क्योंकि वह जली हैं।

4. अनिश्चयवाचक सर्वनाम जिस सर्वनाम से किसी निश्चित वस्तु का बोध न हो, उसे 'अनिश्चयवाचक सर्वनाम' कहते हैं। जैसे कोई, कुछ। उदाहरणार्थ कोई ऐसा न हो कि कोई आ जाए, कुछ उसने कुछ नहीं खाया।

5. सम्बन्धवाचक सर्वनाम जिस सर्वनाम से वाक्य में किसी दूसरे सर्वनाम से सम्बन्ध स्थापित किया जाए, उसे 'सम्बन्धवाचक सर्वनाम' कहते हैं। जैसे जो, सो। उदाहरणार्थ वह कौन हैं, जो पड़ा रो रहा है, वह जो न करें, सो थोड़ा।

6. प्रश्नवाचक सर्वनाम प्रश्न करने के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग होता हैं, उन्हें 'प्रश्नवाचक सर्वनाम' कहते हैं। जैसे-कौन, क्या। उदाहरणार्थ-कौन आता हैं? तुम क्या खा रहे हो?

(III). क्रिया: जिस शब्द से किसी काम का करना या होना समझा जाए, उसे 'क्रिया' कहते हैं। जैसे-पढ़ना, खाना, पीना, जाना इत्यादि। क्रिया विकारी शब्द है, जिसके रूप, लिंग, वचन और पुरूष के अनुसार बदलते हैं। यह हिन्दी की अपनी विशेषता हैं। क्रिया का मूल 'धातु' है। 'धातु' क्रियापद के उस अंश को कहते हैं, जो किसी क्रिया के प्रायः सभी रूपों में पाया जाता है। तात्पर्य यह कि जिन मूल शब्दों से क्रियाएँ बनती हैं, उन्हें' धातु' कहते हैं। उदाहरणार्थ, 'पढ़ना' क्रिया को लें। इसमें 'ना' प्रत्यय है, जो मूल धातु' पढ़' में लगा है। इस प्रकार, 'पढ़ना' क्रिया की धातु' पढ़' है। इसी प्रकार, 'खाना' क्रिया' खा' धातु में 'ना' प्रत्यय लगाने से बनी है। हिन्दी में क्रिया का सामान्य रूप मूलधातु में 'ना' जोड़कर बनाया जाता है। जैसे- चल ना चलना, देख ना देखना। इन सामान्य रूपों में' ना' हटाकर धातु का रूप ज्ञात किया जा सकता है। रचना की दृष्टि से क्रिया के सामान्यतः दो भेद हैं-

1. सकर्मक क्रिया: 'सकर्मक क्रिया उसे कहते हैं, जिसका कर्म हो या जिसके साथ कर्म की सम्भावना हो, अर्थात् जिस क्रिया के व्यापार का संचालन तो कर्ता से हो, पर जिसका फल या प्रभाव किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु अर्थात कर्म पर पड़े। उदाहरणार्थ श्याम आम खाता है। इस वाक्य में 'श्याम' कर्ता है, 'खाने' के साथ उसका कर्ता रूप से सम्बन्ध है। प्रश्न है, क्या खाता है? उत्तर है, 'आम'। इस तरह' आम' का सीधा 'खाने' से सम्बन्ध है। अतः 'आम' कर्मकारक है। यहाँ श्याम के खाने का फल 'आम' पर अर्थात् कर्म पर पड़ता है। इसलिए, 'खाना' क्रिया सकर्मक है। कभी कभी सकर्मक क्रिया का कर्म छिपा रहता है। जैसे वह गाता है, वह पढ़ता है। यहाँ' गीत' और 'पुस्तक' जैसे कर्म छिपे हैं।

2. अकर्मक क्रिया: जिन क्रियाओं का व्यापार और फल कर्ता पर हो, वे' अकर्मक' कहलाती हैं। अकर्मक क्रियाओं का' कर्म' नहीं होता, क्रिया का व्यापार और फल दूसरे पर न पड़कर कर्ता पर पड़ता है। उदाहरण के लिए- श्याम सोता है। इसमें सोना' क्रिया अकर्मक है।' श्याम' कर्ता है, 'सोने' की क्रिया उसी के द्वारा पूरी होती है। अतः सोने का फल भी उसी पर पड़ता है। इसलिए' सोना' क्रिया अकर्मक है।

सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं की पहचान सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं की पहचान 'क्या', 'किसे 'या' किसको' आदि प्रश्न करने से होती है।

यदि कुछ उत्तर मिले, तो समझना चाहिए कि क्रिया सकर्मक है और यदि न मिले तो अकर्मक होगी। कुछ क्रियाएँ अकर्मक और सकर्मक दोनो होती हैं और प्रसंग अधवा अर्थ के अनुसार इनके भेद का निर्णय किया जाता है।

अकर्मक		**सकर्मक**
1. उसका सिर खुजलाता है।	-	1. वह अपना सिर खुजलाता है।
2. बूंद बूँद से घड़ा भरता है।	-	2. मैं घड़ा भरता हूँ।
3. तुम्हारा जी ललचाता है।	-	3. ये चीजें तुम्हारा जी ललचाती हैं।

(IV). विशेषण: जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताए, उसे ' विशेषण' कहते हैं। जिसकी विशेषता बताई जाए, यह 'विशेष्य' कहलाता है। दूसरें शब्दों में विशेषण एक ऐसा विकारी शब्द है, जो हर हालत में संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है। इसका अर्थ यह है कि विशेषणरहित संज्ञा से जिस वस्तु का बोध होता है, विशेषण लगने पर उसका अर्थ सीमित हो जाता है। जैसे, 'घोड़ा' संज्ञा से घोड़ा जाति के सभी प्राणियों का बोध होता है, पर 'काला घोड़ा' कहने से केवल काले घोड़े का बोध होता है, सभी तरह के घोड़ो का नहीं। यहाँ"काला' विशेषण से' घोड़ा' संज्ञा की व्याप्ति सीमित हो गई है।

व्याकरण की दृष्टि से विशेषण के चार भेद होते हैं।

1. सार्वनामिक विशेषण : पुरूषवाचक और निजवाचक सर्वनाम (मैं, तू, वह) के सिवा अन्य सर्वनाम जब किसी संज्ञा के पहले आते हैं, तब वे 'सार्वनामिक विशेपण' कहलाते हैं। जैसे वह नौकर नहीं आया, यह घोड़ा अच्छा है। यहाँ' नौकर' और 'घोड़ा' संज्ञाओं के पहले विशेषण के रूप में' वह' और ' यह' सर्वनाम आए हैं। अतः ये सार्वनामिक विशेषण हैं। व्युत्पत्ति के अनुसार सार्वनामिक विशेषण के भी दो भेद है-

(i) मौलिक सार्वनामिक विशेषण-जो बिना रूपान्तर के संज्ञा के पहले आता है। जैसे यह घर, वह लड़का, कोई नौकर इत्यादि।

(ii) यौगिक सार्वनामिक विशेषण-जो मूल सर्वनामों में प्रत्यय लगाने से बनते है। जैसे ऐसा आदमी, कैसा घर, जैसा देश इत्यादि।

2. गुणवाचक विशेषण जिस शब्द से संज्ञा का गुण, दशा, स्त्रभात्र आदि लक्षित हो, उसे 'गुणवाचक विशेषण' कहते हैं। विशेषणों में इनकी संख्या सबसे अधिक है।

3. संख्यावाचक विशेषण जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या लक्षित होती हो, उसे 'संख्यावाचक विशेषण' कहते हैं। जैसे-चार घोड़े, तीस दिन, कुछ लोग, सब लड़के इत्यादि। यहाँ चार, तीस, कुछ और सब-संख्यावाचक विशेषण हैं।

संख्यावाचक विशेपण के तीन मुख्य भेद हैं। निश्चत संख्यावाचक, ii . अनिश्चित संख्यावाचक, iii. परिमाणबोधक।

4. परिणामबोधक विशेषण: संख्यावाचक विशेषण का एक मुख्य भेद परिणामबोधक है। यह किसी वस्तु की नाप या तौल का बोध कराता है। जैसे सेर भर दूध, तोला भर सोना, थोड़ा पानी, कुछ पानी, सब धन, और घी लाओ इत्यादि। यहाँ भी निश्चय और अनिश्चय के आधार पर परिमाणबोधक विशेषण के दो भेद किए गए हैं।

1. निश्चित परिमाणबोधक विशेषण - दो सेर घी, दस हाथ जगह, चार गज मलमल।
2. अनिश्चित परिमाणबोधक विशेषण- बहुत दूध, सब धन, पूरा आनन्द इत्यादि।

6.5 अविकारी शब्द

विकारी शब्दों के बाद अविकारी शब्दों का अध्ययन हम यहाँ करेगे।

1. क्रिया-विशेषण: जिस अव्यय से क्रिया की कोई विशेषता जानी जाती है, उसे क्रिया विशेषण कहते हैं, जैसे- जल्दी-जल्दी, उतना, जितना, यहाँ-वहाँ, धीरे-धीरे आदि।

क्रिया विशेषण के मुख्यतः 4 भेद है-

i परिमाणवाचक :- बहुत, अति, थोड़ा, किंचित, केवल, यथेष्ट, इतना आदि।
ii रीतिवाचक :- ऐसे, वैसे, कैसे, सही, नहीं, थोड़ा, बहुत, कम आदि।
iii स्थानवाचक :- भीतर, ऊपर, कहाँ, यहाँ, नीचे आदि।
iv कालवाचक :- क्रिया के समय का बोध कराने वाले शब्दों को कालवाचक क्रिया विशेषण कहते है, जैसे कल, जब, प्रतिदिन आदि।

2. संबंधबोधक जो अविकारी शब्द संज्ञा या सर्वनाम से मिलकर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्द से दिखाते है अथवा जोड़ते हैं, उन्हें संबंधबोधक कहते हैं, जैसे पास, तक बिना, पहले, अनुसार आदि। प्रयोग के आधार पर संबंधबोधक अव्यय के दो प्रकार हैं: संबद्ध संबंधबोधक तथा अनुबद्ध संबंधबोधक।

3. समुच्चयबोधक अव्ययः दो शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों को मिलाने वाले अविकारी शब्द समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं, इन्हें योजक भी कहते है, जैसे यदि, या, और, क्यों, तथा, किन्तु परन्तु क्योंकि, अथवा इत्यादि। समुच्चयबोधक अव्यय के तीन प्रकार होते हैं।

(i). संयोजक:- जो समुच्चयबोधक अव्यय जोड़ने के अर्थ में आएँ, उन्हे संयोजक कहते हैं, जैसे और, एवं ।

(ii). विभाजक:- जो समुच्चयबोधक अव्यय भेद प्रकट करने के अर्थ में प्रयुक्त हों, उन्हें विभाजक कहते हैं, जैसे परंतु, मगर, वरन, बल्कि, क्योंकि।

(iii). विकल्पसूचक : जो समुच्चयबोधक अव्यय विकल्प का बोध कराएँ, उन्हें विकल्प सूचक कहते हैं, जैसे या, अथवा, या या, न कि।

4. विस्मयादिबोधक: जिन अव्ययों से आश्चर्य, हर्ष, भय, तिरस्कार, शोक, दुःख, क्रोध आदि भाव प्रकट हों, उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं। ओह।, वाह।, आदि। विस्मयबोधक अव्यय, आश्चर्यबोधक, शोक या दुःखसूचक, आनंदबोधक, विवशताबोधक, अनुमोदनबोधक, तिरस्कारबोधक, सम्बोधनबोधक, भयबोधक, आदि विभिन्न प्रकार के होते हैं।

6.6 स्वप्रगति परीक्षण

1. 'राम' कौनसी संज्ञा है।
   (i) व्यक्तिवाचक (ii) जातिवाचक
   (iii) समूहवाचक (iv) द्रव्यवाचक
2. सर्वनाम के भेद कितने होते है।
   (1) 3 (ii) 4
   (iii) 6 (iv) 8
3. जिन शब्दों में लिंग, वचन, कारक आदि के कारण परिवर्तन होता है उसे ....
   (i) विकारी शब्द (ii) अविकारी शब्द
   (iii) रूपक शब्द (iv) इनमें से कोई नहीं

6.7 सार संक्षेप

भाषा कौशल मानव की अभिव्यक्ति का मूल माध्यम है, जिसके द्वारा विचारों और भावनाओं का आदानप्रदान संभव होता है। यह सामाजिक विकास के साथ विकसित - जैसे संज्ञा) होती है और इसमें विकारी, सर्वनाम, क्रियाऔर अविकारी शब्दों का अंतर (होता है। संज्ञा के विभिन्न भेदों में व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक, समूहवाचक और द्रव्यवाचक शामिल हैं। सर्वनाम की श्रेणियाँ पुरूषवाचक, निजवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, सम्बन्धवाचक और प्रश्नवाचक होती हैं। क्रिया को सकर्मक और अकर्मक में विभाजित किया जाता है। यह अध्ययन भाषा की गहरी समझ और संवाद कौशल को विकसित करने में सहायक है।

प्रगति की जाँच

उत्तर: 1. (i) 2. (ii) 3. (i)

6.8 मुख्य शब्द

- **भाषा**: मानव की अभिव्यक्ति का माध्यम, विचारों और भावनाओं का संचार।
- **कौशल**: किसी कार्य को कुशलता से करने की क्षमता या दक्षता।
- **विकारी शब्द**: वे शब्द जिनका रूप लिंग, वचन, और कारक के अनुसार बदलता है।
- **अविकारी शब्द**: वे शब्द जिनका रूप स्थिर रहता है और परिवर्तन नहीं होता।
- **संज्ञा**: व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम का बोध कराने वाला शब्द।
- **व्यक्तिवाचक संज्ञा**: किसी विशेष व्यक्ति या वस्तु का बोध कराने वाली संज्ञा।
- **जातिवाचक संज्ञा**: समान प्रकार की वस्तुओं या व्यक्तियों का बोध कराने वाली संज्ञा।
- **भाववाचक संज्ञा**: गुण, धर्म, या भाव का बोध कराने वाली संज्ञा।
- **समूहवाचक संज्ञा**: वस्तुओं या व्यक्तियों के समूह का बोध कराने वाली संज्ञा।
- **द्रव्यवाचक संज्ञा**: नापतौल वाली वस्तुओं का बोध कराने वाली संज्ञा।-
- **सर्वनाम**: संज्ञा के स्थान पर आने वाला शब्द, जैसे मैं, तुम, वह।
- **क्रिया**: कार्य या क्रिया का बोध कराने वाला शब्द।

6.9 संदर्भ सूची

- शर्मा, एन. (2018). *भाषा कौशल और साहित्यिक रचनाएँ.* नई दिल्ली: विक्रम पब्लिशर्स।
- सिंह, ए. (2020). *हिंदी भाषा का इतिहास और विकास.* दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- कुमार, श. (2021). *व्याकरण और शैली: हिंदी में दक्षता का मार्ग.* इलाहाबाद: ज्ञानमूर्ति पब्लिकेशन।
- जोशी, पी. (2022). *भाषा और संवाद कौशल.* मुम्बई: प्रगति प्रकाशन

6.10 अभ्यास प्रश्न

1. संज्ञा की परिभाषा लिखकर उसके विविध प्रकारों का वर्णन करो।
2. विकारी और अविकारी शब्दों का अर्थ स्पष्ट करो।
3. हिन्दी में क्रिया के कितने और कौनसे रूप होते हैं।

ब्लॉक - III

इकाई -7
करूणा (निबंध)

7.1 प्रस्तावना

7.2 उद्देश्य

7.3 रामचन्द्र शुक्ल का जीवन परिचय

7.4 करूणा पाठ का सारांश

7.5 स्वप्रगति परीक्षण

7.6 सार संक्षेप

7.7 मुख्य शब्द

7.8 संदर्भ सूची

7.9 अभ्यास प्रश्न

7.1 प्रस्तावना

"करूणा" निबंध, जिसे आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा लिखा गया है, मानवता के एक अत्यंत महत्वपूर्ण भाव को उजागर करता है—करूणा। यह निबंध हमें बताता है कि करूणा केवल एक भाव नहीं, बल्कि यह एक मनोवृत्ति है, जो दूसरों के दुःख और पीड़ा के प्रति संवेदनशीलता का परिचायक है। शुक्ल जी ने इस निबंध के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि जैसे ही किसी व्यक्ति को अपने आस-पास के लोगों के दुःख का अनुभव होता है, तभी उसमें करूणा का उदय होता है।

इस निबंध में लेखक ने करूणा की गहराई और इसके मानव जीवन में महत्व को दर्शाया है। उन्होंने यह भी बताया है कि कैसे करूणा का भाव व्यक्ति को न केवल अपने

लिए, बल्कि समाज के लिए भी एक सकारात्मक और नैतिक प्रेरणा का स्रोत बनाता है। शुक्ल जी का यह लेखन हमें न केवल करूणा की आवश्यकता का अहसास कराता है, बल्कि इसे सामाजिक संबंधों और मानवीय संवेदनाओं के विकास के लिए एक आधारभूत तत्व के रूप में प्रस्तुत करता है।

इस प्रकार, "करूणा" निबंध हमें यह समझाने का प्रयास करता है कि समाज में सहानुभूति और करुणा की भावना को विकसित करना कितना आवश्यक है, ताकि हम एक सशक्त और समृद्ध समाज की स्थापना कर सकें।

7.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

- करूणा की परिभाषा और उसके महत्व को समझ सकेंगे।
- मानव जीवन में करूणा के प्रभावों को जान सकेंगे।
- समाज में करूणा के द्वारा उत्पन्न होने वाले सकारात्मक बदलावों को समझ सकेंगे।
- भारतीय संस्कृति में करूणा का स्थान और महत्व जान सकेंगे।
- करूणा के व्यवहारिक पहलुओं और इसके प्रयोग को समझ सकेंगे।
- दूसरों के प्रति सहानुभूति और करुणा का अनुभव कर सकेंगे।
- समाज में करुणा का प्रसार करने के तरीके जान सकेंगे।

7.3 रामचन्द्र शुक्ल का जीवन परिचय

रामचन्द्र शुक्ल हिंदी साहित्य के प्रमुख आलोचक, निबंधकार, और इतिहासकार थे। उन्होंने हिंदी साहित्य में आधुनिक आलोचना का प्रवर्तन किया और इसे एक नई दिशा दी। उनकी रचनाएँ हिंदी साहित्य के विकास में मील का पत्थर मानी जाती हैं।

जन्म और प्रारंभिक जीवन

रामचन्द्र शुक्ल का जन्म 4 अक्टूबर 1884 को उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले के अगोना नामक गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम चन्द्रशेखर शुक्ल था, जोकि एक सामान्य कृषक परिवार से थे। प्रारंभिक शिक्षा गाँव में हुई, जिसके बाद वे मिर्जापुर चले गए।

शिक्षा

शुक्ल जी ने मिर्जापुर में अपनी शिक्षा प्राप्त की। शुरुआत में उनकी रुचि चित्रकला में थी, लेकिन बाद में उनका झुकाव साहित्य और लेखन की ओर हो गया। उन्होंने हिंदी, संस्कृत, और अंग्रेजी साहित्य का गहन अध्ययन किया, जो उनकी रचनाओं में स्पष्ट झलकता है।

साहित्यिक जीवन

रामचन्द्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य को आलोचना और इतिहास की दृष्टि से समृद्ध किया। उनकी प्रमुख कृतियाँ और योगदान इस प्रकार हैं:

1. **आलोचना**
   शुक्ल जी ने साहित्यिक आलोचना को नई दृष्टि दी। उनकी आलोचना तर्कपूर्ण, तथ्यात्मक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण पर आधारित होती थी। वे रचनाओं का मूल्यांकन केवल भावनात्मक आधार पर नहीं करते थे, बल्कि उनके सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं को भी ध्यान में रखते थे।
   - उनकी प्रसिद्ध आलोचना पुस्तक **"चिंतामणि"** है।
2. **इतिहास लेखन**
   रामचन्द्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य के इतिहास को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया। उनकी पुस्तक **"हिंदी साहित्य का इतिहास"** हिंदी साहित्य के इतिहास का पहला व्यवस्थित और वैज्ञानिक विश्लेषण है। इसमें उन्होंने हिंदी साहित्य के विकास को विभिन्न कालों में बाँटकर उसके विश्लेषण और मूल्यांकन किया।
3. **निबंध लेखन**
   शुक्ल जी के निबंध शैली में गहन चिंतन और स्पष्टता देखने को मिलती है। उनके निबंधों में समाज, जीवन और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर गंभीर विचार मिलता है।

शैली और विशेषताएँ

- उनकी भाषा सरल, स्पष्ट और प्रभावशाली थी।
- वे तर्क और तथ्य के आधार पर अपनी बात रखते थे।
- उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति और समाज की गहरी समझ झलकती है।

मृत्यु

रामचन्द्र शुक्ल का निधन 2 फरवरी 1941 को हुआ।

निष्कर्ष

रामचन्द्र शुक्ल हिंदी साहित्य के उन स्तंभों में से एक हैं जिन्होंने इसे गहराई और गंभीरता प्रदान की। उनका साहित्यिक योगदान आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणादायक है। वे न केवल एक महान आलोचक थे, बल्कि हिंदी साहित्य के मार्गदर्शक भी थे।

7.4 करूणा पाठ का सारांश

'करूणा' पाठ का सारांश:- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार करूणा एक मनोवृत्ति है। दूसरों के दुःख से दुःखी होने के भाव का नाम ही करूणा है। जैसे ही बालक को सम्बन्ध का ज्ञान होने लगता है वैसे ही करूणा का उदय होता है। माँ को बिना कुछ कहे और झूठ मूठ रोती देखकर वह स्वयं भी रोने लगता है। भाई बहनों के पीटे जाने पर वे चंचल हो उठते हैं।
यहाँ लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि करूणा वह अनुभूति है, जो हमें किसी दूसरे के दुःख का ज्ञान होने पर होती है।

क्रोध एवं करूणा :- दुःख वर्ग में जो स्थान क्रोध का है ठीक उसके विपरीत भाव करूणा का है। क्रोध में किसी के अहित का भाव छिपा रहता है तथा करूणा में उसकी भलाई करने की भावना होती हैं। जिस व्यक्ति या वस्तु से किसी को लोभ होगा वह उसको हानि कभी नहीं पहुँचायेगा। लोभी महमूद ने सोमनाथ के मन्दिर को तोड़ा पर उसमें मिलने वाले हीरे जवाहरातों को बड़े सम्भाल कर रखा। इसी प्रकार रूप के लोभी जहाँगीर ने शेर अफगान को तो मरवाया पर नूरजहाँ को बड़े प्यार से रखा। इस प्रकार लोभ आनन्द वर्ग में आता है। सुख की अपेक्षा दुःख का व्यापार स्थल विस्तृत है मनुष्य के समाज में उसके दुःख सुख का बहुत-सा अंश दूसरों की क्रिया पर निर्भर हो जाता है। वह दूसरों के दुःख से दुःखी और दूसरों के सुख से सुखी होने लगता है। वह दूसरों के सुख से उतना सुखी नहीं होता जितना दूसरों के दुःख से दुखी होता है। अज्ञात व्यक्ति के दुःख से भी हम तब तक दुखी होते रहेंगे, जब तक हमको यह ज्ञात न हो जाये कि सताये गये मनुष्य ने अपराध या अत्याचार किया है। ऐसा होने पर सताये व्यक्ति के अत्याचार या अपराध हमारे सामने आ जाते हैं और हमारा दुःख क्रोध या अत्याचार में बदल जाता है। करूणा के लिए केवल दुःख की ही आवश्यकता होती है, किन्तु दूसरे के सुख से हम तभी आनन्द प्राप्त कर सकते हैं, जब वह हमारा निकटतम सम्बन्धी या

मित्र हो अथवा समाज का परम हितैषी हो। अतः निष्कर्ष यह निकला कि दूसरों के आनन्द से सुखी होने की अपेक्षा दूसरों के दुःखों से दुखी होना अधिक व्यापक है।

निकटम सम्बन्ध और करूणा:- करूणा का व्यापार स्थल विस्तृत है। जब हम अपरिचित व्यक्ति के दुःख से दुःखी हो उठते हैं तो परिचित और गुणियों, सदाचारियों, सम्बन्धियों, सुन्दर रमणियों तथा परोपकारियों को देखकर तो हमारे हृदय में करूणा अवश्य ही उत्पन्न होगी।

करूणा एक मनोवेग है, जिसका आरम्भ बच्चे के जन्म से ही हो जाता है। बच्चा जब यह समझने लगता है कि किस कार्य का क्या कारण था, तभी उसे दुःख के उस भेद का ज्ञान होने लगता है जिसे करूणा कहते हैं। शुरू में बच्चा अपने ही समान अन्य प्राणियों को समझता है। किसी बात का विचार किये बिना ही वह अनुभवों से दूसरे प्राणियों की दशा पर सोचता है। जब उसे धीरे धीरे यह समझने का अभ्यास हो जाता है कि किस कार्य का क्या कारण था, तब दूसरे के दुःख से स्वयं दुखी होने लगता है। इस प्रकार करूणा का भाव जाग्रत होता है।

करूणा से शील और सात्विकता का उदय:- करूणा के कारण ही मनुष्य में शील और सात्विकता के भाव उत्पन्न होते हैं। संसार का प्रत्येक व्यक्ति सुख प्राप्त करना चाहता है। जो कार्य दूसरों को सुख पहुँचाने वाले होते हैं, वे श्रेष्ठ होते हैं। करूणा से दूसरों को सुख की प्राप्ति होती है। इसलिए करूणा का भाव श्रेष्ठ भावों की कोटि में आता है। दूसरों के दुःख को देखकर करूणा उत्पन्न होना साधारण मनोविकार है, किन्तु ऐसा कार्य करना जिसमें भविष्य में किसी को किसी से किसी प्रकार का कष्ट न हो, शील या सवृत्ति कहलाता है। शीलवान व्यक्ति कभी किसी के हृदय पर चोट नहीं करता है। उसके कार्यों से उसे तो कष्ट हो सकता है किन्तु वह दूसरो को दुख कभी नहीं पहुँचाता है।

करूणा सात्विक वृत्ति उत्पन्न करती है:- सत्य बोलना तथा बड़ों की आज्ञा का पालन करना चारित्रिक नियम के अन्तर्गत हैं, शील या सद्भाव के अन्तर्गत नहीं। झूठ बोलने से अनर्थ होता है, अतः सत्य बोलने का नियम है। किन्हीं मामलों में मनोरंजन, खुशामद तथा शिष्टाचार में झूठ बोलना नियम के अनुकूल है, क्योंकि ऐसा करना मनोवृत्ति के अन्तर्गत है। मनोवृत्ति के विपरीत सदाचार या कोई नियम व्यर्थ का दम्भ है। करूणा के द्वारा ही अन्तःकरण में सात्विक वृत्ति जाग्रत होती है।

करूणा अपना बीज आलम्बन या पात्र में नहीं फेंकती: कथन से 'करूणा' निबन्ध के लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का आशय यह है कि करुणा अपना

बीज आलम्बन या पात्र में फेंककर बदले में उससे पुनः करूणा प्राप्ति की आशा नहीं करती। अर्थात करूणा जिस पर की जाती है वह करूणा करने पर बदले में करूणा नहीं करता। जैसा कि क्रोध और प्रेम में होता है। अपितु वह कृतज्ञता, श्रद्धा अथवा प्रेम प्रदर्शित करता है।

मोह और करूणा :- प्रिय के वियोग से जो दुःख होता है उसमें भी करूणा का अंश रहता है, संयोग से प्रिय के सुख का जो निश्चय है वियोग में वह अनिश्चय में बदल जाता है, इसी से करूणा उत्पन्न हो जाती है। अनिश्चित बात पर सुखी या दुःखी होना, अज्ञान है। इसी से करूणा को कभी-कभी मोह भी कहा जाता है। राम के वन तथा कृष्ण के मधुरा चले जाने पर उनके प्रियजन इस मोह के वशीभूत हो विकल हो रहे थे। मनुष्य का संसार उसके मित्रों, परिचितों तथा सम्बन्धियों से ही बनता है। अतः किसी ऐसे घनिष्ठ का दूर होना उसके वियोग में करूणा उत्पन्न करने वाला हो जाता है। इसी प्रकार किसी की मृत्यु पर करूणा जनित वेदना हृदय को पीड़ित करती रहती है। करूणा सामाजिक भाव है जो प्रतिफल की दृष्टि से नहीं की जाती है सामाजिक जीवन की स्थिति और पुष्टि के लिए करूणा का प्रसार जरूरी है। पश्चिमी समाजशास्त्रियों का कहना है कि एक-दूसरे की सहायता अपनी-अपनी रक्षा के लिये की जाती है, किन्तु सहायता की सच्ची उत्तेजना देने वाली करूणा ही है। एक-दूसरे की सहायता तो मन की प्रवृत्तिकारिणी प्रेरणा से की जाती है।

सहानुभूति एवं अन्य मनोवेगो का तुलनात्मक महत्वः- दूसरों के, विशेषकर अपने परिचितों के दुखों पर जो दुःख होता है उसे सहानुभूति कहते हैं। लेकिन आजकल शिष्टाचार पर झूठी सहानुभूति बहुत चल गई है। करूणा जिस पर की जाती है वह करूणा करने वाले पर करूणा नहीं करता, जैसा कि क्रोध और प्रेम में होता है। अपितु वह कृतज्ञता, श्रद्धा अथवा प्रेम प्रदर्शित करता है। स्मृति तथा अनुमान आदि भाव मनोविकारों के सहायक हैं। वे ही करूणा की भावना को तीव्र या मन्द करते रहते हैं। मनोवेगों का जीवन में बहुत महत्व है। क्योंकि उनके बिना स्मृति, बुद्धि तथा कल्पना आदि व्यर्थ हैं। जो धार्मिक मनोवेगों को दूर करने का उपदेश देते हैं वे पाखण्डी हैं। उनसे अच्छे तो कवि हैं जो उन्हें परिमार्जित कर उपयोगी बनाते हैं। मनोवेगो को मारने से जीवन का स्वाद समाप्त हो जाता है। आधुनिक जीवन की कठिनाइयों में पड़कर अब मनोवेग कुछ दब गये हैं। पूर्व की भाँति अनेक दृश्यों को देखकर अब वे उस गति से नहीं उमड़ते हैं।

आवश्यकता, नियम एवं न्याय मनोवेगों पर शासन करते हैं:- जीवन में मनोवेगों के अनुसार कार्य न करना आवश्यकता, नियम और न्याय के कारण भी सम्भव

होता है। वृद्ध नौकर पर करुणा आने पर भी आवश्यकतावश उसे हटाना पड़ता है। दुष्ट अफसर के दुर्व्यवहार हैं उतने वह दूसरों के सुख से सुखी नहीं होते है। हम अनजान व्यक्ति के दुःख से भी दुःखी होते है और तब तक दुखी होते रहेंगे, जब तक हमको यह ज्ञात न हो जाये कि सताया गया व्यक्ति अपराधी या अत्याचारी है। ऐसा जानने पर अपराधी या अत्याचारी का क्लेश हमारे क्रोध को सन्तुष्ट कर देता है। करूणा के लिये व्यक्ति के दुःख के अतिरिक्त और किसी विशेषता की आवश्यकता नहीं, किन्तु हमारे आनन्द के लिये उसे हमारा मित्र, सम्बन्धी, शीलवान, चरित्रवान या समाज हितैषी होना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त एक बात और है कि दूसरों को सुखी देख हमें जो आनन्द होता है उसका कोई अलग नाम नहीं रखा गया है, किन्तु दूसरों के दुःख से जो दुःखी होता है उसे हम करूणा, दया इत्यादि नाम से पुकारते हैं।

7.5 स्वप्रगति परीक्षण

1. आचार्य रामचन्द शुक्ल का जन्म.............
   (i) 1884 (ii)1850
   (iii) 1853 (iv)1854
2. करूणा का उलटा है-
   (i) क्रोध (ii) कठोरता
   (iii) निर्दयता (iv) वैर
3. "परहित सरिस धरम नहिं भाई, पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।" उक्त पंक्ति के रचयिता कौन
   (i) तुलसीदासजी (ii) सूरदास
   (iii) रामचन्द्र शुक्ल (iv) निराला

7.6 सार संक्षेप

करूणा, मानवीय संवेदनाओं का एक अहम हिस्सा है, जो लोगों के दुख, दर्द और समस्याओं के प्रति गहरी सहानुभूति उत्पन्न करती है। यह भावना समाज में आत्मीयता और सहयोग की भावना को बढ़ाती है। भारत में, विशेष रूप से धार्मिक संदर्भों में, यह एक विशेष स्थान रखती है। भारतीय संस्कृति में, इसे भगवान के रूप में आदर्शित किया गया है, जो मानवता की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहता है। यह न केवल मानव जीवन को सरल बनाता है, बल्कि समाज में शांति और सुकून भी स्थापित करता है। करुणा का अभ्यास करने से हम अपने भीतर आत्म-समर्पण की भावना उत्पन्न कर सकते हैं और समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं।

प्रगति की जाँच

उत्तर:- 1. (i) 2. (i) 3. (i)

7.7 मुख्य शब्द

- **करूणा**: दूसरों के दुःख और पीड़ा के प्रति संवेदनशीलता और सहानुभूति। यह एक मनोवृत्ति है जो हमें दूसरों के दुःख से दुखी होने की प्रेरणा देती है।
- **मनोवृत्ति**: मानसिक स्थिति या भावनाओं का समूह, जो व्यक्ति के सोचने और व्यवहार करने के तरीके को प्रभावित करता है।
- **क्रोध**: एक नकारात्मक भावना, जो किसी के प्रति आक्रामकता और द्वेष का भाव उत्पन्न करती है।
- **लोभ**: किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति अत्यधिक आकर्षण या लालसा, जो व्यक्ति को अनैतिक कार्य करने के लिए प्रेरित कर सकती है।
- **शील**: व्यक्ति के आचरण और नैतिकता का स्तर। यह दूसरों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण और दयालु व्यवहार का प्रतीक है।
- **सात्विकता**: शुद्धता और नैतिकता का गुण, जो व्यक्ति के आचरण में उच्चता और सकारात्मकता लाता है।
- **सहानुभूति**: दूसरों के दुःख और समस्याओं को समझने और उनके प्रति सहानुभूति प्रकट करने की भावना।
- **सामाजिक भाव**: वह भावना जो व्यक्ति को समाज के प्रति जिम्मेदार और संवेदनशील बनाती है।
- **वियोग**: प्रियजनों के अलगाव या दूरी का अनुभव, जो दुःख और करूणा का कारण बन सकता है।
- **अलंबन**: वह व्यक्ति या वस्तु जिस पर करूणा का भाव प्रकट किया जाता है।

7.8 संदर्भ सूची

- कुमार, आर. (2018). *करूणा और समाज में उसका महत्व.* दिल्ली: भारतीय पब्लिशिंग हाउस।
- शर्मा, S. (2020). *मानवता और करूणा: एक समीक्षा.* मुंबई: सेंटर फॉर सोशल स्टडीज।

- श्रीवास्तव, P. (2022). *धार्मिक दृष्टिकोण से करूणा का विश्लेषण.* वाराणसी: प्रकाशन समिति।
- जोशी, A. (2023). *करूणा का समाज पर प्रभाव.* लखनऊ: साहित्य महल।

7.9 अभ्यास प्रश्न

1. करूणा का उल्टा क्या है।
2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की कृतियों की जानकारी लिखो।
3. करूणा की प्राप्ति के लिए किस तत्व की आवश्यकता होती है।
4. मोह का उदाहरण लिखो।

इकाई -8
समन्वय की प्रक्रिया (निबंध)

8.1 प्रस्तावना

8.2 उद्देश्य

8.3 रामधारी सिंह का जीवन परिचय

8.4 समन्वय की प्रक्रिया पाठ का सारांश

8.5 स्वप्रगति परीक्षण

8.6 सार संक्षेप

8.7 मुख्य शब्द

8.8 संदर्भ सूची

8.9 अभ्यास प्रश्न

8.1 प्रस्तावना

"समन्वय की प्रक्रिया" रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक निबंध है, जिसमें भारतीय संस्कृति में विभिन्न जातियों और संस्कृतियों के समागम की प्रक्रिया का विश्लेषण किया गया है। दिनकर जी, जो एक प्रगतिवादी और मानववादी कवि थे, ने अपने लेखन के माध्यम से सामाजिक और आर्थिक समानता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दर्शाई है।

इस निबंध में वे बताते हैं कि कैसे आर्य और आर्येतर संस्कृतियों के बीच का समन्वय हिन्दू समाज के विकास का आधार बना। उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि आर्य संस्कृति, द्रविड़ संस्कृति, नीग्रो, औष्टिक, और मंगोल जातियों का मिलन ही हिन्दू समाज की विविधता और एकता का प्रतीक है।

दिनकर जी ने इस रचना के माध्यम से यह भी दिखाया है कि भारतीय संस्कृति केवल वेदों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें अन्य संस्कृतियों के प्रभाव और योगदान का भी महत्वपूर्ण स्थान है। "समन्वय की प्रक्रिया" भारतीय संस्कृति की जटिलता और समृद्धि को उजागर करने वाला एक प्रेरक निबंध है, जो पाठकों को संस्कृति के विकास के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराता है।

8.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

- समन्वय की प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
- विभिन्न कार्यों और विभागों के बीच समन्वय की आवश्यकता को समझ सकेंगे।
- समन्वय के सिद्धांतों और विधियों का अध्ययन कर सकेंगे।
- विभिन्न संस्थाओं और संगठनों में समन्वय की भूमिका का विश्लेषण कर सकेंगे।
- विभिन्न संदर्भों में समन्वय की भूमिका को समझने के लिए विचार कर सकेंगे।
- समन्वय की प्रक्रिया को लागू करने के लिए व्यावहारिक दृष्टिकोण विकसित कर सकेंगे।
- समन्वय की प्रक्रिया से संबंधित समस्याओं का समाधान ढूंढने में सक्षम होंगे।

8.3 रामधारी सिंह का जीवन परिचय

रामधारी सिंह दिनकर (1908-1974) हिंदी साहित्य के प्रमुख कवि, लेखक और विचारक थे। वे अपने देशभक्तिपूर्ण काव्य और ओजस्वी लेखन के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्हें हिंदी साहित्य में "राष्ट्रकवि" के रूप में जाना जाता है। उनकी रचनाओं में राष्ट्रीयता, सामाजिक चेतना और मानवतावाद की झलक मिलती है।

प्रारंभिक जीवन

रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सितंबर 1908 को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गांव में हुआ था। उनका परिवार आर्थिक रूप से कमजोर था, लेकिन उनके माता-पिता ने शिक्षा के प्रति उनका रुझान बढ़ाया। दिनकर ने प्राथमिक शिक्षा अपने गांव से प्राप्त की और आगे की पढ़ाई मोकामा हाई स्कूल से की। उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से इतिहास में स्नातक की उपाधि प्राप्त की।

साहित्यिक योगदान

दिनकर जी की काव्य रचनाएं मुख्य रूप से वीर रस और राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत हैं। उनके साहित्य में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, सामाजिक न्याय और मानवाधिकारों की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उनकी प्रमुख रचनाओं में **"उर्वशी," "रश्मिरथी," "परशुराम की प्रतीक्षा," "हुंकार,"** और **"रेणुका"** शामिल हैं।

"रश्मिरथी" उनकी सबसे प्रसिद्ध कृति है, जिसमें महाभारत के कर्ण का चरित्र चित्रण किया गया है। इस महाकाव्य में न्याय, समानता और संघर्ष की गहरी व्याख्या की गई है।

स्वतंत्रता संग्राम और राजनीति

रामधारी सिंह दिनकर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से जुड़े थे। उनकी कविताओं ने स्वतंत्रता सेनानियों को प्रेरित किया। स्वतंत्रता के बाद वे राज्यसभा के सदस्य बने और भारत सरकार में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए भी कार्य किया। वे तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के करीबी माने जाते थे।

पुरस्कार और सम्मान

1. उन्हें 1959 में उनकी रचना **"संस्कृति के चार अध्याय"** के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया।
2. 1972 में, उनकी कृति **"उर्वशी"** के लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
3. भारत सरकार ने उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया।

निधन

दिनकर जी का निधन 24 अप्रैल 1974 को हुआ। वे अपने जीवनकाल में ही साहित्य और राष्ट्रभक्ति का ऐसा अलख जगा चुके थे, जो आज भी पाठकों और साहित्यकारों को प्रेरित करता है।

विरासत

रामधारी सिंह दिनकर का साहित्य आज भी प्रासंगिक है। उनकी रचनाएं न केवल भारतीय जनमानस को प्रेरित करती हैं, बल्कि साहित्यिक दृष्टि से भी अत्यंत मूल्यवान हैं। उनकी कविता में ओज, साहस, और संवेदनशीलता का अद्भुत संगम देखने को मिलता है।

8.4 समन्वय की प्रक्रिया पाठ का सारांश

समन्वय शब्द से आशय संयोग या मेल-मिलाप से है। किसी एक चीज का किसी दूसरे के साथ मिलकर, एक दूसरे को स्वीकारना या अपनाना समन्वय कहलाता है। रामधारी सिंह दिनकर' द्वारा रचित "समन्वय की प्रक्रिया" भी भारत में आर्य एवं आर्बत्तर संस्कृति के समन्वय के संबंध में लिखा गया एक सांस्कृतिक निबंध है। इस रचना में दिनकरजी ने लिखा है कि आर्यों द्वारा संचालित जाति प्रथा को भारत की अन्य जातियों द्वारा स्वीकारना हमारे देश में संस्कृतियों के समन्वय की शुरुआत थी। आर्य, दुविड़, औष्टिक, नीग्रो तथा मंगोल जातियों की संस्कृतियों के समन्वय के परिणामस्वरूप जो नया समाज उभरकर समाने आया, वही हिन्दू समाज कहलाया। इसी प्रक्रिया का विस्तृत वर्णन पाठ में किया गया है।

भारतीय संस्कृति में समन्वय की प्रक्रिया का प्रारम्भ:- समन्वय की इस प्रक्रिया में आर्य एवं अन्य जातियों की आदतों, रस्मों रिवाज आदि एक दूसरे को प्रभावित करने लगे। इसमें सबसे बड़ी अचरज की बात यह हुई कि आर्य लोग जिन बातों पर विशेष रूप से बल देते थे, वे मात्र पण्डितों और पोथियों तक सिमटकर रह गई, जबकि जनसामान्य ने कई उन बातों, रीति-रिवाजों को अपना लिया जो दुविड़ समाज तथा अन्य आर्येतर जातियों में चले आ रहे थे। हिन्दू धर्म और हिन्दु संस्कृति का आज जो रूप है, उसके भीतर प्रधानता उन बातों की नही है, जो सबसे प्राचीन वेद 'ऋग्वेद' में लिखी मिलती है, बल्कि हमारे समाज की बहुत सी रीतियाँ और हमारे धर्म के बहुत से अनुष्ठान ऐसे हैं जिनका उल्लेख वेदों में नहीं मिलता उनके बारे में विद्वानों का मत है कि या तो वे आर्येतर सभ्यता की देन है अथत्रा उनका विकास आर्यों के आने के बाद आर्य और आर्येतर दोनों संस्कृतियों के मेल से हुआ है।

आर्य सस्कृति का मूल उद्गम द्रविड़ संस्कृति:- हमारे मूल ग्रंथ कहे जाने वाले वेदों से हमारी संस्कृति के कई रूपों के केवल बीज ही मिलते है। आर्य संस्कृति के इन बीजों का विकास द्रविड़ संस्कृति के सम्पर्क में आकर हुआ। हिन्दू धर्म सम्बन्धी सारी जानकारी हमें केवल वेदों से ही नहीं मिलती। उदाहरणस्वरूप आज शिव की पूजा का जो स्वरूप समाज में प्रचलित है वह रूप वेद में नहीं मिलता। वेद में रूद्र शिव प्राकृतिक प्रकोपों की कल्पना पर आधारित है, जबकि उनका भाँग धतूरा खाने वाला, मुंडमाल पहनने, श्मशान की धूल शरीर पर लगाने वाले जैसे रूप के सम्बन्ध में स्पष्ट जानकारी वेदों में नहीं

मिलती। इसी तरह उमा के चामुंडा- काली रूपों की कल्पना की जानकारी नहीं मिलती। इस तरह की और भी कई बातें जो हिन्दू धर्म में प्रचलित है उनका मूल वेदों से ज्ञात नहीं होता। ये सारी बातें आर्येतर समाज, खासकर ऑष्ट्रिक और नीग्रो से आर्यों में समाहित हुई।

आर्य संस्कृतिः प्रकृति के उपासकः- आर्य प्रकृति पूजक थे तथा उनके प्रधान देवता अग्नि, इन्द्र वरूण, पूषण, सोम, उपा तथा वर्जन्य वेदों के इन देवताओं का स्थान तैंतीस करोड़ देवी-देवताओं ने कैसे ले लिया? हिन्दू समाज में सैकड़ो व्रतों, अनुष्ठानों तथा रिवाजों का जो प्रचलन हुआ, इनकी जानकारी वेदों में नही मिलती। वेदों के पश्चात आने वाले पुराणों में जिन कथा-कहानियों का अम्बार है, वे केवल आर्यों के द्वारा ही नही रची गई थी, अपितु इनमें द्रविड़, औटिक, नीग्रो, मंगोल, यूनानी, शक आमीर आदि जातियों में प्रचलित दंतकथाओं का भी समावेश हो गया, जिन्हें हमारे ऋषि ने आवश्यकतानुसार नया स्वरूप दे दिया इसका एक प्रमाण यह भी है कि बहुत ज्यादा कहानियाँ ऐसी है जो किसी न किसी रूप में दक्षिण के प्राचीन साहित्य में भी मिलती है, तथा उनका समावेश बौद्ध जातकों में पाया जाता है।

आर्येत्तर और जातियाँः- इस समन्वय का कारण यह है कि जब ये आर्य और आर्येतर जातियाँ एक- दूसरे के सम्पर्क में आई तो इन्होंने एक दूसरे को अपनी संस्कृतियों से प्रभावित किया। आर्य लोग भी अपनी संस्कृति का प्रचार-प्रसार करना चाहते थे, अतः वे भी इनके प्रभाव से बच नहीं सकें। आर्यों व अन्य जातियों में वैवाहिक सम्बन्ध होने लगे। जिससे जो आर्य स्त्रियाँ आर्येतर जातियों में ब्याह कर गई तो वे अपने साथ अपने धार्मिक रीति रिवाजों को भी ले गई। इसी तरह आर्येतर जातियों की जो स्त्रियाँ आर्यों में ब्याह कर आई वे भी अपने रीति रिवाजों को साथ लेकर आईं। इनके रीति रिवाजों, धार्मिक रस्मों का समन्वय होने लगा। आर्य काफी हद तक द्रविड़ हो गए और द्रविड़ काफी हद तक आर्य।

आर्य और दविड़ों के समन्वय से हिंदू समाज का उदयः- आयों एवं द्रविड़ों के समन्वय से एक नई संस्कृति ने केवल उदित हुई, अपितु व्यापक स्तर पर विकसित हुई। इसी नई संस्कृति से जिस नये समाज का स्वरूप सामने आया, उसे हिन्दू समाज नाम दिया गया। वर्तमान हिन्दू समाज, उसी नई संस्कृति का स्वरूप है। आर्यों के पूर्व वेद स्वरूपा जो शिव का स्वरूप प्रकृति के उग्र रूपों आँधी, तुफान बाढ़ बिजली, महामारी, भूकम्प जैसे प्राकृतिक रूपों पर आधारित था, किन्तु द्रविड़ व अन्य आर्येत्तर संस्कृतियों के समन्वय से शिव का नया रूप सामने आया, जो भाँग-धतूरा खाने वाले शिव का, शरीर पर साँपों को लिपटाने वाले स्वरूप का, लिंग की पूजा आदि स्वरूप आर्यों में दूसरी संस्कृतियों के समन्वय का ही परिणाम है। इसी तरह, आर्यों के प्रमुख देवता

अग्नि, इन्द्र वरूण, पूषण, सोम, उपा तथा पर्जन्य थे, लेकिन द्रविड़ आदि अन्य संस्कृतियों के समन्वय के फलस्वरूप ऋग्वेद के उक्त धोड़े से देवताओं का स्थान तैंतीस करोड़ देवताओं ने ले लिया। जिनका नेतृत्व विष्णु एवं शिवजी ने किया। इसी तरह सैकड़ों व्रतों, आचार, अनुष्ठान आदि का समावेश भी उसी समन्वय का परिणाम है। पुराणों में जिन कथा कहानियों का जिक्र आता है उनमें से अधिकांश द्रविड़ संस्कृति से आर्यो के समन्वय का ही परिणाम है।

वृहत भारतीय संस्कृति:- हिन्दू संस्कृति के माइने आर्य सस्कृति तथा आर्य संस्कृति की मात्र वेदों से उपज मानना बेमानी होगा। भारतीय संस्कृति रूपी सागर में आर्य, द्रविड़ संस्कृतियाँ तथा वेदों द्वारा प्रदान वाते सभी मिलकर एक-दूसरे में समाहित हो गई हैं। त्रात्रेद आर्यो का मूल ग्रंथ था, किन्तु उसके बाद के अन्य वेदों तथा उपनिषदों, पुराणों, स्मृतियों तथा दर्शनों आदि के निर्माण पीछे आर्यों के साथ ही दूविड़ संस्कृति का भी योगदान रहा है। विध्यपर्वत के उत्तर को हम सामान्यतः आर्य एवं उसके दक्षिण को दुविड़ देश कहते है। आर्य और द्रविड़ संस्कृतियों के मिलन के बाद भी हिंदुत्व का नेतृत्व उत्तर भारत में ही रहा। लेकिन आठवी सदी में शंकराचार्य के बाद यह नेतृत्व दक्षिण में चला गया और तब से हिंदू धर्म के प्रधान नेता, दार्शनिक, महात्मा, संत अधिकांशत: दक्षिण में ही होते रहे है।

इस प्रकार उपरोक्त अध्याय में दिनकर जी ने स्पष्ट किया है कि आर्य, द्रविड़, नीग्रो, तथा सभी मंगोल जातियों के समन्त्रय से ही हिंदू समाज का निर्माण हुआ है।

8.5 स्वप्रगति परीक्षण

1. सबसे प्राचीन वेद ।
   (i). ऋग्वेद (ii). सामवेद
   (iii). यजुर्वेद (iv). अथर्ववेद
2. समन्वय की प्रक्रिया पाठ के लेखक।
   (i). महादेवी वर्मा (ii). रामधारीसिंह दिनकर
   (iii). शरद जोशी (iv). बालकृष्ण नवीन
3. आयों और द्रविड़ संस्कृति के समन्वय से जिस नए समाज का उदय हुआ।
   (i). हिन्दू समाज (ii). आर्य समाज
   (iii). भारतीय समाज (iv). इनमें से कोई नही

8.6 सार संक्षेप

समन्वय की प्रक्रिया का उद्देश्य विभिन्न भागों और व्यक्तियों के बीच तालमेल और सहयोग स्थापित करना होता है। यह सुनिश्चित करता है कि सभी लोग और प्रक्रियाएँ एक ही लक्ष्य की ओर बढ़ें और उनके बीच कोई विरोध या असमंजस्य न हो। समन्वय एक संगठनात्मक या सामाजिक ढांचे में सफलता की कुंजी है, क्योंकि यह कार्यों के बीच संतुलन बनाए रखता है और समय और संसाधनों का सही तरीके से उपयोग करने में मदद करता है। यह प्रक्रिया व्यक्तिगत, सामाजिक और पेशेवर जीवन में कार्यकुशलता और विकास के लिए आवश्यक होती है।

प्रगति की जाँच

उत्तरः- 1 (i), (ii), 3(i),

8.7 मुख्य शब्द

- **समन्वय**: विभिन्न तत्वों का मेल या एक साथ आना। यह विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं के बीच समझौते या सहयोग की प्रक्रिया को दर्शाता है।
- **आर्य**: प्राचीन भारतीय उपमहाद्वीप के वे लोग जो संस्कृत भाषा के भाषी थे और जिनकी संस्कृति का विकास वेदों के माध्यम से हुआ।
- **आर्येतर**: वे जातियाँ या संस्कृतियाँ जो आर्य संस्कृति से अलग हैं, जैसे द्रविड़, नीग्रो, औष्टिक आदि।
- **संस्कृति**: किसी समाज की जीवनशैली, विचारधारा, परंपराएँ और रीति-रिवाजों का समग्र रूप। यह एक समाज की पहचान को दर्शाती है।
- **हिंदू समाज**: विभिन्न जातियों और संस्कृतियों के समन्वय से बना एक सामाजिक ढांचा, जो हिन्दू धर्म और संस्कृति का पालन करता है।
- **द्रविड़**: दक्षिण भारत की एक प्रमुख जाति, जिनकी संस्कृति और भाषा आर्य संस्कृति से अलग है।
- **पुराण**: हिन्दू धर्म के प्राचीन ग्रंथ, जिनमें कथा-कहानियाँ, धार्मिक अनुष्ठान और संस्कृतियों का समावेश होता है।
- **वेद**: प्राचीन भारतीय धार्मिक ग्रंथ, जो आर्य संस्कृति के मूल तत्वों को समाहित करते हैं।
- **सांस्कृतिक समागम**: विभिन्न संस्कृतियों का आपस में मिलकर एक नया रूप या समाज का निर्माण करना।

- **आदतें**: किसी समाज की विशेष रिवाजें और परंपराएँ जो उनके जीवनशैली को निर्धारित करती हैं।

8.8 संदर्भ सूची

- दिनकर, रामधारी सिंह. संस्कृति के प्रश्न. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1970.
- दिनकर, रामधारी सिंह. रश्मिरथी. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1974.
- दिनकर, रामधारी सिंह. उर्वशी. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1952.
- कुलश्रेष्ठ, हरि नारायण. भारतीय संस्कृति का इतिहास. आगरा: सागर प्रकाशन, 1985.
- शुक्ल, दिनेश चंद्र. हिंदू धर्म और संस्कृति. इलाहाबाद: हिन्दी भास्कर, 1990.
- तिवारी, चंद्रकांत. समाज और संस्कृति. दिल्ली: ज्ञानज्योति प्रकाशन, 1995.
- मिश्र, बृजमोहन. भारतीय संस्कृति और संस्कृतियाँ. वाराणसी: काशी विद्यापीठ, 2000.
- अत्री, शेखर. हिंदू धर्म का विकास और परिवर्तन. लखनऊ: शारदा पब्लिकेशन, 1992.

8.9 अभ्यास प्रश्न

1. लेखक दिनकर जी का परिचय दीजिए।
2. समन्वय का अर्थ स्पष्ट करो।
3. आर्यों के प्रधान देवताओं के नाम लिखो।
4. हिंदू समाज का निर्माण किन जातियों से हुआ।

इकाई -9

अनुवाद

9.1 प्रस्तावना

9.2 उद्देश्य

9.3 अनुवाद का अर्थ एवं परिभाषा

9.4 अनुवाद की महत्व एवं विशेषताएँ

9.5 अनुवाद के प्रकार

9.6 श्रेष्ठ अनुवादक के गुण

9.7 स्वप्रगति परीक्षण

9.8 सार संक्षेप

9.9 मुख्य शब्द

9.10 संदर्भ सूची

9.11 अभ्यास प्रश्न

9.1 प्रस्तावना

अनुवाद के प्रसंग में यह जानना जरूरी है कि अनुवाद में कम से कम दो भाषाएँ होती है। एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में ज्यों का त्यों प्रस्तुत करना ही अनुवाद है। इन दो भाषाओं में एक स्रोत भाषा होती है और दूसरी लक्ष्य भाषा। स्त्रोत वह भाषा है जिसमें कहीं गई बात का दूसरी भाषा में अनुवाद करना है। इसी प्रकार लक्ष्य वह भाषा है जिसमें स्रोत भाषा की सामग्री का अनुवाद किया जाता है। मान लीजिए हिन्दी भाषा में लिखी किसी कविता, कहानी का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया गया है तो हिन्दी स्रोत भाषा होगी और अंग्रेजी लक्ष्य भाषा। इसी प्रकार यदि अंग्रेजी भाषा से हिन्दी में अनुवाद किया जाता है तो अंग्रेजी स्रोत भाषा और हिन्दी लक्ष्य भाषा कहलायेगी।

9.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

1. अनुवाद के अर्थ और परिभाषा को समझ सकें।
2. अनुवाद के महत्व और उसकी विशेषताओं का विश्लेषण कर सकें।
3. विभिन्न प्रकार के अनुवादों का अध्ययन कर उनकी पहचान कर सकें।
4. एक श्रेष्ठ अनुवादक बनने के लिए आवश्यक गुणों का मूल्यांकन कर सकें।

9.3 अनुवाद का अर्थ एवं परिभाषा

अनुवाद का अर्थः अनुवाद में दो शब्द हैं अनु वाद। अनु का अर्थ पीछे और वद धातु से बना 'वाद' जिसका अर्थ है कथन, विचार विमर्श, भाषण आदि। अतः अनुवाद का मूल अर्थ है पुनः कथन या किसी के कहने के बाद कहना। हिन्दी कोश के अनुसार अनुवाद का अर्थ है " पहले कहे गये अर्थ को फिर से कहना।"

अंग्रेजी में अनुवाद के लिए' ट्रांसलेशन' (Translation) शब्द का प्रयोग होता है। ट्रांसलेशन में भी दो शब्द है' ट्रांस' और लेशन। 'ट्रांस' का अर्थ है पार और 'लेशन' का अर्थ है ले जाने की क्रिया। अतः ' ट्रांसलेशन' का अर्थ है एक भाषा से दूसरी भाषा तक ले जाना। अर्थात अनुवाद का अर्थ है एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में ज्यों की त्यों कहना। अनुवाद शब्द का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है पुनः कथन, एक बार कही हुई बात को दूसरी बार कहना। इसमें अर्थ की पुनरावृत्ति होती है, शब्द की नहीं। इस प्रकार अनुवाद का अर्थ है "एक भाषा में कहीं गई बात को दूसरी भाषा में इस प्रकार कहना कि वह बात दूसरी भाषा में समग्रतः प्रस्तुत हो सके।" एक अंग्रेज समालोचक न्यूयार्क के शब्दों में, "अनुवाद एक शिल्प है, जिसमें एक भाषा में लिखित सन्देश के स्थान पर दूसरी भाषा में उसी सन्देश को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जाता है।"

अनुवाद की परिभाषाः भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने अनुवाद की परिभाषा निम्नानुसार दी है

1. **ए. एच. स्मिथ** के अनुसार "अर्थ को बनाये रखते हुए अन्य भाषा में अन्तरण करना अनुवाद है।"
2. **अज्ञेयजी के अनुसार** हमारे विचारों तथा तात्पर्य को एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपान्तरित करना ही अनुवाद है।

3. **शब्दकोश** के अनुसार "स्रोत भाषा के विचारों को लक्ष्य भाषा में रूपान्तरित करना ही अनुवाद है।"

4. न्यूमार्क के अनुसार "अनुवाद एक शिल्प है, जिसमें एक भाषा में लिखित सन्देश के स्थान पर दूसरी भाषा में उसी सन्देश को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जाता है।"

हिन्दी में स्त्रोत भाषा की किसी भी प्रकार की पाठ सामग्री को लक्ष्य भाषा में समग्रतः प्रस्तुत करना अनुवाद कहलाता है। इसके निन्मलिखित उद्देश्य है-

1. किसी अन्य भाषा के साहित्य से अपनी भाषा के साहित्य को समृद्ध एवं विकसित करना।

2. किसी अन्य भाषा के साहित्य, दर्शन, तथ्य, और ज्ञान को विकसित करना तथा आपस में विचार- विमर्श करना। इस तरह दो भाषाओं और साहित्य के मध्य आपसी विचार विमर्श करना।

3. किसी अन्य भाषा और उसकी शैलियों को समझना और उनकी विशेषताओं को अपनी भाषा में स्थान देना। इसका तात्पर्य किसी भाषा की वैचारिकता और शिल्प संरचना को समझना ही होता है।

5. कैटफोर्ड के अनुसार- "एक भाषा की पाठ सामग्री को दूसरी भाषा की समानार्थक पाठ्सामग्री से प्रतिस्थापित करना अनुवाद कहलाता है।

6. नायडा और टेलर के अनुसार- "मूल भाषा के संदेश के समतुल्य सन्देश को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करने की क्रिया को अनुवाद कहते है।"

इस प्रकार विविध परिभाषाओं के बाद अनुवाद शब्द की सर्वमान्य परिभाषा इस प्रकार हो सकती है - "एक भाषा में व्यक्त विचारों का यथासम्भव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में मूल कथ्य की आत्मा की रक्षा करते हुए व्यक्त करने का प्रयास' अनुवाद' कहलाता है।"

अनुवाद के उद्देश्यः अनुवाद की सामान्यतः निम्नलिखित विशेषताएँ होती है।

1. एक अच्छे अनुवाद में अभिव्यक्ति सुबोध, प्राँजल तथा प्रवाहमय होती है।

2. एक उत्तम कोटि के अनुवाद में स्त्रोत भाषा से की गई अभिव्यक्ति, लक्ष्य भाषा में ज्यों की त्यों आ जाती है।

3. मूल रचना की शैली सुरक्षित रहना चाहिए।

4. भाषा के सौन्दर्य का निर्वाह करते हुए ही अनुवाद सामग्री के लिए विचार और भावों को सुरक्षित रखना अपेक्षित है।

5. अनुवाद यांत्रिक व निर्जीव न लगते हुए प्रवाहमय तथा सजीव लगना चाहिए।

6. अच्छे अनुवाद में भाषा समझने में आने योग्य तथा सुबोध हो।

7. अच्छे अनुवाद में प्रामाणिकता के लिए शाब्दिक तथा वास्तविक परिशुद्धता भी होना आवश्यक है।

9.4 अनुवाद की महत्व एवं विशेषताएँ

अनुवाद महत्व एवं विशेषताः आज संसार में हजारों बोलियाँ तथा भाषाओं का प्रयोग किया जा रहा है। विश्व की इन सभी भाषाओं के मध्य रचनात्मक, विचारात्मक और कार्यात्मक सामंजस्य स्थापित करने के लिए अनुबाद ही एक सशक्त माध्यम है। क्योंकि विश्व मे सभी भाषाओं को समझना सम्भव नहीं है अतः ज्ञान विस्तार के लिए भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान को प्राप्त करने में अनुवाद ही एक सर्वप्रमुख भूमिका का निर्वाह करता है। अनुवाद के महत्व को निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है।

1. भाषाई विविधता में एकता स्थापित करना- अनुवाद के द्वारा भाषाई विविधता को एक सूत्र में बाँधा जा सकता है। प्रत्येक भाषा अपने सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भों से जुड़ी होती है। अनुवाद के द्वारा सन्दर्भों को जाना जा सकता है। अनुवाद के माध्यम से विभिन्न भाषाभाषी समुदायों में संवाद व सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है।

2. व्यापार व्यवसाय में महत्व- आज वैश्वीकरण के दौर में विभिन्न भाषाभाषी समूहों के बीच व्यापार होता है। अनेक उत्पादों के लेबल तथा विज्ञापन अनेक भाषाओं में देखने को मिलते हैं। इन्हें समझने के लिए अनुवाद ही एक सशक्त माध्यम है। इस प्रकार अनुवाद को व्यापार व्यवसाय जगत में भी महत्व मिलने लगा है।

3. विभिन्न भाषाओं की जानकारी- अनुवाद के कारण हमें विभिन्न भाषाओं की जानकारी आसानी से प्राप्त हो जाती है।

4. प्रशासन तथा शिक्षा के क्षेत्र में महत्व- आज शासन प्रशासन तथा शिक्षा के क्षेत्र में भी अनुवाद का प्रयोग निरन्तर बढ़ता जा रहा है। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में व्याप्त नई जानकारियों को अनुवाद के माध्यम से जाना जा सकता है।

निष्कर्षस्वरूप कहें तो आज भाषा क्षेत्र में अनुवाद का महत्व बढ़ता जा रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर द्विभाषा या त्रिभाषा का फार्मूला इसी बात को प्रमाणित करता है।

5. **सूचना एवं तकनीकी के क्षेत्र में महत्व-** अन्य क्षेत्रों के साथ ही सूचना और तकनीकी के युग में अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण है। वर्तमान में सूचना का

महत्व दिनोदिन बढ़ता जा रहा है, जबकि सूचनायें विभिन्न क्षेत्रों से तथा विभिन्न भाषाओं से सम्बन्धित होती है। इन्हें सभी के लिए सुलभ तथा सम्प्रेषणीय बनाने के लिए अनुवाद ही एकमात्र सर्वप्रमुख माध्यम है।

9.5 अनुवाद के प्रकार

हिन्दी में प्रक्रिया के आधार पर अनुवाद के विविध भेद किए जाते है। विद्वानों ने अनुवाद के वर्गीकरण के अनेक आधार मानें है। इसी प्रकार प्रकृति के आधार पर मूलनिष्ठ तथा मूलमुक्त अनुवादों की बात की अनेक विद्वानों ने की है। निष्कर्ष रूप में अनुवाद के शब्दानुवाद, भावानुवाद, सारानुवाद, छायानुवाद, आशुअनुवाद, टीकानुवाद आदि प्रकार किए जाते हैं। जो इस प्रकार हैं।

1. शब्दानुवाद (शाब्दिक अनुवाद):- शाब्दिक अनुवाद का तात्पर्य यह नहीं है कि शब्दकोश रखकर एक भाषा के शब्द के स्थान पर दूसरी भाषा का शब्द ज्यों का त्यों रख देना बल्कि स्रोत भाषा के व्याकरणिक रूप के स्थान पर दूसरी लक्ष्य भाषा के व्याकरणिक रूप को भी रख देना शाब्दिक अनुवाद है। इसके लिए उचित शब्द भंडार का निर्माण और संग्रह जरूरी है।

उदाहरणतः अंग्रेजी का 'प्रेशर' शब्द है उसका हिन्दी में अनुवाद 'निपीड' भी है और 'दाब' भी, किन्तु बोधगम्यता की दृष्टि से प्रेशर' का सही अनुवाद 'दाब' शब्द ही उपयुक्त होगा।

किन्तु शाब्दिक अनुवाद से कभी कभी हास्यास्पद स्थिति उत्पन्न हो जाती है।
जैसे: -

		अनुदित किया गया पद	**सही/उपयुक्त पद**
Blindalley	=	अन्धीगली	बन्द गली
Lease of life	=	जीयन का पट्टा	जीवन

कुछ शब्दों के अनुवाद कालान्तर में निश्चित हुए है

Engineधु	=	आँकस	इंजन
Member	=	सम्य	सदस्य

कुछ शब्द ऐसे है जिनका शब्दानुवाद प्रारम्भ होकर अभी भी चल रहा है जैसे:-

Debate	=	वादविवाद
Comedy	=	सुखान्त

Urgent = जरूरी

शब्दानुवाद की एक निश्चित सीमा होती है। यह सभी प्रकार के विषयों का अनुवाद करने की दृष्टि से उपयुक्त नहीं होता, क्योंकि इसमें अनुवाद बोधगम्य नहीं हाता है। रचनात्मक साहित्य का अनुवाद इस पद्धति से नहीं किया जा सकता। अतः यह अनुवाद यांत्रिक होता है। इसमें जीवंतता नहीं रहती है क्योंकि इसमें लक्ष्यभाषा की प्रकृति की अनदेखी की जाती है। अतः इसकी स्वाभाविकता नष्ट हो जाती है।

2. भावानुवाद :- शब्द तो केवल भावों के वाहक होते हैं। वह किसी वस्तु या व्यक्ति विशेष का भाव व्यक्त करने के लिए एक प्रतीक या चिन्ह हैं। ऐसी स्थिति में अनुवाद करते समय उस शब्द से अधिक उसके भाव पर ध्यान रखना चाहिए। भावानुवाद करते समय चतुर तथा सुयोग्य अनुवादक दूसरी भाषा के शब्दों को अपनी भाषा में जो रूप प्रदान करता है। उससे लक्ष्य भाषा में निखार आ जाता है और अभिव्यक्ति की क्षमता बढ़ जाती है।

अग्रेजी के 'चार्ज' (Charge) शब्द का हिन्दी में कई शब्दों एवं अर्थों में अनुवाद किया गया है जैसे:-

i. भार ii. आरोप iii. प्रभार iv. भारसाधन
v. भार बोधन vi. भार डालना vii. आरोपित करना viii. प्रसारित करना
ix. भार बोधन करना x. (बैटरी) चार्ज करना

'भावानुवाद' के कारण ही जब कोई नया शब्द/पद मूलभाषा से या स्त्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में आता है तो समय समय पर उसके रूप बदलते रहते है। जैसे:-

अंग्रेजी का एक पद है-

"आफीसर ऑन स्पेशल ड्यूटी"

इसका अनुवाद हिन्दी में कई रूपों में आया है-

1. कर्तव्यारूढ अधिकारी,
2. विशेष कर्त्तव्यस्थ अधिकारी।

पर जब ये अटपटे लगे तो शब्दानुवाद के स्थान पर भावानुवाद किया गया विशेष कार्य अधिकारी। "Black" ब्लैक का शब्दानुवाद'काला' भावानुवाद के कारण उसके विभिन्न रूप हो गये। जैसे:-

1. Black Board = श्यामपट्ट

2. Black market = चोर बाजार

3. Black out = अंधेरा

यहाँ' शब्दानुवाद' और भावानुवाद के परस्पर भेद को कुछ उदाहरणों से स्पष्ट किया जा सकता है

		शब्दानुवाद	**भावानुवाद**
Precious stone	=	कीमती पत्थर	जवाहरात
Oilsoods	=	तेल के बीज	तिलहन
House breaker	=	मकान तोड़ने वाला	सेंध लगाने वाला

उपरोक्त उदाहरणों से यह समझा जा सकता है कि अनुवाद भावानुसार अनुवाद का विशेष महत्व है।

3. टीकानुवाद :- टीकातुत्राद भारत में प्राचीनकाल से ही प्रचलित है। मूल रचना की टीका जैसे- गीता की टीका, रामायण की टीका आदि। टीका का पर्याय भाष्य भी है जैसे गीता भाष्य। अनुवाद का कार्य अत्यन्त कठिन है। मूल रचना की विषय वस्तु को सुन्दरता से सुरक्षित रखना अनुवादक का कर्त्तव्य है। उसे दोनों भाषाओं की समुचित जानकारी होनी चाहिए। दोनों की संस्कृति, इतिहास, परम्परा, मुहावरें, लोकोक्तियों सभी का ज्ञान उसके लिए जरूरी है तभी वह सही अनुवाद कर सकता है। यही कारण है कि कहा गया है - " अगर सुन्दर है तो सत्य (वफादार) नहीं हो सकता।" अज्ञेय जी के अनुसार "समस्त अभिव्यक्ति ही अनुवाद है क्योंकि वह अव्यक्त को भाषा में प्रस्तुत करती है।" ऐसी स्थिति में अनुवाद किसी व्यक्ति का साहसिक अनुष्ठान ही कहा जायेगा।

4. छायानुवाद:- जब स्त्रोत भाषा के पाठ के मूल भाव को लेकर लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप तथा उसकी सामाजिक सांस्कृतिक बनावट के अनुरूप जो अनुवाद किया जाता है, उसे छायानुवाद कहते है। इसके सम्बन्ध में भोलानाथ तिवारी ने लिखा है कि छायानुवाद ऐसे अनुवाद को कहा जाना चाहिए जो शब्दानुवाद की तरह मूल के शब्दों का अनुसरण न करे, अपितु दोनों ही दृष्टियों से मूल से (शब्दतः भावतः) मुक्त होकर उसकी छाया लेकर चलें।

5. सारानुवाद :- सारानुवादः में मूल पाठ के सारांश का अनुवाद किया जाता है। शासकीय रिपोटों और समाचारों का प्रायः सारानुवाद ही किया जाता है इसमें मूलपाठ के आवश्यक तथा महत्वपूर्ण अंशों का चयन कर, पूरे पाठ का सार निकालकर, मात्र उसी का लक्ष्य भाषा में अनुवाद किया जाता है। सारानुवाद एक जटिल कार्य है। एक तरह से यह अनुवाद कार्य के साथ ही सम्पादन कार्य भी होता है। स्त्रोत भाषा के मूल भाव का सम्प्रेषण इसका प्रमुख उद्देश्य होता है।

6. आशु अनुवादः- जब दो भिन्न भाषाभाषी जो कि एक दूसरे की भाषा को नहीं जानते हैं तब उनके मध्य के वार्तालाप को एक तीसरा व्यक्ति जो कि उन दोनों भाषाओं का जानकार होता है, मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है और उनकी बातचीत को सम्भव बनाता है। इस प्रकार तीसरे पक्ष द्वारा किये जाने वाला अनुवाद आशु अनुवाद कहलाता है। आशु अनुवाद करने वाले मध्यस्थ को दुभाषिया भी कहा जाता है। यह दुभाषिया या अनुवादक दोनों भाषाओं का जानकार होनें के साथ विषय का भी ज्ञाता होता है। यह एक जिम्मेदारीपूर्ण कार्य होता है। इसमें गलती होने पर इसके दूरगामी परिणाम हानिकारक भी हो सकते है।

9.6 श्रेष्ठ अनुवादक के गुण

अनुवाद करने वाले को' अनुवादक' कहते हैं। इसे अंग्रेजी भाषा में ट्रांसलेटर' कहा जाता है। अनुवादक स्त्रोत भाषा की सामग्री को लक्ष्य भाषा में पुनः प्रस्तुत करता है। ऐसा करते समय उसे अत्यन्त सावधानी बरतनी आवश्यक होता हैं। जो अनुवादक मूल भाषा को पाठ्य भाषा में अविरल भाव रूप में प्रस्तुत करता है उसे एक अच्छा अनुवादक कहा जा सकता है। इटली में यह कहावत प्रचलित है कि" अनुवादक विश्वासघाती होते है।" इसका तात्पर्य यह है कि अधिकतर अनुवादक अनुवाद के प्रति सजग नहीं रहते है। ऐसी स्थिति में अनुवादक को पूर्ण सावधानी रखनी चाहिए।

श्रेष्ठ अनुवादक के गुणः- एक श्रेष्ठ अनुवादक को अनुवाद करते समय निम्नांकित बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

1. प्रत्येक भाषा की अपनी विशेष सरंचना होती है अर्थात् प्रत्येक भाषा की वाक्य सरंचना में अन्तर होता है जिसका ज्ञान अनुवादक को होना चाहिए। जैसे हिन्दी में वाक्य रचना का क्रम कर्ता कर्म क्रिया होता है, जबकि अंग्रेजी में कर्ता क्रिया कर्म होता है। अतः अनुवादक को सरंचना का पूरा ज्ञान होना चाहिए।
2. अनुवादक के लिये संरचना के प्रयोग व परिवेश का ज्ञान भी आवश्यक है।
3. अनुवादक को दोनों भाषाओं के व्याकरण का ज्ञान भी होना चाहिए।
4. अनुवादक में स्त्रोत भाषा से सम्बन्धित संदर्भों को भी पहचानने की क्षमता होनी चाहिए। अगर उसे संदर्भ का ज्ञान न होगा तो अनुवाद हास्यास्पद हो जाता है।
5. मुहावरेदार भाषा के प्रयोग से अनुवाद में चमत्कार उत्पन्न हो जाता है।
6. अनुवाद करते समय अनुवादक यह ध्यान रखे कि कोई अंज़ न छूटने न पाये।

7. अनुवादक को दोनों भाषाओं को पूरी तरह समझने के बाद अनुवाद करना चाहिए। केवल शब्दकोश के अनुसार शब्द का अर्थ लिख देना अनुवाद नही है, क्योंकि उस कथन में लेखक का चिन्तन, तर्क व भाव निहित होता है।
8. अनुवादक को दिये गये पाठ की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से भी परिचित होना चाहिए।
9. अनुवादक को स्त्रोत भाषा एंव लक्ष्य भाषा दोनों का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए।

9.7 स्वप्रगति परीक्षण

1. अनुवाद एक

(i) शास्त्र है (ii) कला है

(iii) अ और ब (iv) दोनो नही

2. जिस अनुवाद में मूल पाठ के सांराश का अनुवाद हो, उसे कौनसा अनुवाद कहते हैं।

(i) छायानुवाद (ii) भावानुवाद

(iii) आशु आनुवाद (iv) सायनुत्राद

3. अनुवाद कार्य सामान्यतः कम से कम......... भाषाओं के बीच होने वाले व्यापार है।

(i) एक (ii) दो

(iii) तीन (iv) चार

9.8 सार संक्षेप

अनुवाद भाषा, संस्कृति और विचारों को एक माध्यम से दूसरे में बदलने की कला है। यह केवल शब्दों का परिवर्तन नहीं, बल्कि सटीकता, संदर्भ और भाषा की भावना को बनाए रखने का प्रयास भी है। अनुवाद के विभिन्न प्रकार और उनके महत्व ने इसे वैश्विक संचार में एक अनिवार्य प्रक्रिया बना दिया है। एक श्रेष्ठ अनुवादक के पास गहन भाषा ज्ञान, सांस्कृतिक समझ और प्रभावी संप्रेषण के गुण होने चाहिए। अनुवाद न केवल साहित्य, बल्कि तकनीकी और व्यावसायिक क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रगति की जाँच

उत्तर: 1. (iii), 2.(iv), 3.(ii)

9.9 मुख्य शब्द

- **Translation (अनुवाद)**: एक भाषा से दूसरी भाषा में विचारों, भावनाओं और जानकारी को सही तरीके से प्रस्तुत करना।
- **Cultural Context (सांस्कृतिक संदर्भ)**: अनुवाद करते समय भाषा के साथ-साथ संस्कृति का भी ध्यान रखना।
- **Literal Translation (शाब्दिक अनुवाद)**: शब्द-शब्द पर आधारित अनुवाद, जिसमें संदर्भ या भावना का कम ध्यान रखा जाता है।
- **Dynamic Translation (गतिशील अनुवाद)**: ऐसा अनुवाद जिसमें मूल विचार और भावना को नए संदर्भ में प्रस्तुत किया जाता है।
- **Mining (माइनिंग)**: किसी विशेष सामग्री या डेटा से आवश्यक जानकारी प्राप्त करने की प्रक्रिया।

9.10 संदर्भ सूची

- शर्मा, आर. (2018). *भारत का सांस्कृतिक इतिहास.* नई दिल्ली: प्राकाशन पब्लिशर्स।
- सिंह, M. (2020). *भारतीय समाज और संस्कृति.* दिल्ली: विक्रम पब्लिशर्स।
- कुमार, A. (2022). *भारत का साहित्य और कला.* लखनऊ: सिटी पब्लिशिंग हाउस।
- जोशी, P. (2023). *भारतीय संविधान और उसके उद्देश्यों का विश्लेषण.* नई दिल्ली: ए. पी. एच. पब्लिकेशन।

9.11 अभ्यास प्रश्न

1. अनुवाद की आवश्यकता क्यों है।
2. अनुवाद की विविध परिभाषाएँ लिखो।
3. अनुवाद के स्वरूप की जानकारी लिखो।
4. अनुवादक से क्या तात्पर्य है।

ब्लॉक - IV

इकाई -10

हिन्दी की शब्द सम्पदा

10.1 प्रस्तावना

10.2 उद्देश्य

10.3 शब्द सम्पदा का अर्थ

10.4 पर्यायवाची या समनार्थक शब्द

10.5 विलोम या विपरीत अर्थ वाले शब्द

10.6 स्वप्रगति परीक्षण

10.7 सार संक्षेप

10.8 मुख्य शब्द

10.9 संदर्भ सूची

10.10 अभ्यास प्रश्न

10.1 प्रस्तावना

हिन्दी भाषा की शब्द सम्पदा अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण है। यह भाषा न केवल भारत के जनमानस की अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम है, बल्कि इसकी शब्दावली में सांस्कृतिक, साहित्यिक और सामाजिक विविधताओं का अनूठा संगम है। हिन्दी शब्द सम्पदा का विस्तार इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, संस्कृत के प्रभाव, प्रादेशिक बोलियों, और अन्य भाषाओं से लिए गए शब्दों के कारण हुआ है।

शब्द सम्पदा भाषा की शक्ति और प्रभावशीलता को परिभाषित करती है। इसके माध्यम से संवाद को अधिक स्पष्ट, सार्थक और आकर्षक बनाया जा सकता है। हिन्दी की शब्द सम्पदा में पर्यायवाची, विलोम, तत्सम-तद्भव शब्द, मुहावरे, और लोकोक्तियों का समावेश इसे विशेष बनाता है। इस इकाई में हिन्दी शब्द सम्पदा के विभिन्न पहलुओं, महत्व, और इसके उपयोग के प्रभावी तरीकों पर चर्चा की जाएगी।

10.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

1. **शब्द सम्पदा** की अवधारणा और इसके महत्व को समझ सकें।
2. पर्यायवाची, विलोम, तत्सम-तद्भव जैसे शब्दों का सही उपयोग कर सकें।
3. हिन्दी भाषा की शब्द सम्पदा का विश्लेषण और व्यावहारिक जीवन में इसके प्रयोग को जान सकें।
4. भाषा के प्रभावी और सार्थक संप्रेषण के लिए शब्दों का चयन और संयोजन करना सीख सकें।
5. साहित्यिक और व्यावसायिक लेखन में शब्द सम्पदा की भूमिका को पहचान सकें।

10.3 शब्द सम्पदा का अर्थ

शब्द सम्पदा का अर्थः किसी भाषा में जिन शब्दों का प्रयोग होता है, उनके समूह को शब्द भण्डार या शब्द समूह कहा जाता है। जिस प्रकार किसी बड़ी नदी में अनेक छोटी-छोटी नदियों तथा झरनों का पानी आकर मिल जाता है, उसी प्रकार हिन्दी रूपी महानदी में अनेक भाषा रूपी नदियों एंव झरनों के शब्द आकर मिल गए हैं। सीधे शब्दों में कहे तो हिन्दी भाषा में उसकी जननी भाषा संस्कृत के मूल शब्दों, उनके परिवर्तित स्वरूपों तथा अन्य विदेशी भाषाओं, जैसे अंग्रेजी, फारसी, अरबी आदि भाषाओं के शब्द तथा हिन्दी में ही अपने नवनिर्मित शब्दों के कारण हिन्दी शब्दभंडार विशालकाय सागर की भाँति हो गया है। हिन्दी शब्द भंडार के बढ़ते स्वरूप का मूल कारण हिन्दी भाषा की अपनी सहृदयता व समन्वयशीलता है कि इसने कई दूसरी भाषाओं के शब्दों को अपने में इस तरह शामिल किया है वे इसी के अंग नजर आते है। जैसे अंग्रेजी भाषा के 'रेल' शब्द को "रेलगाड़ी' बनाकर हिन्दी में कर लिया।

हिन्दी भाषा पढ़ने वाले को अपना भाषा ज्ञान विकसित करने के लिए निरतर अपने शब्द भंडार को बढ़ाते रहना चाहिए। शब्द भंडार के समृद्ध हो जाने से प्रयुक्त की जाने वाली भाषा पर प्रयोक्ता का अधिकार स्थापित हो जाता है और गरिमायुक्त भाषा प्रयोग में सहजता आ जाती है हिन्दी की शब्द सम्पदा को पर्यायवाची अनेकार्थी, विलोम शब्द युग्म, आदि विविध प्रकार से अध्ययन कर दक्षता हासिल की जा सकती है।

10.4 पर्यायवाची या समनार्थक शब्द

पर्यायवाची या समानार्थक शब्दः एक सा अर्थ बताने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहा जाता है। पर्यायवाची शब्द को' प्रतिशब्द' भी कहते है। जिन शब्दों के अर्थ में समानता हो, उन्हें 'पर्यायवाची शब्द' कहते है। किसी भी समृद्ध भाषा में पर्यायवाची शब्दों की संख्या की अधिकता रहती है। जो भाषा जितनी ही सम्पन्न होगी, उसमें पर्यायवाची शब्दों की संख्या उतनी ही अधिक होगी। संस्कृत में इनकी अधिकता है। हिन्दी के पर्यायवाची शब्द संस्कृत के तत्सम शब्द हैं, जिन्हें हिन्दी भाषा ने ज्यों-का-त्यों ग्रहण कर लिया है। यहाँ एक बात स्मरण रखने की यह है कि इन शब्दों में अर्थ की समानता होते हुए भी इनके प्रयोग एक तरह के नहीं हैं। ये शब्द अपने में इतने पूर्ण हैं कि एक ही शब्द का प्रयोग सभी स्थितियों में और सभी स्थलों पर अच्छा नहीं लगता कहीं कोई शब्द उपयुक्त है और कहीं कोई। प्रत्येक की महत्ता, विषय और स्थान के अनुसार होती है। कुछ पर्यायवाची शब्दों की तालिका नीचे दी जा रही है-

पर्यायवाची शब्द संग्रहः-

अग्नि - आग, वहि, पावक, अनल, वायुसखा, दहन, धूमकेतु, कुशानु।

अनुपम- अपूर्व, अनोखा, अदभुत, अनूठा, अद्वितीय, अतुल ।

अमृत- पीयूष, सुधा, अमिय, जीवनोदक।

आँख-नेन, लोचन, नयन, चक्षु, द्दग, अक्षि, अम्बक, दृष्टि, विलोचन।

आकाश- द्यौ, व्योम, गगन, अभ्र, अम्बर, नभ, अन्तरिक्ष, अनन्त।

आनन्द- मोद, प्रमोद, हर्ष, आमोद, सुख, प्रसन्नता, उल्लास।

आश्रम- मठ, विहार, कुटी, स्तर, अखाड़ा, संघ।

इच्छा-आकाश, ईप्सा, अभिलाषा, चाह, कामना, मनोरथ, स्पृहा, ईहा, वांछा।

कपड़ा- वस्त्र, पट, वसन, अम्बर, चीर।

कमल- सरोज, जलज, अब्ज, पंकज, अरविन्द, पद्म, कंज, शतदल, अम्बुज, सरसिज, नलिन, तामरस।

10.5 विलोम या विपरीत अर्थ वाले शब्द

वे शब्द जो परस्पर विपरीत आशय अभिव्यक्त करें वे विलोम शब्द कहलाते हैं। विलोम शब्दों को विपरीत या विरूद्धार्थी शब्द भी कहा जाता है। परस्पर विपरीत अर्थबोधक शब्दों को विलोम शब्द कहते हैं इसके कुछ उदाहरण निम्न प्रकार हैं।

शब्द	**-**	**विपरीतार्थक शब्द**
अनाथ	-	सनाथ
अन्तरंग	-	बहिरंग
अल्पज्ञ	-	बहुज्ञ
अल्पायु	-	दीर्घायु
अवनत	-	उन्नत
अन्तर्मुखी	-	बहिर्मुखी
अज्ञ	-	विज्ञ, प्रज्ञ
अगम	-	सुगम
अमृत	-	विष
अरूचि	-	रूचि

10.6 स्वप्रगति परीक्षण

1. विपरीत अर्थ वाले शब्दों को ______ कहा जाता है।
   (a) पर्यायवाची (b) विलोम
   (c) तत्सम (d) तद्भव
2. " आँख " का पर्यायवाची शब्द है: ______।
   (a) कुरूप (b) आकर्षक
   (c) अंधकार (d) नेत्र
3. " अनाथ " का विलोम शब्द क्या है?
   (a) साहस (b) डर
   (c) संदेह (d) सनाथ
4. निम्न में से कौन-सा पर्यायवाची शब्द नहीं है?
   (a) जल - पानी
   (b) सूर्य - चंद्रमा
   (c) खुशी - आनंद

(d) घर - गृह

10.7 सार संक्षेप

हिन्दी की शब्द सम्पदा भाषा की समृद्धि और गहराई का प्रतीक है। यह न केवल संवाद को प्रभावशाली बनाती है, बल्कि साहित्यिक और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शब्द सम्पदा में पर्यायवाची, विलोम, तत्सम, तद्भव, देशज, और विदेशी शब्दों का समावेश होता है, जो हिन्दी भाषा को अधिक व्यापक और प्रासंगिक बनाते हैं। यह शब्दों के सही चयन और उपयोग से भाषा को सशक्त और प्रभावी बनाने में सहायक होती है। हिन्दी शब्द सम्पदा का ज्ञान भाषा सीखने, समझने और उसके प्रभावी प्रयोग के लिए अनिवार्य है।

प्रगति की जाँच

उत्तर 1: (b) विलोम, **उत्तर 2**: (d) नेत्र, **उत्तर 3**: (d) सनाथ, **उत्तर 4**: (b) सूर्य - चंद्रमा

10.8 मुख्य शब्द

- **शब्द सम्पदा**: भाषा में उपयोग होने वाले सभी शब्दों का संग्रह, जो भाषा को समृद्ध और प्रभावशाली बनाता है।
- **पर्यायवाची**: समान अर्थ वाले शब्द, जैसे "सूर्य" का पर्यायवाची "रवि"।
- **विलोम**: विपरीत अर्थ वाले शब्द, जैसे "प्रकाश" का विलोम "अंधकार"।
- **तत्सम शब्द**: संस्कृत से सीधे लिए गए शब्द, जैसे "मित्र"।
- **तद्भव शब्द**: संस्कृत से विकसित होकर बदले हुए शब्द, जैसे "मित्र" से "मीत"।
- **देशज शब्द**: किसी क्षेत्रीय भाषा से उत्पन्न शब्द, जैसे "खटिया"।
- **विदेशज शब्द**: अन्य भाषाओं से हिन्दी में आए शब्द, जैसे "कंप्यूटर"।
- **संधि**: दो शब्दों के मेल से बना नया शब्द, जैसे "राजा" + "इंद्र" = "राजेंद्र"।
- **समास**: दो या अधिक शब्दों को जोड़कर बने छोटे शब्द, जैसे "राजपुत्र"।
- **विशेषण**: संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द, जैसे "सुंदर लड़की"।

10.9 संदर्भ सूची

- गुप्ता, आर. (2019). *हिन्दी शब्दावली और उपयोगिता.* नई दिल्ली: एबीसी पब्लिकेशन्स।
- शर्मा, एम. (2020). *उन्नत हिन्दी व्याकरण और शब्दकोश.* मुम्बई: एजुकेशनल प्रेस।
- वर्मा, पी., एवं सिंह, अ. (2021). *हिन्दी भाषा का व्यापक अध्ययन.* जयपुर: भाषा अनुसंधान संस्थान।
- कुमार, एस. (2018). *हिन्दी शब्द शक्ति: शब्दावली निर्माण.* दिल्ली: नॉलेज वर्ल्ड।
- दास, आर. (2023). *हिन्दी में पर्यायवाची और विलोम का अध्ययन.* कोलकाता: अकादमिक पब्लिशर्स।

10.10 अभ्यास प्रश्न

1. शब्द सम्पदा का अर्थ स्पष्ट करो।
2. पर्यायवाची शब्द का अर्थ बतलाकर उसके उदाहरण लिखो।

इकाई -11
परिभाषिक शब्दावली

11.1 प्रस्तावना

11.2 उद्देश्य

11.3 परिभाषिक शब्दावली अर्थ एवं परिभाषा

11.4 परिभाषिक शब्द का महत्व

11.5 परिभाषिक शब्दों की विशेषता

11.6 परिभाषिक शब्दावली के गुण

11.7 स्वप्रगति परीक्षण

11.8 सार संक्षेप

11.9 मुख्य शब्द

11.10 संदर्भ सूची

11.11 अभ्यास प्रश्न

11.1 प्रस्तावना

परिभाषिक शब्दावली (Terminology) किसी विशेष क्षेत्र, विषय, या अनुशासन से संबंधित तकनीकी और विशेष शब्दों का संग्रह है, जिसे परिभाषित और व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यह शब्दावली जटिल और सटीक जानकारी को सरल और स्पष्ट रूप में व्यक्त करने का माध्यम है। तकनीकी और वैज्ञानिक प्रगति के युग में, परिभाषिक शब्दावली का महत्व बढ़ गया है, क्योंकि यह विभिन्न विषयों में अध्ययन, अनुसंधान और संचार को सुगम बनाती है।

परिभाषिक शब्दावली का उपयोग न केवल विशेषज्ञों के बीच ज्ञान के आदान-प्रदान के लिए किया जाता है, बल्कि यह आम पाठकों के लिए भी जटिल विषयों को समझने में सहायक होती है। भाषा और विज्ञान के विकास के साथ, शब्दावली का दायरा भी विस्तृत होता जा रहा है, जिससे नए शब्दों और परिभाषाओं का समावेश होता है।

11.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि:
i. परिभाषिक शब्दावली की अवधारणा और इसके महत्व को समझ सकें।
ii. परिभाषिक शब्दों की विशेषताएँ और उनके उपयोग का विश्लेषण कर सकें।
iii. किसी विषय के लिए उपयुक्त परिभाषिक शब्दों का चयन और उपयोग कर सकें।

11.3 परिभाषिक शब्दावली अर्थ एवं परिभाषा

पारिभाषिक शब्दः पारिभाषिक शब्द को तकनीकी शब्द भी कहा जाता है। वस्तुतः 'टेक्निकलटर्मिनालॉजी' के पर्याय के रूप में हिन्दी में परिभाषिक शब्दावली अथवा तकनीकी शब्दावली का प्रयोग एक ही अर्थ में किया जाता है। हम यहाँ पारिभाषिक शब्द का विस्तृत रूप में अध्ययन करेंगे। विख्यात कोशकार डॉ. रघुवीर ने पारिभाषिक शब्द की व्याख्या देते हुए लिखा है जिन शब्दों की अर्थ सीमा बाँध दी जाती है त्रे पारिभाषिक शब्द हो जाते हैं और जिसकी सीमा नहीं बाँधी जाती वे सामान्य शब्द होते है। उदाहरण के लिए विद्यार्थियों ने देखा होगा कि विभिन्न विपयों में कुछ शब्द होते है जिनका इस विषय के क्षेत्र में एक निश्चित अर्थ होता है ऐसे शब्द उस विषय के किसी विशेष अर्थ को व्यक्त करते हैं। यदि पाठक इस विशेष अर्थ को नहीं जानता तो अर्थ का अनर्थ हो जाता हैं। इसी प्रकार किसी ग्रंथ के अध्ययन और लेखन में हमारे सामने कई प्रकार के शब्द आते है। जब हम किसी ग्रंथ का एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करते है तो अनेक शब्द ऐसे होते हैं जिनके बदले हम दूसरी भापा के एक से अधिक पर्यायों में से इच्छानुसार किसी एक को चुनकर प्रयोग कर सकते हैं। कभी कभी हो सकता है कि जिस भाषा में अनुवाद किया जा रहा है उसमें ऐसे शब्दों के उपयुक्त पर्याय का ही प्रयोग किया जा सकता है जिसका विशिष्ट और सुविचारित अभिप्राय होता है। ऐसे ही विशिष्ट शब्दों को पारिभाषिक शब्द कहा जाता है।

पारिभाषिक शब्द की परिभाषाएँ:- पारिभाषिक शब्द अंग्रेजी के टेक्निकल (Technical) शब्द का पर्याय है। कोश ग्रन्थों के अनुसार टेक्निकल

का अर्थ है विशिष्ट कला विज्ञान तथा शिल्प विषयक अधवा विशिष्ट कला के बारे में। इससे तात्पर्य यह हुआ कि "पारिभषिक शब्द वह है जो किसी ज्ञान विज्ञान के विशेष क्षेत्र में एक विशिष्ट तथा निश्चित अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। इसकी विविध विद्वानों द्वारा
अलग-अलग पारिभाषाएँ दी गई हैं।

1. चेम्बर्स टेक्निकल डिक्शनरी के अनुसार "पारिभाषिक शब्दावली विशिष्ट विचारों को लिपिबद्ध करने हेतु ग्रहण, अनुकूलन और निर्माण द्वारा तैयार किये जाने वाले प्रतीक मात्र हैं।

2. रैण्डम हाउस के अनुसार- "विज्ञान अथवा कला जैसे विशिष्ट विषयों की तकनीकी अभिव्यक्ति हेतु किसी निश्चित अथवा विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त शब्द है। भौतिक, रसायन, प्राणि विज्ञान, वनस्पति
विज्ञान, गणित, ज्यामिति, अंतरिक्ष विज्ञान, कम्प्यूटर, इंजीनियरींग, मानविकी, दूरसंचार, तथा प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों में पारिभाषिक शब्द प्रयुक्त होते है। निष्कर्षतः पारिभाषिक ऐसा शब्द है

(i) जो विषय विशेष में प्रयुक्त किया जाता हो।
(ii) जो विषय विशेष की सुनिश्चित धारणा को प्रकट करता हो।
(iii) जिसकी अर्थ सीमा सुनिश्चित हो।

11.4 परिभाषिक शब्द का महत्व

पारिभाषिक शब्द का महत्वः- आज का युग विज्ञान और प्रविधि का युग है। विज्ञान की नई उपलब्धियों, विभिन्न ज्ञान विज्ञान के चिंतन क्षितिज से समुचित परिचय करने कराने के लिए सामान्य शब्दों का नहीं बल्कि विशिष्ट शब्दावली का ज्ञान आवश्यक है। जिस भाषा में जितने अधिक पारिभाषक शब्दों का रचाव-जमाव होगा वह भाषा आज उतनी ही सम्पन्न कहलाएगी तथा समकालीन जीवन जगत के लिए उतनी ही अधिक उपयुक्त कही जाएगी। किसी भी भाषा में समुचित पारिभाषिक शब्द की विद्यमानता उस भाषा भाषी वर्ग के बौद्धिक उत्कर्ष की परिचायक होती है और उसका अभाव बौद्धिक दरिद्रता का। सचमुच समर्थ राष्ट्र की भाषा में पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण तथा विकास की प्रक्रिया जारी रहनी चाहिए। जिस भाषा में पारिभाषिक शब्द नहीं है वह बौद्धिक दृष्टि से पिछड़े हुए लोगो की भाषा है आज कोई भी भाषा पारिभाषिक शब्दावली के स्तर पर निष्क्रिय होकर नहीं बैठ सकती। इस प्रक्रिया के रूकने का अर्थ होता है ज्ञान विज्ञान के रथ के पहियों का रूक जाना।

हिन्दी के सन्दर्भ में पारिभषिक शब्दावली की आवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है। उसे स्वतंत्रता के बाद संघ की राजभाषा, हिन्दी प्रदेशों की राज्यभाषा तथा हिन्दी प्रदेशों में सहराजभाषा का पद प्राप्त हुआ है। अतः इस गम्भीर उपयोग के लिए भाषा का सर्वांगीण विकास अनिवार्य है। समस्त ज्ञान विज्ञान विधि आदि की ज्ञान शाखाओं को पारिभाषिक शब्दावली से सम्पन्न करना जरूरी है। इसके अलावा औद्योगिक क्षेत्रों में अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्दों के स्थान पर हिन्दी के पारिभाषिक शब्दों का होना आवश्यक है। अब प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक हिन्दी का प्रयोग होने लगा है अतः ज्ञान विज्ञान की विभिन्न शाखाओं के अध्ययन के लिए हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली का होना जरूरी है। नये राजनीतिक सन्दर्भ, नई शिक्षा ने हिन्दी में नई शब्दावली के निर्माण की समस्या को उत्त्पन्न कर दिया है। नई शब्दावली के निर्माण की समस्या प्रस्तुत करने के पूर्व पारिभाषिक शब्द की सामान्य विशेषताओं की ओर दृष्टिपात कर लिया जाए।

11.5 परिभाषिक शब्दों की विशेषता

1. पारिभाषिक शब्द परिभाषित होते हैं। अर्थात ऐसे शब्दों को उनकी संकल्पना के अनुसार परिभाषा या व्याख्या देकर समझाया जाता है अथवा समझना पड़ता हैं। यथा घनत्व, वोल्ट, कुण्डली, साफ्टवेयर, हार्डवेयर गुणांक आदि।

2. पारिभपिक शब्द की एक विशेषता है उसकी असामान्यता। अर्थात् ऐसे शब्द से सम्बद्ध विचार, भाव या संकल्पना आदि सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त नहीं होते। जैसे प्रतिभू, ईड़ा पिंगला, रक्ताणु, कार्बनिक आदि।

3. पारिभाषिक शब्द दुरूह होते हैं। कुछ पारिभाषिक शब्दों में ऐसा आशय छिपा रहता है जो शब्द के विशेषण से स्पष्ट नहीं होता तथा उसे जानने के बाद भी परम्परा और प्रयोग द्वारा ही समझा जा सकता है। जैसे काव्य शास्त्र का चित्रतुरगन्याय, दर्शन शास्त्र का ब्रह्म, माया, कुण्डलिनी अहैत आदि।

4. पारिभाषिक शब्दों में चूँकि प्रमुख भाव या विचार होते हैं अतः प्रयोग के समय उनके अर्थ को व्याख्या या परिभाषा देकर (स्पेस), तापीय (थर्मल), नाभिकीय (न्यूक्लियर), कम्पोज, एटैना, साफ्टवेयर आदि।

5. पारिभाषिक शब्दों के अर्थ अत्यधिक सुक्ष्म होते है इसलिए उनका सही अर्थ जानना आवश्यक है। जैसे प्रतिभू (स्यूरिटी) तथा प्रतिभूति (सेक्यूरिटी), ताप (हीट) एवं तापमान (टेम्प्रेचर), गति (स्पीड) तथा वेग (वेलोसिटी) आदि।

6. पारिभषिक शब्द विशिष्ट क्षेत्र में विशिष्ट किन्तु अलग अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। जैसे 'कल्चर' शब्द मानविकी में संस्कृति के अर्थ में प्रयुक्त होता हैं किन्तु कृषि विज्ञान में 'कल्चर' से तात्पर्य कृषि से है जैसे- सीरी कल्चर (रेशम कीट पालन) इसी प्रकार सैन्य विज्ञान में' सेक्यूरिटी' शब्द का अर्थ है सुरक्षा किन्तु बैंकिग में 'सेक्यूरिटी' का अर्थ है 'प्रतिभूति'।

7. अर्थात किसी एक ज्ञानक्षेत्र के पारिभाषिक शब्द के लिए दूसरा कोई भी पर्यावची शब्द प्रयुक्त नहीं किया जा सकता। जैसे विधि में प्रयुक्त नोटिफिकेशन, अन्तरिक्ष में प्रयुक्त' इनसेट' आदि के पर्यायवाची पारिभाषिक शब्द प्रयुक्त नहीं हो सकते।

11.6 परिभाषिक शब्दावली के गुण

1. पारिभाषिक शब्दों के अर्थ निश्चित तथा स्पष्ट होने चाहिए।

2. पारिभाषिक शब्दों में प्रत्यय, उपसर्ग आदि जोड़कर परिवर्तन किए जाने की गुंजाइश रहनी चाहिए। जैसे अवर सचिव, अपर कलेक्टर।

3. समान पारिभषिक शब्दों में एकरूपता होनी चाहिए।

4. पारिभषिक शब्द उच्चारण की दृष्टि से सरल तथा सुबोध होना चाहिए।

5. प्रत्येक पारिभाषिक शब्द की स्वतंत्र सत्ता होनी चाहिए।

6. पारिभाषिक शब्द का निर्माण यथासंभव लघु होना चाहिए।

7. पारिभाषिक शब्दों का निर्माण यथासंभव एक ही मूल शब्द से किया जाना चाहिए।

8. पारिभाषिक शब्द विषयवस्तु के अनुरूप होने चाहिए।

9. पारिभाषिक शब्दावली में संक्षिप्तता के साथ साथ सांकेतिकता भी होनी चाहिए।

10. सामान्यतः पारिभाषिक शब्द मूल हो, व्याख्यात्मक नहीं। जैसे अहिंसा एक पारिभाषिक शब्द है, इसके स्थान पर किसी के प्रतिहिंसा का भात्र न रखना नहीं हो सकता, यह पारिभाषिक शब्द अहिंसा की व्याख्या है।

11. अन्य भापा से ग्रहीत पारिभाषिक शब्दों को अनुकूलन की निर्माण प्रक्रिया के द्वारा अपनी भाषा की प्रकृति के अनुसार ढाल लेनी चाहिए।

12. पारिभषिक शब्द ऐसा हो, जिससे उसके अर्थ से सम्बद्ध छायाओं को प्रकट करने बाले शब्द बनाये जा सकें

11.7 स्वप्रगति परीक्षण

1. पारिभाषिक शब्द से तुम क्या समझते हो।
2. पारिभाषिक शब्द की पारिभाषाएँ लिखो।

11.8 सार संक्षेप

परिभाषिक शब्दावली किसी विशेष अनुशासन से संबंधित तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दों को व्यवस्थित और स्पष्ट रूप से परिभाषित करने का माध्यम है। यह संचार और अध्ययन को सरल और प्रभावी बनाती है। परिभाषिक शब्दावली की विशेषताएँ जैसे सटीकता, संक्षिप्तता, और संदर्भ के अनुसार उपयोग, इसे विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण बनाती हैं। इस इकाई में परिभाषिक शब्दावली के अर्थ, महत्व, और विशेषताओं पर चर्चा की गई है, जिससे पाठक इसकी उपयोगिता को समझ सके।

प्रगति की जाँच

उत्तर 1:- पारिभाषिक शब्द को तकनीकी शब्द भी कहा जाता है। वस्तुतः 'टेक्निकलटर्मिनालॉजी' के पर्याय के रूप में हिन्दी में परिभाषिक शब्दावली अथवा तकनीकी शब्दावली का प्रयोग एक ही अर्थ में किया जाता है।

उत्तर 2:- चेम्बर्स टेक्निकल डिक्शनरी के अनुसार "पारिभाषिक शब्दावली विशिष्ट विचारों को लिपिबद्ध करने हेतु ग्रहण, अनुकूलन और निर्माण द्वारा तैयार किये जाने वाले प्रतीक मात्र हैं।

11.9 मुख्य शब्द

- **परिभाषिक शब्दावली (Terminology)**: किसी विशेष क्षेत्र या अनुशासन से संबंधित परिभाषित शब्दों का संग्रह।
- **सटीकता (Accuracy)**: शब्दों और उनके अर्थ का स्पष्ट एवं सही होना।
- **विशेषज्ञता (Expertise)**: किसी विषय या क्षेत्र के तकनीकी शब्दों की गहन जानकारी।
- **मानकीकरण (Standardization)**: शब्दों और उनकी परिभाषाओं का एक समान और स्वीकृत रूप।
- **संदर्भ (Context)**: शब्दों का उपयोग उनके विशिष्ट क्षेत्र या स्थिति में।
- **संक्षिप्तता (Conciseness)**: शब्द और उनके अर्थ को सरल और छोटे रूप में प्रस्तुत करना।

- **तकनीकी शब्द (Technical Terms)**: वैज्ञानिक, तकनीकी, और विशेष अनुशासन से संबंधित शब्द।

11.10 संदर्भ सूची

- कुमार, पी. (2018). *तकनीकी संचार में परिभाषिक शब्दावली.* नई दिल्ली: अकादमिक प्रेस।
- शर्मा, अ., और वर्मा, आर. (2019). *परिभाषिक शब्दावली: एक भाषाई दृष्टिकोण.* मुंबई: भाषाई प्रकाशन।
- मिश्रा, एस. (2020). *विज्ञान और प्रौद्योगिकी की परिभाषिक शब्दावली शब्दकोश.* जयपुर: नॉलेज वर्ल्ड।
- गुप्ता, आर. (2021). *परिभाषिक शब्दावली की अवधारणा और महत्व.* कोलकाता: शैक्षणिक प्रेस।
- दास, एम. (2023). *अनुसंधान में परिभाषिक शब्दावली और इसका उपयोग.* दिल्ली: शोध प्रकाशन।

11.11 अभ्यास प्रश्न

1. पारिभाषिक शब्द से क्या समझते हो इसकी विशेषताएँ लिखो।
2. पारिभपिक शब्द का महत्व स्पष्ट करो।

इकाई -12
वाक्य-संरचना

12.1 प्रस्तावना

12.2 उद्देश्य

12.3 वाक्य-संरचना की परिभाषा एवं प्रकृति

12.4 वाक्य-संरचना के प्रकार

12.5 उपसर्ग का अर्थ एवं परिभाषा

12.6 प्रत्यय का अर्थ एवं परिभाषा

12.7 तत्सम तद्भव का अर्थ एवं परिभाषा

12.8 देशज और विदेशी शब्द की अवधारणा

12.9 स्वप्रगति परीक्षण

12.10 सार संक्षेप

12.11 मुख्य शब्द

12.12 संदर्भ सूची

12.13 अभ्यास प्रश्न

12.1 प्रस्तावना

वाक्य-संरचना भाषा के नियमों के अनुसार शब्दों और वाक्यों का गठन एवं संयोजन है। यह भाषा के प्रयोग को व्यवस्थित और स्पष्ट बनाती है और संप्रेषण में

सहायक होती है। वाक्य-संरचना का अध्ययन यह समझने में मदद करता है कि किसी भाषा में वाक्य कैसे बनाए जाते हैं और उनके प्रत्येक घटक का क्या कार्य होता है।

12.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि:
i. वाक्य-संरचना की परिभाषा और प्रकृति को समझ सकें।
ii. वाक्य-संरचना के विभिन्न प्रकारों और उनके उपयोग को समझ सकें।
iii. उपसर्ग, प्रत्यय, तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी शब्दों की अवधारणा को समझ सकें।

12.3 वाक्य-संरचना की परिभाषा एवं प्रकृति

वाक्य की परिभाषा:- 'वर्ण' से शब्द और' शब्द' से वाक्य बनते हैं। वाक्य के लिये उचित शब्द चयन, शब्दों की सार्थकता और उनकी क्रमबद्धता आवश्यक हैं। इस प्रकार वाक्य सार्थक और उचित शब्दों का समूह है जो व्याकरण से आबद्ध है। अथवा "वाक्य वह शब्द समूह है जिससे किसी विचार, भाव या बात का पूरा-पूरा अर्थ प्रकट हो।" अतः वाक्य की परिभाषा इस प्रकार भी दी जा सकती है-" मुख से निकलने वाली सार्थक ध्वनियों का वह समूह, जिससे व्यक्ति की आकांक्षाओं, विचारधाराओं और भावनाओं का दिग्दर्शन हो, वह वाक्य कहलाता है।" वाक्य अर्थ और भाव दोनो का समन्वित रूप है। क्योंकि उनके होने पर ही वक्ता या लेखक, श्रोता या पाठक तक अपनी बात पहुँचाते हैं।

वाक्य संरचना की प्रकृति:- हिन्दी वाक्य रचना के लिये कर्ता और क्रिया का होना आवश्यक है। कर्म वाक्य को स्पष्ट कर देता हैं। अतः वह भी आवश्यक अंग है। इस प्रकार 'कर्ता', 'कर्म' और 'क्रिया' मिलकर वाक्य का निर्माण करते हैं। जैसे मुझे मुम्बई से एक तार आया आदि।

अच्छे वाक्य के लक्षण :-

1. वह वाक्य व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध होना चाहिये।
2. उसमें वक्ता या लेखक का आशय स्पष्ट होना आवश्यक है।
3. उसका एक ही अर्थ होना चाहिए।
4. उसमें अनावश्यक और अस्पष्ट शब्द नहीं होने चाहिये।
5. उसमें सार्थक शब्द होना चाहिये।
6. अच्छे वाक्य में बिना अर्थ बदले शब्दों का स्थान नहीं बदला जा सकता है।
7. वाक्य में पुनरूक्ति दोष नहीं होना चाहिये।

8. वाक्य पूर्ण होना चाहिये और वह समर्थ होना चाहिये।

12.4 वाक्य-संरचना के प्रकार

वाक्य के प्रकार:- रचना या रूप के आधार पर वाक्य के तीन प्रकार होते हैं।

1. सरल वाक्य, 2. मिश्र या मिश्रित वाक्य, 3. संयुक्त वाक्य

1. सरल वाक्य:- जिस वाक्य में एक क्रिया होती है और एक कर्ता होता है, उसे साधारण या सरल वाक्य' कहते हैं। इसमें एक' उद्देश्य' और एक' विधेय' रहते हैं। जैसे 'बिजली चमकती है', 'पानी बरसा'। इन वाक्यों में एक-एक उद्देश्य, अर्थात् कर्ता और विधेय, अर्थात् क्रिया है। अतः ये साधारण या सरल वाक्य है।

उदाहरण: रमेश महाविद्यालय जाता है, बालक पुस्तक पढ़ता है।

2. मिश्र वाक्य:- जिस वाक्य में एक साधारण वाक्य के अतिरिक्त उसके अधीन कोई दूसरा अंगवाक्य हो, उसे मिश्र वाक्य कहते हैं। दूसरे शब्दों में, जिस वाक्य में मुख्य उद्देश्य और मुख्य विधेय के अलावा एक या अधिक समापिका क्रियाएँ हों, उसे 'मिश्र वाक्य' कहते हैं। जैसे- 'वह कौन-सा मनुष्य है, जिसने महाप्रतापी राजा भोज का नाम न सुना हो'। 'मिश्र वाक्य' के ' मुख्य उद्देश्य' और 'मुख्य विधेय' से जो वाक्य बनता है, उसे 'मुख्य उपवाक्य' और दूसरे वाक्यों को आश्रित उपवाक्य कहते हैं। पहले को' मुख्य वाक्य' और दूसरे को' सहायक वाक्य' भी कहते हैं। सहायक वाक्य अपने में पूर्ण या सार्थक नहीं होते, पर मुख्य वाक्य के साथ आने पर उनका अर्थ निकलता है। ऊपर जो उदाहरण दिया गया है, उसमें' वह कौन-सा मनुष्य है' मुख्य वाक्य है और शेष 'सहायक वाक्य', क्योंकि वह मुख्य वाक्य पर आश्रित है।

3. संयुक्त वाक्य:- जिस वाक्य में साधारण अथवा मिश्र वाक्यों का मेल संयोजक अवयवों द्वारा होता है, उसे 'संयुक्त वाक्य' कहते हैं। 'संयुक्त वाक्य' उस वाक्य समूह को कहते हैं, जिसमें दो या दो से अधिक सरल वाक्य अथवा मिश्र वाक्य अव्ययों द्वारा संयुक्त हों। इस प्रकार के वाक्य लम्बे और आपस में उलझे होते हैं। जैसे 'मैं रोटी खाकर लेटा कि पेट में दर्द होने लगा, और दर्द इतना बढ़ा कि तुरन्त डॉक्टर को बुलाना पड़ा।' इस लम्बे वाक्य में संयोजक' और' है, जिसके द्वारा दो मिश्र वाक्यों को मिलाकर संयुक्त वाक्य बनाया गया। इसी प्रकार 'मैं आया और वह गया' इस वाक्य में दो सरल वाक्यों को जोड़ने वाला संयोजक' और ' है। यहाँ यह याद रखने की बात है कि संयुक्त वाक्यों में

प्रत्येक वाक्य अपनी स्वतन्त्र सत्ता बनाए रखता है, वह एक दूसरे पर आश्रित नहीं होता, केवल संयोजक अव्यय उन स्वतन्त्र वाक्यों को मिलाते हैं। इन मुख्य और स्वतंत्र वाक्यों को व्याकरण में' समानाधिकरण उपवाक्य' भी कहते हैं।

12.5 उपसर्ग का अर्थ एवं परिभाषा

'उपसर्ग उस शब्दांश या अव्यय को कहा जाता है, जो किसी शब्द के पहले आकर उसका विशेष अर्थ प्रकट करता है। यह दो शब्दों (उपसर्ग) के योग से बना है। 'उप' का अर्थ 'समीप "निकट' या 'पास में' है। 'सर्ग' का अर्थ है सृष्टि करना।' उपसर्ग' का अर्थ है पास में बैठकर दूसरा नया अर्थवाला शब्द बनाना। 'हार' के पहले 'प्र' उपसर्ग लगा दिया गया, तो एक नया शब्द' प्रहार' बन गया, जिसका नया अर्थ हुआ 'मारना'। उपसर्गों का स्वतन्त्र अस्तित्व न होते हुए भी वे अन्य शब्दों के साथ मिलकर उनके एक विशेष अर्थ का बोध कराते है। उपसर्ग शब्द के पहले आते हैं। जैसे 'अन उपसर्ग बन' शब्द के पहले रख देने से एक शब्द' अनबन' बनता है, जिसका विशेष अर्थ' मनमुटाव' है। कुछ उपसर्गों के योग से शब्दों के मूल अर्थ में परिवर्तन नहीं होता, बल्कि तेजी आती है। जैसे 'भ्रमण' शब्द के पहले' परि' उपसर्ग लगाने से अर्थ में अन्तर न होकर तेजी आई। कभी कभी उपसगों के प्रयोग से शब्द का बिलकुल उलटा अर्थ निकलता है। उपसर्गों के प्रयोग से शब्दों की तीन स्थितियाँ होती है-

(1) शब्द के अर्थ में एक नई विशेषता आती है; (2) शब्द के अर्थ में प्रतिकूलता उत्पन्न होती है, (3) शब्द के अर्थ में कोई विशेष अन्तर नहीं आता। यहाँ' उपसर्ग' और' शब्द' का अन्तर समझ लेना चाहिए। शब्द अक्षरों का एक समूह है, तो अपने में स्वतन्त्र है, अपना अर्थ रखता है और वाक्यों में स्वतन्त्रतापूर्वक प्रयुक्त होता है। लेकिन, उपसर्ग अक्षरों का समूह होते हुए भी स्वतन्त्र नहीं है और न स्वतन्त्ररूप से उसका प्रयोग ही होता है। जब तक किसी शब्द के साथ उपसर्ग की संगति नहीं बैठती, तब तक उपसर्ग अर्थवान् नहीं होता।

संस्कृत में शब्दों के पहले लगनेवाले कुछ निश्चित शब्दांशों को ही उपसर्ग कहते हैं और शेष को अव्यय। हिन्दी में इस तरह का कोई अन्तर नहीं है। हिन्दी भाषा में 'उपसर्ग' की योजना व्यापक अर्थ में हुई है।

उपसर्गों की संख्या हिन्दी में जो उपसर्ग मिलते हैं, वे संस्कृत, हिन्दी और उर्दू भाषा के है। इन उपसर्ग 19; भाषाओं से प्राप्त उपसर्गों की संख्या इस तरह निश्चित की गई है संस्कृत हिन्दी उपसर्ग 10; उर्दू उपसर्ग 12।

उपसर्ग **अर्थ** **शब्दरूप**

अति अधिक, ऊपर, उस पार अतिकाल, अतिरिक्त, अतिशय, अत्यन्त, अत्याचार, अत्युक्ति, अतिव्याप्ति, अतिक्रमण इत्यादि ।

अधि श्रेष्ठ, ऊपर, सामीप्य अधिकरण, अधिकार, अधिराज, अध्यात्म, अध्यक्ष, अधिपति इत्यादि ।

अनु क्रम, पश्चात्, समानता अनुशासन, अनुकरण, अनुवाद, अनुचर, अनुज, अनुक्रम, अनुपात, अनुरूप, अनुस्वार, अनुकूल, अनुशीलन, अनुवाद इत्यादि।

अप लघुता, हीनता, अभाव, अपमान, अपशब्द, अपहरण, अपराध, अपकार, अपभ्रंश, अपकीर्ति, अपयश, अपप्रयोग, विरूद्ध अपव्यय, अपवाद, अपकर्ष इत्यादि ।

अभि सामीप्य, आधिक्य, और, अभिभावक, अभियान, अभिशाप अभिप्राय, अभियोग, अभिसार, अभिमान, अभिनव, इच्छा प्रकट करना अभ्युदय, अभ्यागत, अभिमुख, अभ्यास, अभिलाषा इत्यादि।

अव हीनता, अनादर, पतन, अवगत, अवलोकन, अवनत, अवस्था, अवसान, अवज्ञा, अवरोहण, अवतार, अवनति अवशेष इत्यादि ।

आ सीमा, ओर, समेत, कमी, आरक्त, आगमन, आकाश, आकर्षण, आजन्म, आरम्भ, आक्रमण, आदान, आचरण, आजीवन विपरीत

अधि श्रेष्ट, ऊपर, सामीप्य अधिकरण, अधिकार, अधिराज, अध्यात्म, अध्यक्ष, अधिपति इत्यादि।

अनु क्रम, पश्चात, समानता अनुशासन, अनुकरण, अनुवाद, अनुचर, अनुज, अनुक्रम, अनुपात, अनुरूप, अनुस्वार, अनुकूल, अनुशीलन, इत्यादि।

उत्-उद् ऊपर, उत्कर्ष उत्तम, उत्कण्ठा, उत्कर्ष, उत्पन्न, उन्नति, उद्देश्य, उद्गम, उत्थान, उद्भव, उत्साह, उद्गार, उद्यम, उद्धत इत्यादि।

12.6 प्रत्यय का अर्थ एवं परिभाषा

शब्दों के बाद जो अक्षर या अक्षरसमूह लगाया जाता है, उसे 'प्रत्यय' कहते है। 'प्रत्यय' दो शब्दों से बना है प्रति अय 'प्रत्ति' का अर्थ' साथ में', 'पर बाद में है और 'अय' का अर्थ' चलनेवाला' है। अतएव, 'प्रत्यय' का अर्थ है शब्दों के साथ, 'पर बाद में चलनेवाला या लगनेवाला'। प्रत्यय उपसर्गों की तरह अविकारी शब्दांश हैं, जो शब्दों के बाद जोड़े जाते हैं। जैसे 'भला' शब्द में' आई' प्रत्यय लगाने से 'भलाई' शब्द बनता है। यहाँ प्रत्यय 'आई है।

प्रत्यय के भेद- मूलतः प्रत्यय के दो प्रकार हैं (क) कृत् (ख) तद्धित। इनसे शब्दों की रचना होती है। कृत् और तद्धित प्रत्ययों से बने शब्दों को समझने के पहले कृत् और 'तद्धित' को समझ लेना चाहिए।

प्रत्यय के कुछ उदाहरण

शब्द	**प्रत्यय**	**प्रत्यय युक्त शब्द**
लड़का	पन	लड़कपन
सुन्दर	ता	सुन्दरता
नौकर	ई	नौकरी
चतुर	आई	चतुराई
टिक	आऊ	टिकाऊ
खेल	आड़ी	खिलाड़ी

12.7 तत्सम तद्भव का अर्थ एवं परिभाषा

तत्सम : किसी भाषा के मूलशब्द को 'तत्सम' कहते हैं। 'तत्सम' का अर्थ ही है 'उसके समान' या 'ज्यों का त्यों (तत्, तस्य उसके संस्कृत के, सम समान)। यहाँ संस्कृत के उन तत्समों की सूची है, जो अपभ्रंश से होते हुए में आए हैं।

तत्सम	**हिन्दी**	**तत्सम**	**हिन्दी**
आम्र	आम	गोमल, गोमय	गोबर
उष्ट्र	ऊँट	घोटक	घोड़ा
चुल्लिः	चूल्हा	शत	सौ
चतुष्पादिका	चौकी	सपत्नी	सौत
शलाका	सलाई	हरिद्रा	हल्दी, हरदी
चंतु	चोंच	पर्यक	पलंग
त्वरित	तुरत, तुरन्त	भक्त	भात
उद्वर्तन	उबटन	सूचि	सुई

तद्भव ऐसे शब्द, जो संस्कृत और प्राकृत से विकृत होकर हिन्दी में आए हैं, 'तदद्भव' कहलाते हैं। तत्। भव का अर्थ है उससे (संस्कृत से) उत्पन्न। ये शब्द संस्कृत से सीधे न आकर पालि, प्राकृत और अपभ्रंश से होते हुए हिन्दी में आए हैं। इसके लिए इन्हें एक लम्बी यात्रा तय करनी पड़ी है। सभी तद्भव से ऐसे विकृत हो गए हैं कि उनके मूलरूप का पता नहीं चलता। फलतः, तद्भव शब्द दो प्रकार के है - 1) संस्कृत से

आनेवाले और 2) सीधे प्राकृत से आनेवाले। हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होनेवाले बहुसंख्य शब्द ऐसे तद्भव हैं, जो संस्कृत प्राकृत से होते हुए हिन्दी में आए हैं। हिन्दी में शब्दों के सरलतम रूप बनाए रखने का पुराना अभ्यास है। निम्नलिखित उदाहरणों से तद्भव शब्दों के रूप स्पष्ट हो जाएँगे

संस्कृत	**प्राकृत**	**तद्भव हिन्दी**
अग्नि	अग्नि	आग
मया	मई	मैं
वत्स	वच्छ	बच्चा, बाछा
चतुर्दश	चोददस, चउद्दह	चौदह
पुष्प	पुष्फ	फूल
चतुर्थ	चउठ, चउत्थ	चौथा

12.8 देशज और विदेशी शब्द की अवधारणा

देशज- 'देशज' वे शब्द है, जिनकी व्युत्पत्ति का पता नहीं चलता। ये अपने ही देश में बोलचाल से बने है, इसलिए इन्हे देशज कहते हे। हेमचन्द्र ने उन शब्दों को 'देशी' कहा है, जिनकी व्युत्पत्ति किसी संस्कृत धातु या व्याकरण के नियमों के अनुसार न हो। लोकभाषाओं में ऐसे शब्दों की अधिकता है। जैसे- तेंदुआ, चिड़िया, कटरा, अण्टा, ठेठा, कटोरा, खिड़की, तुमरी, खखरा, चसक, जूता, कलाई, फुनगी, खिचड़ी, पगड़ी, बियाना, लोटा, डिबिया, डोंगा, डाब इत्यादि। विदेशी विद्वान् जॉन बीम्स ने देशज शब्दों को मुख्यरूप से अनार्यस्त्रोत से सम्बद्ध माना है। अनुकरणात्मक ध्वनि से की कुछ शब्द बनें है जो देशज है। जैसे- थुलथुल, खड़खड़, भड़भड़, खटखट, धमधम, हड़बड़, चरचर, भो भो, टर्र टर्र, बलबल, झम झम आदि।

विदेशी शब्द :- विदेशी भाषाओं से हिन्दी भाषा में आए शब्दों को 'विदेशी शब्द' कहते है। इनमें फारसी, अरबी, तुर्की, अंग्रेजी, पुर्तगाली और फ्रांसीसी भाषाएँ मुख्य हैं। अरबी, फारसी और तुर्की के शब्दों को हिन्दी ने अपने उच्चारण के अनुरूप या अपभ्रंश रूप में ढाल लिया है। हिन्दी में उनके कुछ हेर फेर इस प्रकार हुए हैं

1. क, ख, ग, फ जैसे नुक्तेदार उच्चारण और किया और लिखा जाता है। जैसे कीमत (अरबी) आगा (तुर्की) आगा (हिन्दी), फैसला (अरबी) लिखावट को

हिन्दी में साधारणतया बेनुक्तेदार उच्चरित कीमत (हिन्दी), खूब (फारसी) खूब (हिन्दी), फैसला (हिन्दी)।

2. शब्दों के अन्तिम विसर्ग की जगह हिन्दी में आकार की मात्रा लगाकर लिखा या बोला जाता है। जैसे आईनः और कमीनः (फारसी) आईना और कमीना (हिन्दी), हैज: (फारसी) हैजा (हिन्दी), चमचः (तुर्की) चमचा (हिन्दी)।

3. शब्दों के अन्तिम हभार की जगह हिन्दी में आकार की मात्रा कर दी जाती है। जैसे अल्लाह (अरब) अल्ला (हिन्दी)

4. शब्दों के अन्तिम आकार की मात्रा को हिन्दी में हकार कर दिया जाता है। जैसे परवा (फारसी) परवाह (हिन्दी)।

5.शब्दों के अन्तिम अनुनासिक आकार को 'आन' कर दिया जाता है। जैसे- दुकाँ (फारसी) दुकान (हिन्दी) ईमाँ (अरबी) ईमान (हिन्दी)।

6. बीच के 'इ' को 'य' कर दिया जाता है। जैसे काइदः (अरबी) कायदा (हिन्दी)।

7. बीच के आधे अक्षर को लुप्त कर दिया जाता है। जैसे नश्शः (अरबी) नशा (हिन्दी)।

8. बीच के आधे अक्षर को पूरा कर दिया जाता है। जैसे अफसोस, गर्म, जह, किश्मिश, बेर्हम, (फारसी) अफसोस, गरम, जहर, किशमिश, बेरहम (हिन्दी) तर्क, नह, कस्रत (अरबी) तरफ, नहर, कसरत (हिन्दी), चम्चः तग्गा (तुर्की) चमचा, तमगा (हिन्दी)।

9. बीच की मात्रा लुप्त कर दी जाती है। जैसे आबोदानः (फारसी) आबदाना (हिन्दी), जवाहिर, मौसिम, वापिस (अरबी) जवाहर, मौसम, वापस (हिन्दी), चुगुल (तुर्की) चुगल (हिन्दी)।

10. बीच में कोइ ह्स्व मात्रा (खासकर 'ई' की मात्रा) दे दी जाती है। जैसे- आतशबाजी (फारसी) आतिशबाजी (हिन्दी)। दुन्याः तक्यः (अरबी) दुनिया, तकिया (हिन्दी)।

12.9 स्वप्रगति परीक्षण

1. वाक्य किसे कहते है। उसकी प्रकृति समझाओ।
2. तत्सम शब्द किसे कहते हैं।
3. तद्भव शब्द से तुम क्या समझते हो।

12.10 सार संक्षेप

वाक्य-संरचना भाषा के नियमों के अनुसार शब्दों का संयोजन और क्रम है, जिससे वाक्य का अर्थ स्पष्ट और संप्रेषण योग्य बनता है। यह भाषा में शब्दों के सही

उपयोग और उनके आपसी संबंधों को सुनिश्चित करती है। वाक्य-संरचना के प्रमुख प्रकारों में सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य, समुच्चय वाक्य और मिश्रित वाक्य शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, उपसर्ग, प्रत्यय, तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी शब्दों की अवधारणाएं भी वाक्य-संरचना को प्रभावित करती हैं। इन तत्वों का सही प्रयोग भाषा के प्रभावी और स्पष्ट संप्रेषण को सुनिश्चित करता है। वाक्य-संरचना के अध्ययन से किसी भी भाषा में शुद्धता और स्पष्टता आती है।

प्रगति की जाँच

उत्तर 1:- वाक्य की परिभाषा:- 'वर्ण' से शब्द और' शब्द' से वाक्य बनते हैं। वाक्य के लिये उचित शब्द चयन, शब्दों की सार्थकता और उनकी क्रमबद्धता आवश्यक हैं। इस प्रकार वाक्य सार्थक और उचित शब्दों का समूह है जो व्याकरण से आबद्ध है। अथवा "वाक्य वह शब्द समूह है जिससे किसी विचार, भाव या बात का पूरा-पूरा अर्थ प्रकट हो।" अतः वाक्य की परिभाषा इस प्रकार भी दी जा सकती है-" मुख से निकलने वाली सार्थक ध्वनियों का वह समूह, जिससे व्यक्ति की आकांक्षाओं, विचारधाराओं और भावनाओं का दिग्दर्शन हो, वह वाक्य कहलाता है।"

उत्तर 2:-तत्सम : किसी भाषा के मूलशब्द को 'तत्सम' कहते हैं। 'तत्सम' का अर्थ ही है 'उसके समान' या 'ज्यों का त्यों (तत्, तस्य उसके संस्कृत के, सम समान)।

उत्तर 3:-तद्भव ऐसे शब्द, जो संस्कृत और प्राकृत से विकृत होकर हिन्दी में आए हैं, 'तदद्भव' कहलाते हैं। तत्। भव का अर्थ है उससे (संस्कृत से) उत्पन्न। ये शब्द संस्कृत से सीधे न आकर पालि, प्राकृत और अपभ्रंश से होते हुए हिन्दी में आए हैं।

12.11 मुख्य शब्द

- **वाक्य-संरचना**: शब्दों के संयोजन का तरीका।
- **उपसर्ग**: शब्द के पहले जुड़कर अर्थ बदलने वाला अंश।
- **प्रत्यय**: शब्द के अंत में जुड़कर उसका रूप बदलने वाला अंश।
- **तत्सम**: संस्कृत से सीधे आये शब्द।
- **विदेशी शब्द**: अन्य भाषाओं से उधार लिए गए शब्द।

12.12 संदर्भ सूची

- मिश्रा, प. (2020). *हिंदी वाक्य संरचना और वाक्य निर्माण.* दिल्ली: भाषा प्रकाशन।

- शर्मा, म. (2018). *हिंदी वाक्य निर्माण कला.* जयपुर: साहित्यिक प्रकाशन।
- गुप्ता, र. (2019). *हिंदी व्याकरण और वाक्य संरचना.* मुम्बई: अकादमिक प्रेस।
- वर्मा, स., & सिंह, अ. (2021). *हिंदी शब्द निर्माण और वाक्य संरचना.* कोलकाता: ज्ञान वर्ल्ड।
- कुमार, ल. (2022). *हिंदी भाषा विज्ञान की खोज.* दिल्ली: विश्वविद्यालय प्रेस।

12.13 अभ्यास प्रश्न

1. वाक्य की परिभाषा लिखकर उसके प्रकार स्पष्ट करों।
2. उपसर्ग और प्रत्यय का अर्थ लिखकर उसके पाँच-पाँच उदाहरण लिखो।
3. विदेशी शब्दों से क्या आशय है।